* श्री *

भाभी के पत्र

लेखक

श्रीयुत व्यथितहृदय

प्रकाशक

भार्गव पुस्तकालय,

गायघाट, बनारस।

[[illegible] वार] सन् १९४५ [मूल्य २)

प्रकाशक
कैलाशनाथ भार्गव
भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस ।

प्रथम वार, १६४०–२०००
द्वितीय वार, १६४३–२०००
तृतीय वार, १६४५–२०००

मुद्रक
बी० के० शार
ज्योतिष प्रकाश प्रेस, का तृतीय

भेंट

श्री ________________________________

____

____

समर्पण

श्रीमती तारा देवी अग्रवाल

पूजनीया बहन जी !

प्रयाग में हिन्दू महिला कालेज की स्थापना करके आप भारतीय बालिकाओं को भारतीयता के सुन्दर साँचे में ढालने का जो प्रयत्न कर रही हैं, उसीने तो हमारे हृदय को विवश किया हैं, कि हम इन पत्रों को आपही के हाथों में दें। हम जानते हैं, कि आपके द्वारा होने वाली सामाजिक सेवाओं के सम्मुख इन पत्रों का कुछ भी मूल्य नहीं है, किन्तु फिर भी हमें यह दृढ़ आशा है कि आप 'भाई' की तुच्छ भेंट को भी स्वीकार ही कर लेंगी।

श्रमिक निवास
कटरा प्रयाग
६—११—४०

आपका ही भाई—
व्यथितहृदय

भूमिका

वैवाहिक जीवन की समस्या सदा से महत्व पूर्ण रही है। संसार के सभी देशों ने समय-समय पर इसे हल करने की चेष्टा की है। सारे समाज की बुनियाद यही है। परिवार समाज का एक छोटा सा रूप है, और परिवार विवाह का फल है। जब इसकी व्यवस्था बिगड़ती है, सारा समाज विकृत हो जाता है।

हमारे देश में भी आज नारी और पुरुष के सम्बन्ध ने एक जटिल प्रश्न उपस्थित कर दिया है। पश्चिम और पूरब के विचार टकरा रहे हैं और पुरुष और नारी के जीवन में एक संघर्ष उत्पन्न हो जाने की आशंका है। प्रत्येक देश के सामाजिक विचार उस देश के इतिहास और परम्परा के आधार पर बने हैं। सब देशों में एक प्रकार की सामाजिक व्यवस्था नहीं हो सकती। हमारे देश का इतिहास बड़ा पुराना है। वह इतिहास हमारे जीवन की प्रत्येक आशा और आकांक्षा से आज भी खेल रहा है। हम चाहें या नहीं, आज भी हम में उसी इतिहास की अंतर-आत्मा छिपी है और हमारा भविष्य बना रही है।

मेरे कहने का यह अभिप्राय नहीं है कि आज भी हम आज से एक हज़ार वर्ष पहले की रहन-सहन अपना रहे हैं या अपना लें। समय के अनुसार परिवर्तन आवश्यक हैं। आज जिस युग में हम रहते हैं, उसी युग में रहेंगे। उसी की आवश्यकताओं के अनुसार अपना जीवन बनाएँगे। हमारी शिक्षा, आचार, व्यवहार समयानुकूल होंगे इसमें सन्देह नहीं। मगर हम अपनी संस्कृति को मिटा नहीं सकते।

नारी और पुरुष के सम्बन्ध को जैसा भारतीयों ने सुलझाया था, संसार का कोई देश सुलझा नहीं सका और भारतीय विवाह-पद्धति का ही सबसे उपयुक्त और उचित प्रयत्न इस ओर है। वह सब प्रयोग जो पश्चिम में इस ओर हो रहे हैं, हो चुके हैं। महाभारत से लेकर और मध्य कालीन भारत का इतिहास पढ़ जाइये। हिन्दू-समाज ने उन सब व्यवहारों का अभ्यास किया, जिसे

आज पश्चिमी समाज कर रहा है। और सबका अनुभव करके ही उसने विवाह को उचित माना। पश्चिमी बाहरी तड़क-भड़क और विलासिता के जीवन ने हमारे देश पर भी आक्रमण किया है। उसे समझ लेना चाहिये और उससे सँभलने की चेष्टा करनी चाहिये।

'भाभी के पत्र' इसी दिशा में प्रयत्न हैं। पत्रों के रूप में वैवाहिक जीवन की अनेक समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है और अनेक प्रश्नों पर विचार प्रकट किये गये हैं। पुस्तक पत्रों के रूप में लिखी गई है। पत्र यों ही मनो-रंजक हुआ करते हैं। इसीलिये पत्रों में आकर्षण होता है। पत्रों की भाषा भी एक विशेष प्रकार की होती है। यदि कोई विषय निरस भी होता है तो पत्रों में उसमें सजीवता आ जाती है। दूसरा और कारण इन पत्रों के आकर्षित होने का है। ये पत्र भाभी की ओर से लिखे गये हैं। भाभी का सम्बन्ध ऐसा होता है कि वैवाहिक जीवन की कोई बात उससे गोपनीय नहीं होती। पुरुष-स्त्री के सम्बन्ध की बातों पर जिस स्वतन्त्रता से वह बहस कर सकती है उस स्वतंत्रता से भाई, बहन, या माता भी नहीं कर सकती। और उसमें प्रेम भी होता है, अनुभव भी होता है।

इन दृष्टियों से भाभी के पत्र केवल आदर्श नहीं हैं वह जीवन के व्याव-हारिक पहलुओं पर विचार प्रकट करते हैं। पहला ही पत्र है 'विवाह नारी के लिये क्यों आवश्यक है ?' आज यह प्रश्न पश्चिम की देखा-देखी बड़े विकट रूप से हमारे सम्मुख है। नैतिक दृष्टि से और सामाजिक दृष्टि से और वैयक्तिक दृष्टि से इस पत्र में 'भाभी' ने विचार किया है। इन विषयों को ठीक दृष्टि-कोण से देखने की बड़ी आवश्यकता है, और हमें प्रसन्नता है कि इस विषय को जिस ढंग से देखने की आवश्यकता है उसी ढंग से देखा गया है। यह सम्भव है कि कुछ लोग कहें कि यह तो भारतीय संस्कृति के नाम और समाज को पीछे हटाने की चेष्टा की गयी है। स्त्रियों को स्वतन्त्रता है चाहे विवाह करें या नहीं। विवाह क्यों करना चाहिये, इस पर लेखक ने अच्छी तरह विचार किया है। वह स्त्रियों की परतन्त्रता का पक्षपाती नहीं है। वह उन्हें

उस साम्राज्य की अधिष्ठात्री बनाना चाहता है, जिससे परिवार में तथा समाज में सुख हो ।

लेखक युग के पीछे नहीं है । समय के साथ-साथ है और सामयिक समस्याओं पर विवेचन किया है । विवाह के पश्चात् पत्नी का पति के साथ क्या व्यवहार होना चाहिये, शृङ्गार आवश्यक है, कि नहीं और किस प्रकार करना चाहिये, ससुराल के लोगों के प्रति बहू का क्या कर्तव्य होना चाहिये, यह सब बातें सरल और संयत भाषा में व्यक्त की गयी हैं ।

आज यूरोप और अमेरिका के वैवाहिक जीवन में कलह की प्रधानता है । एक पत्र इस पुस्तक में इस विषय पर है कि नारियाँ अपने पति को किस प्रकार सदा आकर्षित किये रह सकती हैं और परस्पर प्रेम किस प्रकार सदा बना रह सकता है । विदेशी भाषाओं में इस विषय पर अनेक पुस्तकें हैं । हमारे यहाँ वात्सायन ऐसे विद्वानों ने भी इस विषय के महत्व को समझाया और अपनी पुस्तक में इस पर पूरी तरह से विचार सुझाया । हम लोगों ने इस विषय को भुला दिया । यह हमारे जीवन का आवश्यक विषय है । परन्तु इधर लोग ध्यान नहीं देते । इस पुस्तक में इसे रखकर पुस्तक और व्यावहारिक बना दी गयी है ।

दो बातें इस पुस्तक की मुझे बहुत पसन्द आयीं । इसकी भाषा सरल और सुबोध तो है ही, बड़ी संयत है । आलोचना में कटुता नहीं आने पायी है और समर्थन में अतिशयोक्ति नहीं है । दूसरी बात है, पग-पग पर अपनी संस्कृति का ध्यान ।

आज जब हमारे नारी समाज में जाग्रति के लक्षण हैं और उन्हें अपना उचित अधिकार दिलाने का प्रयत्न हो रहा है, यह भी आवश्यक है कि वह इस बात का भी निश्चय करें कि उनका स्थान क्या है । इस समस्या को हल करने में भी यह पुस्तक सहायक होगी । नव विवाहिता वधुओं के लिये यह पुस्तक बड़ी अच्छी मालूम होती है । उन्हें अपने नवीन जीवन के पथ-प्रदर्शन में यह पुस्तक अवश्य सहायक होगी ।

—कृष्णदेव प्रसाद गौड़

आत्म निवेदन

श्रमिक निवास
कटरा, प्रयाग
२०-३-४३

प्रिय भाई और बहनो !

आज 'भाभी के पत्र' तीसरे संस्करण के रूप में आपके सामने है। 'भाभी के पत्र' के इस तीसरे संस्करण के रूप में आपने मेरे साहित्यिक जीवन को जो 'जीवन' दिया है, उसके लिये हम हृदय से आपका आभार मानते हैं। आपके प्रोत्साहन की ही शक्ति से आज हम यह कहने के लिये एक आधार पा रहे हैं, कि इधर दो-तीन वर्षों में प्रकाशित होने वाली सभी सामाजिक पुस्तकों में 'भाभी के पत्र' ने प्रत्येक दृष्टि से अपना सबसे अधिक गौरवपूर्ण स्थान रक्खा है और इसका एक मात्र कारण है, 'भाभी के पत्र' के प्रति आपका अतुलनीय प्रेम। देश के सैकड़ों अपरिचित व्यक्तियों ने पत्र लिखकर और समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं ने 'भाभी के पत्र' की भूरि-भूरि प्रशंसा करके भी मुझे अपार बल प्रदान किया है। आज यहाँ हम सब के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट कर रहे हैं, और इस आशा-अभिलाषा के साथ कर रहे हैं, कि 'भाभी के पत्र' निरन्तर आपके जीवन में घुसती जायगी और आप उसे अपनाते जायँगे, अपनाते जायँगी।

आप सबका बन्धु
व्यथितहृदय

❀ श्रीः ❀

भाभी के पत्र

विवाह नारी के लिये क्यों आवश्यक है ?

रामपुर
५–८–४०

मेरी गोद की तारिका !

जगमगाती रहो।

सचमुच तुम मेरी गोद की तारिका ही हो आशा ! तुम तारिका ही की भाँति तो मेरी गोदमें जगमगा रही थीं। आज जब तुम यहाँ मेरे पास नहीं हो, मेरी गोद अंधकारमय हो रही है, सूनीसी लग रही है। वह दिन कब आयेगा, जब मेरी तारिका पुनः मेरी गोद में चमकेगी। प्रति-दिन सन्ध्या आती है। सन्ध्या के आगमन के साथ-ही-साथ तारिकायें भी गगन में आती हैं, और अपनी ज्योति का एक अपूर्व संसार-सा बसा देती हैं। किन्तु उस समय प्रकृति की उस वेला में भी जब मेरी तारिका मेरी गोद में नहीं जगमगाती, तब मेरा हृदय तड़प उठता है, आँखें बरस पड़ती हैं; और प्राण ? प्राण चाहते हैं, पंख जमा कर एक ही सरपट में आशा के पास उड़ जाऊँ ! किन्तु वे आहत-से शरीररूपी पिंजर ही के भीतर फड़फड़ा कर रह जाते हैं। उधर मेरे प्राणों ही की भाँति तुम्हारा सुआ भी तो अपने पिंजर में फड़फड़ा कर रह जाता है। मेरी ही भाँति

वह बेचारा पक्षी भी उड़कर तुम्हारे पास पहुँचने के लिये छटपटा रहा है। किन्तु उड़ नहीं पाता। उसकी और हमारी, दोनों ही के मन की बिलकुल एक गति है। हम दोनों ही मन में अपार वेदना का भार लिये हुए तुम्हारे वियोग के मार्ग पर कंगाल की भाँति सोये हुए हैं।

किन्तु तुम तो भूल गईं आशा! मेरी भी याद न की, और न अपने सुये की ही। ऐसा ज्ञात होता है, मानो रमेश के प्रेम ने तुम्हें विस्मृति की शराब पिला दी है। झेंपो न आशा! विवाह हो जाने के पश्चात् एक बार स्त्री-पुरुष के जीवन में ऐसा ही होता है। उमंगे उमंगों से मिलती हैं, हृदय-हृदय से जुटता है, उल्लास का उल्लास से सम्मिलन होता है। आँखों को प्रेम और आकर्षण के अतिरिक्त कुछ सूझता ही नहीं। एक क्षण का भी वियोग जैसे युग की भाँति लम्बा ज्ञात होता है। आश्चर्य है, महान् आश्चर्य है! अभी कुछ ही दिन पहले, दो मनुष्य जो एक दूसरे को जानते भी न थे, आज विवाह के पश्चात् एक दूसरे से इस प्रकार मिल रहे हैं। मिल ही नहीं रहे हैं, बल्कि जीवन का आदान-प्रदान कर रहे हैं। एक के पास जो कुछ है वह दूसरे को दे रहा है, दूसरे के पास जो कुछ है, वह चुपचाप पहले को सौंप रहा है। दोनों इस आदान-प्रदान में करुणामयी ममता को भूले से हुए हैं। कहो, ठीक है न आशा! रमेश के प्रेम की शराब ही ने तो तुम्हें भाभी को भूल जाने के लिये विवश किया है न! किन्तु तुम भाभी की चिन्ता न करो आशा, तुम दिल खोल कर रमेश के प्रेम की शराब पिये जाओ। इस प्रकार पिये जाओ, कि वह तुम्हारे अन्तर-अन्तर को शराबोर कर दे। तुम दोनों ही पारस्परिक प्रेम के उन्माद में अपने जीवन-अन्तर को भूल जाओ, द्वैत से अद्वैत बन जाओ। विवाह

का यही तो मूल उद्देश्य है, उसका यही तो प्रकृत रहस्य है।

अच्छा बताओ आशा, यदि विवाह के पूर्व तुमसे रमेश मिलते और प्रेम के लिये अनुनय-विनय करते, तो क्या तुम उनकी विनय को ठुकरा न देती? ठुकरा ही नहीं देती, बल्कि मेरा विश्वास तो यह है, कि तुम उछल कर उसकी गालों पर तमाचे जड़ देती। यदि कुछ देरके लिये तुम दोनों में प्रेम-भावना पैदा भी हो जाती, तो वह बिलकुल उस दीपक के ही सदृश होती, जो जब तक तेल रहता है, जलता है, और जब तेल नहीं रहता, तब अपने ही आप बुझ जाता है। तुम दोनों का प्रेम भी उसी प्रकार बुझ जाता। जब तक तुम दोनों में सौन्दर्य रहता, जब तक तुम दोनों में एक दूसरे की वासना-अग्नि को शान्त करने की क्षमता होती, तुम दोनों एक दूसरे की ओर खिचते ही जाते, उसी आकर्षण को प्रेम समझ कर उस पर अपने को लुटाते जाते, किन्तु जब दोनों ओर में से, किसी ओर भी सौन्दर्य का संसार उजड़ता हुआ दिखाई देता, तब फिर प्रेम का वह सूत्र इतनी शीघ्रता के साथ टूटता, कि हम उसको कच्चा तागा भी नहीं कह सकतीं। आज के नवीन संसार में तुम्हें इस प्रकार के कच्चे धागे में बँधे हुए अनेक युवक और युवतियाँ दिखाई पड़ेंगी। यौवन के उन्माद में, विवाह देवता को मध्यस्थ बिना बनाये ही, वे अपना सम्बन्ध जोड़ लेते हैं। वे उस सम्बन्ध के लिये छुपते हैं, झूठ बोलते हैं, और करते हैं नैतिकता का हनन। ऐसा ज्ञात होता है, मानों वास्तव में दोनों प्रेम की प्रतिमूर्ति हैं, मानों वास्तव में दोनों में एक दूसरे की प्रेम वेदिका पर उत्सर्ग होने की भावना है। पर कहाँ? वासना-अग्नि शान्त होते ही वह तो काफूर की भाँति उड़ जाती है। डालो आज के समाज पर जरा दृष्टि! अनेक

भोली भाली सुन्दर युवतियाँ आज इसी भयानक भूल के परिणामस्वरूप आँसू बहा रही हैं, रो रही हैं, सिसकियाँ मार रही हैं। उन्होंने वासना को ही प्रेम समझा था, असत्य को ही सत्य समझ कर ग्रहण किया था। पुरुष अधिकांशतः वासना-प्रिय होता है। यौवन-जीवन में प्रवेश करने वाली युवतियों को पुरुष के इस प्रकृत स्वभाव को सतत अपने सम्मुख रखना चाहिये। उसकी उच्छृंखलता से बचने के लिये ही मानव-सभ्यता ने नारी को विवाह नाम का मंत्र दिया है। नारी इस मंत्र से अपनी रक्षा कर सकती है और पुरुष की भी। दोनों इस मंत्र के महा जाप से संयमित हो सकते हैं, और एक दूसरे के प्रति दृढ़ कर्त्तव्यशील भी।

विवाह नारी के लिये मानव सभ्यता की सबसे बड़ी देन है। विवाह ही के द्वारा अपूर्ण नारी पूर्ण होती है। नारी ही क्यों? पुरुष भी। विवाह की जो मर्यादा नारी के लिये है, वही पुरुष के लिये भी। विवाह के द्वारा स्त्री और पुरुष, दोनों ही अपनी-अपनी अपूर्णताओं को पूर्ण करते हैं। विवाह ही स्त्री-पुरुष के विभिन्न अस्तित्व को एक में समाविष्ट करता है, और इस प्रकार समाविष्ट करता है कि दोनों एकीकरण का आत्मा से, हृदय से और प्राण से अनुभव करते हैं। तुमने स्वयं इसका अनुभव किया होगा आशा! बताओ न, विवाह के पूर्व तुम्हारे हृदय में रमेश के लिये क्या था? कुछ नहीं! किन्तु विवाह होने के साथ ही तुम दोनों ही प्रेम, आनन्द और कर्त्तव्य के समुद्र में जैसे प्रवाहित से हो उठे। एक दूसरे को देखने लगे, और देखने लगे आशा, सहानुभूति और करुणा के साथ। ऐसी आशा, ऐसी सहानुभूति, और ऐसी करुणा जगत में तुम्हें कहीं और न मिल सकेगी। मिलेगी, तो उन्हीं दो हृदयों में जो

विवाह द्वारा परस्पर आबद्ध हैं, आबद्ध नहीं, बल्कि कहना यों चाहिये कि मानव सभ्यता की सृष्टि करते हैं। मानव जीवन के अनमोल रत्न, त्याग, उत्सर्ग, सहनशीलता, करुणा और साहस, विवाह ही के द्वारा जीवन-समुद्र को मथ कर निकाले जाते हैं। आज जगत में जो कुछ संयम और जो कुछ नैतिकता तुम देख रही हो, वह विवाह ही का दिया हुआ है। विवाह ही ने मानव जीवन को संयम की डोरी में कस कर बाँध रक्खा है। स्त्री और पुरुष, विवाह ही के द्वारा अपने अस्तित्व को समझते हैं और समझते हैं अपने-अपने कर्त्तव्य को। कहना यह चाहिये कि विवाह वह प्रभात है, जिसमें स्त्री पुरुष जागते हैं, अँगड़ाइयाँ लेते हैं और उठ कर बैठ जाते हैं। ज़रा डालो उस वेला पर दृष्टि, जब यह प्रभात नहीं आया था। जब इसने अपनी किरणों से खोद-खोद कर जीवन को नहीं जगाया था। उस समय जीवन सो रहा था, गाढ़ी नींद में, अचेतन उन्माद में। सामने न कर्त्तव्य था, न उत्तरदायित्त्व था। जीवन खा-पीकर तरंगहीन सागर की भाँति सोया हुआ था। किन्तु इस प्रभात ने, विवाह की इस संक्रान्ति ने आकर उसे हिला दिया। पौ फट गई, चारों ओर दीखने लगा, प्रकाश ही प्रकाश। इसी प्रकाश में जीवन को दिखाई पड़ा अपना कर्तव्य, अपना उत्तरदायित्त्व !! स्त्री-पुरुष दोनों ही एक दूसरे के अनन्य सहचर के रूप में उसका पालन करने लगे, उसका वहन करने लगे, और सभ्यता शान्ति, संयम तथा नैतिकता के साथ बढ़ने लगी, आगे, बहुत आगे !! विवाह ने ही उसे बढ़ाया, विवाह ने ही उसे आदर्श स्वरूप प्रदान किया। विवाह ने ही उसे जगाया, विवाहने ही उसे चेतना दी। यदि मानव जीवन में विवाह का प्रभात न होता तो आज का यह जगा हुआ संसार इस प्रकार जगा हुआ

न दिखाई देता। उस पर वही कालिमा होती, अंधकार की वही तह होती, जो मानव जीवन के आदि काल में थी, और जो आज भी वन में रहने वाली बहुत सी जातियों को चेतना के प्रकाश से बहुत दूर किय हुए है!

तुम संसार के चाहे जिस देश में जाओ आशा, तुम्हें सर्वत्र किसी न किसी रूप में विवाह की प्रथा अवश्य दिखाई पड़ेगी। वास्तव में बात तो यह है, कि विवाह के अभाव में सांसारिक जीवन सार्थक हो नहीं होता। यदि तुम 'मनुष्य' और 'संसार' शब्दों में छिपी हुई महत्वाकांक्षा पर ध्यान दो, तो तुम्हें प्रत्यक्ष यह ज्ञात हो जायगा, कि मनुष्यों को विवाह की आवश्यकता क्यों पड़ती है! सूक्ष्मतः हम यह कह सकते हैं, कि विवाह 'मनुष्य' को मनुष्य और 'संसार' को संसार का स्वरूप प्रदान करता है। 'संसार' और 'मानव जीवन' क्या है? केवल कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व। यद्यपि इसके अनेक विभेद हैं, किन्तु इसका सबसे बड़ा भेद है, मानव-सभ्यता का निर्माण और जगत का विकास। ईश्वर ने इसीलिये स्त्री और पुरुष की सृष्टि भी की है, और ईश्वर की सृष्टि का उद्देश्य तभी पूरा होता है, जब स्त्री और पुरुष अपने-अपने प्रकृत ज्ञान और कर्त्तव्य के साथ एक दूसरे से मिलते हैं; पारस्परिक एकत्त्व का अनुभव करते हैं। मानव सभ्यता ने इसीलिये विवाह की सृष्टि की है और इसीलिये स्त्री-पुरुषों को विवाह की आवश्यकता भी हुआ करती है। भले ही आज के समाज में विवाह जीवन का एक साधारण संस्कार समझा जाता हो, किन्तु स्त्री-पुरुष इसके द्वारा जिस पूर्णता की ओर बढ़ते हैं, उसका महत्त्व शब्दों से नहीं प्रगट किया जा सकता! वे समाज और राष्ट्र को 'संयम' और सदाचार की भेंट करने के साथ ही साथ करते हैं, ईश्वर को

इच्छाओं की सम्पूर्ति ! ईश्वर की इच्छा है, जगत का विकास, सभ्यता की वृद्धि, मानव धर्म की उन्नति ! सोचो आशा, विवाह के अभाव में क्या यह कभी-सम्भव हो सकता है ?

हाँ तो संसार के सभी देशों में विवाह की प्रथा प्रचलित है आशा! जगत के सभी नर-नारी विवाह करते हैं, एक दूसरे से मिलते हैं, और जीवन का आदान-प्रदान करते हैं। नर नारी ही नहीं, आदान-प्रदान करने का यह भाव पशु-पक्षियों में भी प्रकृत रूप से विद्यमान है। प्रकृति का सारा व्यापार ही दो के संयोग से होता है। प्रकृति स्वयं भी पुरुष के साथ मिलने पर ही संपूर्ण होती है। प्रकृति के विस्तृत आँगन में प्रतिक्षण सम्मिलन होता है, और होता है आदान-प्रदान। मनुष्य ईश्वर की कला का सर्वश्रेष्ठ आदर्श है। अतः उसका सम्मिलन, उसका आदान-प्रदान भी श्रेष्ठ होना चाहिये, सर्वोच्च आदर्श के साथ होना चाहिये। यदि मनुष्यों के जीवन-व्यापार में उच्चता न रही, तो फिर उनमें और पशु-पक्षियों में ही अन्तर क्या रहा ? इसमें सन्देह नहीं, कि संसार के सभी सभ्य देशों ने 'विवाह' में सर्वोच्च आदर्श को सन्निहित किया है, किन्तु अब तक कोई देश भारतीय विवाह के आदर्श के सन्निकट न पहुँच सका। भारतीय विवाह का आदर्श निराला है, विचित्र है, और है दैवी भावनाओं से भरा हुआ। मानव विवाह की आवश्यकतायें वास्तव में भारतीय विवाह से संपूर्ण हो जाती हैं। वास्तव में भारतीय विवाह दो आत्माओं का एकीकरण करता है, और करता है, उनके परस्पर के अर्द्धांग को संपूर्ण। विवाह होने के साथ ही भारतीय नारी पुरुष में मिल जाती है, और पुरुष हो जाता है उसका जीवन-सर्वस्व। दोनों भिन्न होकर के भी जीवन मार्ग पर अभिन्न की तरह चलते हैं। मार्ग में सुख के पुष्प हों,

काँटों की झाड़ियाँ हों, पर वे एक-दूसरे का हाथ पकड़े हुए आगे चलते ही जाते हैं, और तब तक चलते जाते हैं, जब तक उनके प्राणों में प्राण रहते हैं। प्राणों के निकलने के समय भी वे यही कहते हैं, 'मृत्यु के पश्चात् पुनः हम दोनों मिलें, जीवन के मार्ग पर एक साथ चलें। उनका पारस्परिक सौहार्द, उनका पारस्परिक सहयोग! जगत के मानव-जीवन में वह कहीं खोजने पर भी नहीं मिलता। भारतीय नारी और पुरुष की अभिन्नता! उसका वर्णन विष्णुपुराणकार ने बड़े सुन्दर शब्दों में किया है आशा! देखोः—

"पुरुष विष्णु है, स्त्री लक्ष्मी। पुरुष विचार है, स्त्री भाषा। पुरुष धर्म है, स्त्री बुद्धि। पुरुष तर्क है, स्त्री भावना। पुरुष अधिकार है, स्त्री काव्य। पुरुष रचयिता है, स्त्री रचना। पुरुष धैर्य है, स्त्री शान्ति। पुरुष हठ है, स्त्री इच्छा। पुरुष दया है, स्त्री दान। पुरुष मंत्र है, स्त्री उच्चारण। पुरुष अग्नि है, स्त्री ईंधन। पुरुष सूर्य है, स्त्री आभा। पुरुष विस्तार है, स्त्री सीमा। पुरुष आँधी है, स्त्री गति। पुरुष समुद्र है, स्त्री किनारा। पुरुष धनी है, स्त्री धन। पुरुष युद्ध है, स्त्री शक्ति। पुरुष दीपक है, स्त्री प्रकाश। पुरुष दिन है, स्त्री रात्रि। पुरुष वृक्ष है, स्त्री फल। पुरुष संगीत है, स्त्री स्वर। पुरुष न्याय है, स्त्री सत्व। पुरुष सागर है, स्त्री नदी। पुरुष स्तम्भ है, स्त्री पताका। पुरुष आत्मा है, स्त्री शरीर!"

यह है दोनों भिन्न की अभिन्नता, और दोनों अपूर्ण की पूर्णता। ऐसी अभिन्नता और ऐसी पूर्णता संसार में कहीं तुम्हें खोजने पर भी न मिलेगी। भारतीय विवाह का यही श्रेष्ठ आदर्श भी है, कि दो भिन्न अभिन्न हों, दो अपूर्ण पूर्ण हों। तुम कह सकती हो आशा, कि आज के भारतीय समाज में यह अभिन्नता

कहाँ, यह पूर्णता कहाँ? किन्तु मैं तुमसे कहूँगी कि आशा, आज भी भारतीय समाज के दम्पति में वही अभिन्नता है, वही पूर्णता है! डालो ज़रा भारतीय समाज के दम्पतियों के जीवन पर दृष्टि। उनमें त्रुटियाँ अवश्य हैं, किन्तु मैं तुमसे पूछती हूँ, कि क्या वे विचार और भाषा ही की भाँति एक साथ चलते हुए नहीं दिखाई देते? क्या वे शरीर और आत्मा ही की तरह एक साथ नहीं रहते? मैं तुम्हीं से पूछती हूँ, तुम्हारा और रमेश का आपस में कैसा सम्बन्ध है? क्या वह विस्तार है, तो तुम सीमा नहीं हो? क्या वह संगीत है, तो तुम स्वर नहीं हो, और क्या वह वृक्ष है, तो तुम फल नहीं हो। निश्चय हो! तभी तो तुम दोनों सुख, शान्ति, और संयम के साथ जीवनमार्ग पर आगे बढ़े जा रहे हो। समझ लो आशा, निश्चय रूपसे समझ लो, जिस दिन इसमें कमी होगी, उस दिन सुख और शान्ति को भी आघात लगे बिना कदापि न रहेगा। तुम दोनों सुशिक्षित हो, पढ़े-लिखे हो, यदि भारतीय संस्कृति के निकट पहुँचो तो आश्चर्य ही क्या? किन्तु उन झोपड़ियों में जाकर दाम्पत्य जीवन को देखो आशा, जहाँ अज्ञानता का साम्राज्य है! वे कुछ नहीं जानते, पर एक दूसरे के साथ रहना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। पुरुष लूला है, स्त्री फिर भी उसका साथ नहीं छोड़ती। स्त्री कुरूपा है, पुरुष फिर भी उसका सम्मान करता है। दोनों अज्ञानतावश लड़ते हैं, झगड़ते हैं, आपस में मार-पीट करते हैं, किन्तु फिर भी एक दूसरे के साथ रहना, संयम और सदाचार की रक्षा करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। मैं यह नहीं कहती, कि भारतीय दम्पति जीवन में त्रुटियाँ नहीं हैं। त्रुटियाँ हैं, और हैं भयानक त्रुटियाँ, किन्तु फिर भी वह संसार के दूसरे देशों के दाम्पत्य जीवन से अच्छा है,

सुन्दर है, और है मानवी भावनाओं से भरा हुआ। तुम जानती हो आशा, इसका कारण क्या है ? यही कि भारतीय विवाह का आदर्श बहुत ऊँचा है। भारतीय नर-नारी वास्तव में विवाह के द्वारा अपूर्ण को पूर्ण करते हैं, और होते हैं भिन्न से अभिन्न!!

भारत के सामाजिक जीवन में आज तुम जो अनाचार देख रही हो, उसका कारण केवल यही है, कि हम विवाह के साथ खेल कर रहे हैं। विवाह हमारे मध्य में विद्यमान अवश्य है, किन्तु हम अपनी अज्ञानता के कारण उसकी वास्तविकता से वंचित हैं। यद्यपि विवाह की मर्यादाओं को पूर्ण करनेवाले प्रभाव हमारे विवाहित जीवन में विद्यमान हैं, किन्तु क्या ही अच्छा होता, कि हम विवाह की वास्तविकता को भी समझ लेते, और समझ लेते विवाह के पूर्व अपने उत्तरदायित्व को। यदि हमारे विवाहित जीवन में थोड़ा-सा यह अध्याय और जुट जाता तो हमारा सब कुछ बन जाता, हमारा सब कुछ लौट आता और हम फिर संसार में वही हो जाते, जो पहले थे। पर कहाँ ? विवाह हमारे विवाहित जीवन की रक्षा अवश्य कर रहा है, किन्तु हम तो उसकी वास्तविकता से दूर हटते जा रहे हैं। अशिक्षा जहाँ हमारे नेत्रों को बन्द किये हुये है, वहीं पाश्चात्य शिक्षा और सभ्यता आदर्श के ऊँचे सिंहासन से हमें महापतन के समुद्र में ढकेल रही है। अशिक्षा के द्वारा जहाँ हम छोटी-छोटी बालिकाओं को विवाह के रज्जु में बाँध कर उनका गला मरोड़ रहे हैं, वहीं पाश्चात्य शिक्षा स्त्रियों में कृत्रिम कौमार्य जीवन का संचार करके भारतीय समाज को पंगु बना रही है। ये दोनों ही वस्तुयें भारतीय समाज के लिये अधिक विषैली बन रही हैं आशा! इन्हीं में आग्रस्त होने के कारण, जो विवाहित जीवन बनता है, वह अधूरा होता है, अपूर्ण

होता है ! हम विवाह करके भी कुछ कर नहीं पाते, समाज और राष्ट्र को कुछ दे नहीं पाते। समाज और राष्ट्र को तो बात ही क्या, हम स्वयं भी अपने विवाहित जीवन से कुछ प्राप्त नहीं कर पाते। न आनन्द, न शक्ति और न साहस। उजड़े हुये विवाहित जीवन से जीवन को विकसित करने वाले ये उपकरण प्राप्त ही कैसे हो सकते हैं ? यदि हम इन्हें प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें अशिक्षा के द्वारा उत्पन्न होने वाले इस विष को अपने सामाजिक जीवन से अलग कर देना चाहिये। तभी हमारा विवाहित जीवन सुखी हो सकता है, और तभी हम समाज और राष्ट्र को भी जीवन बाँट सकते हैं। अशिक्षा के द्वारा उत्पन्न होने वाला यह विष जितना भयानक है, उससे वह कुछ कम नहीं, जो पाश्चात्य शिक्षा के कारण भारत के सामाजिक जीवन में अँखुये की भाँति उग रहा है। वही, स्त्रियों का कृत्रिम कौमार्य जीवन ! जिसे देखो, आज वही स्त्री व्रत ले रही है, विवाह न करने का ! मैं कह नहीं सकती, किन्तु कदाचित् पाश्चात्य शिक्षा का यह भी एक अंग है, कि स्त्री आजीवन कुमारी रहे ! इंगलैण्ड इत्यादि पश्चिमी देशों में कौमार्य जीवन व्यतीत करने वाली इस प्रकार की अनेक स्त्रियाँ हैं ! किन्तु क्या कोई यह कह सकती है, कि वे समाज के लिये संयम और नैतिकता की सृष्टि करती हैं ? पाश्चात्य जीवन में इस प्रकार की स्त्रियों का चाहे जो भी स्थान हो, किन्तु हमें तो इस भयानक मनोवृत्ति पर कड़ी दृष्टि रखनी चाहिये। हम यह नहीं कहतीं कि कौमार्य जीवन बुरा है, किन्तु हम यह अवश्य कहती हैं, कि वह वास्तविक हो, कृत्रिम नहीं ! उसमें संयम हो, स्वेच्छाचारिता नहीं। आज जो कुछ है, वह जीवन के विरुद्ध पड़ रहा है, और कर रहा है,

विवाहित जीवन पर चोट ! इसीलिये हमें उसे रोकना चाहिये, उसके अँखुयें पर ऐसे विषैले पदार्थ डालने चाहियें, जिससे वह जल उठे। इस विषैले अँखुये को कदापि पनपने न देना चाहिये। यदि यह पनपा तो भारतीय समाज की भी वही दशा होगी, जो आज युरोपीय समाज की हो रही है। समाज स्वेच्छाचारिता और अमर्यादा के दूषित वातावरण से कम्पित हो उठेगा, और भारतीयता के महान् आदर्श का दुर्ग, जिसे भारतीय महापुरुषों ने बड़ी तपश्चर्या और साधना के पश्चात् खड़ा किया है, देखते-देखते ढह जायगा, धूल में मिल जायगा। उन्हें भी, उन्हीं स्त्रियों को, जो अज्ञानतावश पाश्चात्य शिक्षा और सभ्यता की लहरों में बे रोक-टोक बही जा रही हैं, पश्चात्ताप होगा, दुःख होगा। किन्तु जब वे दुखी होकर पुनः अपने घर की ओर लौटेंगी, तब वे देखेंगी, कि उनका घर उजड़ा हुआ है, उनका सर्वस्व धूल में मिल गया है। भारतीय स्त्री हो या पुरुष, प्रत्येक का जीवन-धर्म यही है आशा, कि वह भारतीय बन कर रहे, भारतीय आदर्शों को ग्रहण करे, और यदि उसमें त्रुटियाँ हैं, तो उनको दूर करने का प्रयत्न करे!

विवाह के सम्बन्ध में अब बहुत कुछ लिख चुकी आशा, अब इसे यहीं तुम्हारी स्मृति के साथ समाप्त करती हूँ! अपनी भाभी को भूल न जाओ। विवाह के आनन्द-तरु के नीचे बैठ कर यदि कभी कभी तुम दोनों अपनी भाभी को याद कर लिया करोगे, तो तुम्हारी भाभी अपने जीवन को धन्य समझेगी, महा धन्य !!

तुम्हारी—
स्नेहमयी भाभी।

दाम्पत्य जीवन का आधार-प्रेम और विश्वास

रामपुर
६–८–४०

मेरी बीबी !

प्रसन्न रहो।

तुम जानती हो, कि मेरा हृदय तुम्हारा सामीप्य चाहता है ! आज से नहीं, उस दिन से, जब मैं दुलहिन बनकर तुम्हारे भैय्या के घर आई थी, और उन्होंने सर्व प्रथम तुम्हें मेरी गोद में रख दिया था। तुम हँस रही थीं ! अपने अबोध और सुन्दर ओठों के नीचे। तुम्हारी उस हँसी से मेरी गोद जगमगा उठी थी। गोद ही नहीं हृदय और प्राण भी। आज भी तुम्हारी वह हँसी, जिसमें दैवत्त्व अपनी सम्पूर्ण मिठास लेकर सोया हुआ था, मेरी आकुल आँखों के सामने है। तुम मुझसे दूर हो—बहुत दूर, किन्तु मुझे ऐसा ज्ञात हो रहा है, मानों आज ही मैं इस घर में नई दुलहिन बनकर आई हूँ, और तुम मेरी गोद में बैठकर अपने विद्युत सरीखे दाँतों को निकाल कर हँस रही हो। तुम्हारा वियोग मेरी आँखों में बादल बनकर अवश्य बरस रहा है, किन्तु प्राणों में ज्योति है, हृदय में उत्साह है। यह इसलिये, कि मैं तुम्हारे रूप में जगत की अमूल्य निधि पाई है। ऐसी निधि पाई है, कि एक बार मैं उसके समक्ष स्वर्ग के वैभवों की भी उपेक्षा कर सकती हूँ। तुम मेरा धन हो, मेरी अभिलाषाओं की दुनिया हो। मैं तुम पर मरती हूँ, एक नहीं, सौ-सौ प्राणों से। मेरा सब कुछ तुम्हारा है, मैं भी तुम्हारी हूँ,

और मेरे वे भी, जो मेरे भाल पर सिन्दूर-बिन्दु बनकर चमकते हैं, तुम्हारे ही तो हैं !

एक दिन वह था, तुम मेरे समीप थीं। मैं तुम्हें रिझाती, खिझाती, और हँस-हँसकर तुम्हारे उठे हुए कोमल गालों पर तमाचे लगातीं। आज भी मेरे हाथ उठते हैं, किन्तु आह के साथ रुक जाते हैं। पर नहीं, अब मैं तुम्हारे कोमल गालों को गरम न करूँगी। अब तो उन्हें तुम्हारे 'वे' गरमायेंगे। मैंने अपना सम्पूर्ण दायित्व अब तुम्हारे 'उन्हीं को' सौंप दिया है। तुम समझ गईं होंगी, कि मेरा 'वे' और 'उन्हीं को' से किससे तात्पर्य है? वही, रमेश बाबू। प्राणों में तो गुदगुदी पैदा हो उठी होगी। हृदय चाहने लगा होगा, कि झट उछल कर अधरों पर बैठ जाऊँ और अधरों के रूप में स्वयं ही एक बार 'रमेश बाबू' पुकार उठूँ! बिलकुल सच! तुम अपने हृदय से कहो आशा, कि वह रमेश-बाबू के नाम की जाप करें। वे तुम्हारे पति है, तुम्हारे जीवन-संसार को मुखरित करने वाले सजीव संगीत हैं। तुम्हारा कर्त्तव्य उन्हीं के जीवन-झरोखे से अपनी महानता का दर्शन करेगा। तुम्हारे जीवन की परिधि में, नारीत्व का जो मूल तत्त्व समाविष्ट है, वह रमेश ही के प्रेम से विकसित होगा। तुम उसके प्रेम को प्राप्त करो। उसे अपने हृदय-मन्दिर में स्थान दो। वह तुम्हारा आराध्य देव है, और पुजारी भी। कभी वह तुम्हारी पूजा करेगा, और कभी तुम उसकी। तुम दोनों की पारस्परिक पूजा-आराधना से ही तो उस नवीन जगत की सृष्टि होगी, जो नारी जीवन का प्रकृत रहस्य है।

तुमने रमेश के साथ जीवन के एक नवीन जगत में प्रवेश किया है। तुम्हारा वह जगत सूना है, रिक्त है। तुम्हें उसे

बसाना होगा, उस सूने जगत को जगत का रूप देना होगा। उस जगत का, रमेश तुम्हारा जीवन-सहचर है। वह तुम्हारे ही साथ साथ काँटों और कुशों से ढकी हुई भूमि में चलेगा, और तुम्हारे ही साथ-साथ अपने जीवन जगत को बसाने का प्रयत्न करेगा। तुम दोनों ही अपने उस छोटे से जगत के स्रष्टा हो। तुम दोनों ही के कन्धों पर उसके बसाने का समान रूप से दायित्व है। देखने में वह तुच्छ और साधारण अवश्य ज्ञात होता है, किन्तु वह तुच्छ और साधारण नहीं है आशा! वह महान् है, महान् से भी महान् है। उसमें एक मूल तत्त्व छिपा हुआ है, जीवन का एक महान् उद्देश्य अन्तर्हित है। बड़े बड़े समाजवादी विद्वानों ने एक स्वर से इसे स्वीकार किया है, कि स्त्री-पुरुष द्वारा बसाये हुए छोटे किन्तु सुन्दर जगत से ही संगठित और महान् राष्ट्र की रचना होती है। आज संसार में जो कुछ तुम अपनी आँखों से देख रही हो, उसके मूल आधार स्त्री पुरुष ही हैं। स्त्री-पुरुष ही संसार के बड़े-बड़े समाज हैं, बड़े-बड़े राष्ट्र हैं। वे दो के रूप में विशालता की सृष्टि करते हैं। स्त्री-पुरुष के जीवन का प्रकृत रहस्य ही यह है, कि वे विशाल संसार को 'संसार' का स्वरूप दें, उसे विकास की ओर अग्रसर करें। किन्तु जानती हो आशा, यह कैसे हो सकता है? स्त्री-पुरुष द्वारा बसाये हुए उसी छोटे से जगत से। उसकी सुन्दरता जगत् को सुन्दर बनाती है, उसका विकास संसार को विकास का दान देता है, और उसकी शक्ति? कुछ न पूछो, उसी की शक्ति से तो मानव-समाज बली और संयमित होता है। मानव समाज के समस्त सुखों और शान्ति-साधनों का मूल स्रोत वही है आशा! इसीलिये तो तुमसे कहती हूँ, कि तुम अपने उस छोटे से जगत की सुन्दरता के साथ रचना करो।

इतनी सुन्दरता के साथ रचना करो, कि वह कल्याण की प्रतिमूर्ति बन जाय, और जीवन उसमें बस कर, अपने आप ही जीवन बन जाय।

किन्तु क्या तुम जानती हो, कि तुम अपने उस छोटे से जगत को किस प्रकार सुन्दरता का स्वरूप प्रदान कर सकती हो? क्या तुम्हें ज्ञात है, कि जहाँ अभी तुम्हारे लिये कुछ नहीं है, वहाँ तुम अपने लिये प्रेम, शान्ति और सुख की बस्तियाँ किस प्रकार बसाओगी? प्रेम और विश्वास से। प्रेम और विश्वास की ही सुदृढ़ नींव पर तुम्हें अपने जगत की रचना करनी होगी। तुम्हारी इस नींव को कोई न हिला सकेगा, कोई न कमजोर बना सकेगा। वह वज्र से भी अधिक कठोर और 'शिव' से भी अधिक कल्याणकारी है। उसकी सुदृढ़ता और उसकी कल्याणकारी भावना का चित्र तुम आज भी अपनी आँखों से देख सकती हो आशा! कई सहस्त्र वर्ष बीत गये, किन्तु वह आज भी अपनी अमरता के साथ स्थिर है। जरा वैदिक कालीन सभ्य भारत की ओर निगाह तो डालो! घर घर में तुम्हें प्रेम और विश्वास का संसार मिलेगा। स्त्री-पुरुष दोनों ही तुम्हें प्रेम और विश्वास का सागर-सा प्रवाहित करते हुये दिखाई पड़ेंगे। स्त्री प्रेम थी, पुरुष विश्वास था। दोनों ही प्रेम और विश्वास के साथ अपने जीवन का संसार बसाते थे। कितना सुखी था उनका वह जीवन, कितना समृद्धशाली था, उनका वह समाज, और कितना शक्तिशाली था, उनका यह राष्ट्र! क्या आज के संसार में कहीं तुम्हें उसकी प्रतिच्छाया भी देखने को मिलेगी? नहीं, कदापि नहीं। जानती हो क्यों? इसलिये, कि आज के संसार में समाज और राष्ट्र को ग्रथित करने वाले स्त्री-

पुरुषों का जीवन-जगत प्रेम और विश्वास से सना है। उन्होंने अपने जीवन की जो दुनिया बना कर तैयार की है, उसकी नींव कमजोर है, बहुत कमजोर है। वह साधारण झंझा मात्र से ही हिल जाती है और स्वयं हिलने के साथ ही साथ समाज और राष्ट्र को भी भीतर ही भीतर हिला कर कमजोर बना देती है। मैं चाहती हूँ आशा, तुम इस अपवाद से बचो। तुम भारतीय नारी हो। भारतीय संस्कृति नाम की महान् देवी ने तुम्हारा पालन किया है। तुम जानती नहीं, कि भारतीय नारी का जगत के बीच में कौन सा आदर्श रहा है! केवल उत्सर्ग। भारतीय नारी ने नारीत्व के निकट पहुँच करके ही इस आदर्श को ग्रहण किया था। अपने इस ऊँचे आदर्श के सिंहासन पर बैठ करके ही उसने जगत को प्रेम और विश्वास का सन्देश सुनाया था। आज जगत के साथ ही साथ स्वयं भारत भी अपनी नारी के उसी सन्देश के अभाव में निर्धन है, कंगाल है। न उसका अपना समाज है, न उसका अपना राष्ट्र है। जो कुछ है, वह लूले की भाँति रो रहा है, जगत के सामने हाथ पसार कर सिसकियाँ मार रहा है। क्या ही अच्छा होता आशा! कि भारतीय नारी पुनः पीछे लौट आती, और लौट कर उस स्थान पर रुक जाती, जहाँ उसने अपने प्राचीन और व्यापक आदर्शों की तिलांजलि दी थी।

तुम्हें आश्चर्य होता होगा! तुम सोचती होगी, कि इस नवीन युग में प्राचीनता का यह राग कैसा! किन्तु कदाचित् तुम यह नहीं जानती आशा, कि प्राचीन से ही नवीन की सृष्टि होती है। जिसका 'प्राचीन' नहीं, उसका कुछ 'नवीन' बन ही नहीं सकता। बोलो, हृदय से बोलो, क्या आज की भारतीय नारी की नवीनता का आधार-स्तम्भ सचमुच उसकी प्राची-

नता है ! तुम कहो या न कहो आशा, किन्तु मैं तो स्वतन्त्र शब्दों में यह कहूँगी, कि वह बिलकुल नवीन है, बिलकुल ! उसमें भारतीय नारी का अपनापन कुछ भी नहीं। वह दूसरों का है, दूसरे देशों की नारियों का है। दासता की तरह, वह भी भारतीय नारी को अभिशाप के रूप में प्राप्त हुआ है। दासता की सुरा ने भारतीय नारी को इतना बेहोश कर दिया है, कि वह अपने को भूल गई है। उसकी जीवन नैतिकता, उसके ऊँचे आदर्श, सब कुछ उसकी दृष्टि से पीछे हट गये हैं। उसकी प्रसिद्ध पुरातन चेतना अब उसके मस्तिष्क में न रही। इसीलिये तो वह नवीनता के नाम पर अपने प्राचीन आदर्शों की होलिका जलाती हुई पश्चिम की धारा में बे-रोक टोक बही जा रही है। इस भाँति बही जा रही है, कि उसके मन को कहीं विराम लेने की भी आवश्यकता नहीं प्रतीत होती किन्तु क्या तुम जानती हो आशा, कि नवीनता की वह धारा भारतीय नारी को बहा कर किस ओर ले जा रही है ? उसी ओर, जहाँ अविश्वास, स्वेच्छाचारिता और अनैतिकता के संसार के मध्य में पश्चिम की करोड़ों नारियाँ खड़ी हैं। उनका मोहक रूप-रंग, उनकी सभ्यता का बाह्य आडम्बर, हम पराधीनों को बहुत शीघ्र विमुग्ध कर लेता है और आज हम में से कितने ही उसकी प्रशंसा के संगीत गाते हुये उसकी धारा में बहने में अहम् भाव का अनुभव भी करते हैं। किन्तु मैं उनसे पूछती हूँ कि क्या कभी उन्होंने उनका आन्तरिक संसार भी देखा है ? मैं सच कहती हूँ आशा, उनके आन्तरिक संसार में प्रेम और विश्वास का पूर्णतः अभाव है। वह ऊपर से भले ही मोहक प्रतीत होता हो, किन्तु उसका आभ्यन्तरिक स्वरूप सूना है, उजड़ा हुआ है, भयावह है। यदि तुम पश्चिम के तत्कालीन

समाज पर दृष्टि डालो तो तुम्हें स्पष्टतः उसकी प्रतिच्छाया उस पर दौड़ती हुई दिखाई देगी। क्या तुम देख नहीं रही हो आशा, कि उसके भीतर से एक भयानक चीत्कार-सी निकल रही है। स्त्री-पुरुष, दोनों ही हृदय में असन्तोष के साथ एक दूसरे के विपरीत मार्ग की ओर जा रहे हैं। न नैतिकता का कोई मूल्य है, न संयम का। जीवन के साथ न कोई आदर्श है, न कोई उद्देश्य। नारी अधिकार के नाम पर स्वेच्छाचारिता की घूँट पीकर न जाने किस ओर बहकी जा रही है। पुरुष प्रेम के अभाव में उसी के अनुसन्धान में दर-दर भटक रहा है। आज ही विवाह हुआ, और कल ही तलाक का पत्र भी न्यायालय में दाखिल हो गया। मिले हुये महीने भी न बीतने पाये, कि पिस्तौलें तन गईं। नारी एक को त्याग कर सैकड़ों के पास जा सकती है, पुरुष एक को छोड़ कर सहस्रों से अपना सम्पर्क स्थापित कर सकता है। दोनों ही मानवी मर्यादाओं से मुक्त हैं, स्वतंत्र हैं। किन्तु क्या इसी का नाम स्वतंत्रता है आशा! स्वतंत्रता से तो जीवन का विकास होता है। यदि वास्तव में यह स्वतंत्रता होती तो फिर समाज के हृदय के भीतर असन्तोष की ज्वाला क्यों धधकती? वह क्यों जगत के सम्मुख चीत्कार करता हुआ दिखाई देता? मैं तो उन्मुख स्वर में कहूँगी आशा, कि वह स्वतंत्रता नहीं, स्वेच्छाचारिता है, मानव जगत की महान् अमर्यादा है। आज उसी के प्रवाह में भारतीय नारी भी तो बही जा रही है।

किन्तु भारतीय नारी उस प्रवाह में बह कर कुछ दिनों के लिये भी अपने अस्तित्व की रक्षा नहीं कर सकती। उसका पतन होगा, निश्चय पतन होगा, और उसके साथ ही साथ उसके समाज और राष्ट्र का भी अधःपतन होगा। वह भारतीय

नारी है। भारतीय संस्कृति की देवी का रक्त उसकी रगों में लहरा रहा है। वह उससे चाहती है, प्रेम और विश्वास! प्रेम और विश्वास के अभाव में वह जीवित ही नहीं रह सकती। आज भारतीय समाज अपनी उखड़ी हुई साँसों के द्वारा वही तो भारतीय नारी से माँग रहा है। क्या ही अच्छा होता, कि यदि भारतीय नारी दुर्बल समाज को प्रेम और विश्वास की शक्ति का महादान कर सकती। समाज और राष्ट्र की बात जाने दो आशा, अपने जीवन-युद्ध ही को ले लो। तुम और रमेश, दोनों ही जीवन के प्रांगण में उतरे हो। ऐसे प्रांगण में उतरे हो, जिसके लिये तुम दोनों ही नवीन हो, तुम दोनों ही अपरिचित हो। विपत्तियों और बाधाओं के रूप में तीर कमान ताने हुये शत्रुओं की असंख्य सेना तुम्हारे सम्मुख खड़ी है। तुम्हें उसपर विजय प्राप्त करना है। जीवन-युद्ध में विजयी होना है। किन्तु जानती हो, यह कैसे हो सकता है? केवल प्रेम और विश्वास की शक्ति से। जब तुम दोनों पारस्परिक प्रेम और विश्वास की शक्ति को लेकर जीवन-प्रांगण में आगे बढ़ोगे, तब बड़ी से बड़ी और भयानक से भयानक विपत्तियाँ भी नत मस्तक हो उठेंगी। दुरूह सरल बन जायगा, और तुम दोनों बड़ी ही सरलता के साथ जीवन-युद्ध के पार पहुँच जावोगे। पारस्परिक प्रेम और विश्वास की सृष्टि के लिये तुम दोनों ही को सतत प्रयत्न करने चाहिये, किन्तु तुम्हारा प्रयत्न अधिक सावधान और अधिक जागरूक होना चाहिये आशा! तुम नारी हो। नारी प्रेम को जगा सकती है, जगाकर उसे जीवित रख सकती है, और कर सकती है, विश्वास की सृष्टि। पुरुष इस कला में अनभिज्ञ होता है। यदि वह अनभिज्ञ नहीं भी होता, तो भी यह तो कहना ही पड़ेगा, कि वह प्रेम और विश्वास को जगा कर

नारी ही की भाँति उसे जीवित नहीं रख सकता। नारी स्वयं प्रेम और विश्वास की साक्षात प्रतिमा होती है। यदि तुम अतीत भारत पर दृष्टि डालोगी तो तुम्हें ऐसी करोड़ों प्रतिमायें प्रेम और विश्वास को जगाती हुई दिखाई पड़ेंगी। उन्होंने पारस्परिक प्रेम और विश्वास को जगाकर अपने घरों को स्वर्ग से भी अधिक सुन्दर बना दिया था। उनका दाम्पत्य जीवन सुन्दर था, सुन्दर से भी अधिक सुन्दर था। वे इसके लिये तपश्चर्या करती थीं, साधना करती थीं, और करती थीं, अपने जीवन का उत्सर्ग। दाम्पत्य जीवन को सुन्दर से भी अधिक सुन्दर बनाना ही उनके जीवन का उद्देश्य था। वे कष्टों की आँच में भी दाम्पत्य जीवन को सुन्दर और सुदृढ़ बनाने वाले प्रेम और विश्वास का परित्याग नहीं करती थीं। तुम्हें उन्हीं भारतीय नारियों के जीवन को अपने सामने रखना चाहिये आशा! यदि तुम उन्हीं की भाँति अपने जीवन में प्रेम और विश्वास के संसार को बसा सकोगी, तभी तुम जीवन युद्ध में विजयिनी हो सकती हो, और तभी विवाह का वह मूल उद्देश्य, जिसे सामने रखकर तुम दोनों ही एक सूत्र में बाँधे गये हो, सफल और संपूर्ण भी हो सकता है। बस, फिर और कभी।

तुम्हारी—
स्नेहमयी भाभी

दाम्पत्य जीवन कैसे सफल हो सकता है ?

रामपुर
१७–८–४०

मेरी बीबी !

सुखी रहो ।

तुमने जीवन के एक नवीन संसार में प्रवेश किया है आशा ! ऐसे संसार में प्रवेश किया है, जहाँ उमंगें हैं, कामनायें हैं, और हैं विभिन्न प्रकार की अभिलाषायें । वे सब की सब मूर्तिमान होकर अनेक रूपों में तुम्हारे सामने आती होंगी, और आश्चर्य नहीं, कि तुम्हारी आँखों में चकाचौंध भी उत्पन्न करती होंगी ! तुम्हारे ही क्यों, रमेश का मन भी आकांक्षाओं के स्वर्ण-गगन पर विहार करता होगा, सरपट लगाता होगा ! उसकी आँखों के सामने भी अभिलाषायें आती होंगी, कामनायें दौड़ती होंगी, और वह देखता होगा, उन्हीं में तुम्हारी प्रतिच्छवि ! जिस प्रकार तुम अभिलाषाओं, आकांक्षाओं और उमंगों का परिधान पहन कर उसके सम्मुख जा पहुँचती हो, उसी प्रकार वह भी अपनी अभिलाषाओं और आकांक्षाओं के मार्ग पर खड़ा होकर तुम्हारी ओर देखता होगा, तुम्हारा मुँह ताकता होगा ! तुम दोनों ही नहीं, जगत के सभी स्त्री-पुरुषों का यही जीवन धर्म है । नारी पुरुष की ओर देखती है और पुरुष नारी की ओर । नारी पुरुष से चाहती है, और पुरुष नारी से । दोनों जीवन-मार्ग के एक दूसरे के अभिन्न साथी होते हैं न ! स्त्री जीवन-मार्ग पर जब चारों ओर देखती है, तब पुरुष के अतिरिक्त उसे कहीं कुछ दिखाई ही नहीं देता । इसी

प्रकार पुरुष भी अपने जीवन-मार्ग पर अपनी नारी ही को पाता है। फिर तो यह स्वाभाविक है, कि दोनों एक-दूसरे को आशा की दृष्टि से देखें, एक दूसरे को अपनी-अपनी आकांक्षाओं का आधार समझें! दोनों अभिलाषाओं और आकांक्षाओं को लेकर ही इस नवीन संसार में प्रवेश करते हैं, एक दूसरे से मिलते हैं! उनकी वे आकांक्षायें, और उनकी वे अभिलाषायें! बड़ी ही सुकुमार होती हैं, बड़ी ही भावुक होती हैं। यदि तुम उन्हें जानना चाहो आशा, तो विवाह के पूर्व के अपने हृदय को टटोलो! एक एक करके वे सब की सब तुम्हारी आँखों के सामने आयेंगी, और तुम देखोगी, कि उनमें कितनी सुकुमारता है, कितनी भावुकता है, और कितनी ज्ञान-हीनता है। उन्हीं अभिलाषाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति ही के लिये तो तुम दोनों विवाह के द्वारा एक दूसरे से मिले हो न!

विवाहार्थी ऐसा अवश्य समझते हैं, पर वास्तव में यह बात नहीं है आशा! तुम और रमेश विवाह के द्वारा इसलिये नहीं मिले हो, कि तुम दोनों की अभिलाषाओं, आकांक्षाओं, और उमंगों की संपूर्ति हो, बल्कि इसलिये मिले हो, कि जीवन का विकास हो, सभ्यता का निर्माण हो! तुम दोनों एक दूसरे से मिल कर जो कुछ भी करोगे, जो कुछ भी प्राप्त करोगे, उसका सीधा प्रभाव समाज, राष्ट्र और समस्त मानव जगत पर पड़ेगा! उसी प्रकार पड़ेगा, जिस प्रकार वीणा के एक-एक तार झंकृत होकर वीणा के स्वर की सृष्टि करते हैं। समाज, राष्ट्र और विश्व के लिये दाम्पत्य-जीवन का कुछ ऐसा ही व्यापक प्रभाव है। दाम्पत्य जीवन पुरुष और नारी की वैयक्तिक अभिलाषाओं और उमंगों की संपूर्ति का केन्द्रस्थल नहीं, जीवन और सभ्यता का सृष्टि-क्षेत्र है, उत्तरदायित्व की समरभूमि है। नारी और

पुरुष को बड़ी ही सावधानी और बड़े ही अनुभव के साथ दाम्पत्य जीवन के मार्ग पर आगे पैर बढ़ाना चाहिये। उन्हें इस बात का ध्यान रखना चाहिये, कि उनका एक-एक पग जीवन का निर्माण करेगा, सभ्यता की सृष्टि करेगा। वे इन दोनो की सृष्टि ही के लिये इस मार्ग पर चल रहे हैं, आगे पग बढ़ा रहे हैं। उनका आगे चलना, उनका आगे पैर बढ़ाना, बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है, बड़ा ही उत्तरदायित्त्वमय है। जितना महत्त्वपूर्ण है, जितना उत्तरदायित्वमय है, उतना ही दुरूह भी है, उतना ही भयानक भी है। पग पग पर काँटें, पग पग पर विपत्तियाँ, और पग पग पर बाधायें! तनिक सी भूल हुई नहीं, कि समस्त आदर्शों के साथ ही साथ जीवन के सुख और आनन्द की हत्या हो जाती है। काँटे चुभने लगते हैं, विपत्तियाँ दुख देने लगती हैं, और बाधायें सिंहिनी की भाँति गरज कर खड़ी हो जाती हैं सामने! दाम्पत्य जीवन सिसक उठता है। उसमें न शक्ति रह जाती है, न साहस! जो जीवन और सभ्यता की सृष्टि के लिये था, वही असहाय बन जाता है, निरुपाय हो जाता है। तुम इस प्रकार के असहाय और निरुपाय दाम्पत्य जीवन का चित्र आज के समाज में भलीभाँति देख सकती हो आशा! करोड़ों नर नारी विवाह के सूत्र में बँध करके भी दिन रात हाय हाय कर रहे हैं। उनके जीवन में न आनन्द है, न सन्तोष! वे राष्ट्र और समाज को कुछ देने को कौन कहे, उसका गला मरोड़ रहे हैं, उसे पंगु बना रहे हैं। अभिशाप के पुतलों की भाँति दर दर भटक रहे हैं, दाम्पत्य जीवन की भर्त्सना कर रहे हैं। नारी पुरुष पर लांछन लगाती है, और पुरुष नारी पर। पुरुष नारी को कोसता है, और नारी पुरुष को। पुरुष नारी को कोस करके ही शान्त नहीं हो जाता, वह राक्षस की

भाँति उसे अत्याचार की भट्टी में भूँजता भी है! न सहयोग है न सहानुभूति है, न प्रेम है, न विश्वास! दोनों ही दाम्पत्य-जीवन से दूर हैं, बहुत दूर!!

मैं पूछती हूँ आशा, ऐसा क्यों हुआ? क्यों दोनों एक दूसरे के प्रतिहिंसक बन कर समाज के पट पर अपने जीवन के काले चित्र खींच रहे हैं? केवल इसलिये, कि दोनों ने वैवाहिक जीवन को वैयक्तिक उमंगों और अभिलाषाओं की संपूर्ति का क्रीड़ास्थल समझा था। पुरुष ने समझा था, नारी त्याग, सन्तोष और सहनशीलता की मूर्ति बन कर मेरे जीवन के आनन्द और सुख की वेदिका पर अपना बलिदान करेगी। नारी ने सोचा था, पुरुष मेरी उमंगों और अभिलाषाओं की संपूर्ति में अपने को मिटा देगा! दोनों इन्हीं भावनाओं को लेकर एक दूसरे से मिले थे। उनके सम्मुख विवाह का न आदर्श था, न महत्त्व। वे केवल अपना जानते थे, और जब उसकी संपूर्ति न हुई तब दोनों के हृदय में जल उठी, असन्तोष की अग्नि! स्त्री-पुरुष का यह असन्तोष, उनके जीवन का यह काला चित्र, दाम्पत्य-जीवन के लिये अभिशाप स्वरूप है आशा! ऐसे युवक और युवतियों को विवाह के सूत्र में बँधना ही न चाहिये! वे मनुष्य होते हुए भी उन्हीं के सदृश हैं, जो सजीव होते हुये भी वाक्शक्ति रहित हैं। आज इन्हीं के कुकृत्यों के कारण तो समाज रो रहा है, सिसकियाँ ले रहा है! यदि इस प्रकार के दम्पति, जिनके जीवन में प्रेम नहीं है, विश्वास नहीं है, सहानुभूति नहीं है, अपने दाम्पत्य-जीवन का किसी न किसी प्रकार अन्त कर दें तो बड़ा ही अच्छा हो! ऐसे ही दम्पतियों के लिए 'तलाक' की खोज की जाती है। किन्तु इस प्रकार के स्त्री-पुरुष, जो विवाह को उमंगों और अभिलाषाओं की पूर्ति का

साधन समझते हैं, तलाक के पश्चात् दूसरे से अपना सम्बन्ध स्थापित करके भी सुखी जीवन नहीं व्यतीत कर सकते। जिन समाजों में तलाक की प्रथा है, उनमें इस प्रकार के दम्पति प्रतिदिन अपना सम्बन्ध तोड़ते और जोड़ते रहते हैं। उन्हें कहीं भी किसी के साथ सन्तोष नहीं होता। इसका एकमात्र कारण केवल यही है, कि वे मानव जीवन के मर्मों को नहीं जानते, विवाह के आदर्शों को नहीं पहचानते। उनके जीवन का ध्येय है, विषय-वासना की संपूर्ति, उमंगों का क्रीड़ा-अभिनय!!

तुम कह सकती हो आशा, कि विवाह के पूर्व तो प्रत्येक युवक युवती का हृदय उमंगों और अभिलाषाओं का संसार सा बना रहता है। ठीक है, मैंने स्वयं ही इसका चित्र तुम्हारी आँखों के सामने खींचा है। किन्तु तुम यह नहीं कह सकती आशा, कि प्रत्येक युवक युवती के विवाह का ध्येय उसकी अभिलाषाओंकी सम्पूर्ति तक ही सीमित रह जाता है। तुम्हारा वह निबन्ध मुझे इस समय भी याद है, जिसमें तुमने विवाह की व्याख्या करते हुये यह लिखा था, कि विवाह इसलिये नहीं किया जाता कि स्त्री-पुरुष की इच्छाओं की सम्पूर्ति हो, बल्कि इसलिये किया जाता है, कि विवाह के द्वारा एक अनन्य सहचर के अभाव की पूर्ति होती है। वास्तव में बात यही है आशा! दाम्पत्य जीवन का यही प्रकृत रहस्य भी है। स्त्री-पुरुष एक दूसरे के अनन्य सहचर हैं, एक दूसरे के अनन्य साथी हैं। विवाह ने दोनों की आजीवन सहकारिता की घोषणा की है। इस घोषणा के अनुसार दोनों के प्राण प्राण को मिलना चाहिये, दोनों के हृदय हृदय को जुटना चाहिये। दोनों में समता होनी चाहिये, बन्धुत्व का भाव होना चाहिये। दोनों के सामने बहुत बड़ा उत्तरदायित्व है, बहुत बड़ा कार्य है; किन्तु यह कैसा पूरा होगा? क्या पारस्परिक

असन्तोष और विरोध से ? नहीं, कदापि नहीं ! इसकी संपूर्ति के लिये तो चाहिये पारस्परिक सहयोग, सहानुभूति और विश्वास । स्त्री भूल करे, पुरुष को क्षमा करना चाहिये । पुरुष गलती करे, स्त्री को समझाना चाहिये । दोनों ही भूल कर सकते हैं, दोनों ही अज्ञानता के पथ पर जा सकते हैं । किन्तु दोनों ही एक दूसरे को क्षमा भी तो कर सकते हैं । दोनों को एक दूसरे के प्रति सहिष्णु होना चाहिये, उदार होना चाहिये, और इसलिये होना चाहिये, कि दोनों को अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाना है, सफल बनाना है और बनाना है आदर्शवान !

दाम्पत्य जीवन का उत्तरदायित्व पुरुष और स्त्री, दोनों ही पर समान रूप से है ! दोनों ही को उसे ऊँचा, आदर्शवान, और सफल बनाने के लिये अधिक प्रयत्न करना चाहिये । किन्तु नारी 'नारी' होने के कारण इसमें अधिक भाग ले सकती है । दूसरे शब्दों में कहना यह चाहिये, कि दाम्पत्य जीवन का बहुत कुछ उत्तरदायित्व 'नारी' ही के ऊपर रहता है। 'नारी' ही उसे बना सकती है, और बिगाड़ भी सकती है । दाम्पत्य जीवन जहाँ से आरम्भ होता है, वहाँ नारी एक अनुभवशून्य युवती के रूप में दिखाई देती है । किन्तु उसे अनुभव-शून्य न होना चाहिये । उसे दाम्पत्य जीवन का अध्ययन के द्वारा इतना ज्ञान होना चाहिये, कि वह उसकी शक्ति से उस अपरिचित संसार में घुल-मिल सके, उसे अपना बना सके । दाम्पत्य जीवन का यह अध्याय बहुत कड़ा और दुरूह है । अनेक युवतियाँ यहीं फिसलकर गिर पड़ती हैं, और फिर जीवन तक गिरती ही जाती हैं । नारी के समान पुरुष को इस प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता । दाम्पत्य जीवन में पुरुष से जो कुछ चाहती है, केवल उसकी नारी ही चाहती है; किन्तु नारी से

सब लोग चाहते हैं। पुरुष, उसकी माँ, उसके भाई, उसका पिता, उसकी बहनें, और उसके घर के दूसरे लोग! दाम्पत्य जीवन में प्रवेश करने वाली युवती यहाँ दया की पात्रिणी है। यह निश्चित बात है, कि यदि उसमें ज्ञान-शक्ति का अभाव है, तो वह फिसल कर गिर पड़ेगी। किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि वह अपनी इस भूल के कारण पुरुष की नजरों से भी फिसल पड़े। पुरुष को उसे उठाना चाहिये, उसके प्रति दया और उदारता का भाव प्रगट करना चाहिये। वह जीवन-सहचरी है, वह जीवन-संगिनी है। दोनों एक दूसरे को न उठायेंगे, दोनों एक दूसरे की भूलों को न क्षमा करेंगे तो कौन क्षमा करेगा? इस अपरिचित संसार में, उस ज्ञान और अनुभवशून्य युवती ने पुरुष ही की शक्ति से प्रवेश किया है और प्रवेश किया है, अपने माँ-बाप और बन्धुओं की ममता को त्याग कर। उसके त्याग और उसकी हृदय-विशालता को तो देखो! वह यह सब जीवन और सभ्यता की ही सृष्टि के लिये करती है। उसे दाम्पत्य जीवन प्यारा है, प्राणों से भी अधिक प्यारा है! वह इसी के लिये माँ-बाप को भी छोड़ देती है, बन्धुओं की ममता का परित्याग कर देती है। पुरुष की दृष्टि में इसका मूल्य तो होना ही चाहिये, उसे जीवन के विकास के लिये अपनी जीवन-संगिनी की सहायता करनी ही चाहिये। एक दूसरे की सहायता और सहयोग से ही दाम्पत्य जीवन का तरु फल-फूल सकता है।

दाम्पत्य जीवन की सफलता का बहुत कुछ आधार स्त्री-पुरुष का पारस्परिक प्रेम है। दोनों को ही एक दूसरे का अधिक से अधिक प्रेम प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिये। विवाहिता नारी का सबसे प्रथम कर्तव्य यह है, कि वह अपने पुरुष के हृदय में अपना स्थान बनाये। उसे किसी न किसी प्रकार अपने

पुरुष का प्रेम प्राप्त ही करना चाहिये। भारतीय सभ्यता में नारी और पुरुष का सम स्थान होते हुये भी पुरुष नारी का जीवन सर्वस्व है, उसका प्राणेश्वर है। भारतीय नारी युग युगान्तर से अपने पुरुष को ऐसा ही समझती चली आ रही है। भारत में ऐसी अनेक स्त्रियाँ हो गई हैं, जिन्होंने पति के चरणों में अपने को बलिदान कर दिया है, और जिन्होंने पति के लिये सांसारिक सुखों और वैभवों की उपेक्षा की है। आज की भारतीय नारी को भी उन्हीं का अनुकरण करना चाहिये, उन्हीं के आदर्शों को अपने हृदय में स्थान देना चाहिये। नारी के लिये पति का प्रेम बड़ा ही मूल्यवान होता है, बड़ा ही आदर्शनीय होता है। इसलिये और कि पति का प्रेम प्राप्त करके ही नारी सफल दाम्पत्य जीवन की ओर अग्रसर होती है। भारतीय सभ्यता, दाम्पत्य-जीवन में, पुरुष की महानता और उच्चता को भी घोषित करती है। मनुष्यता के क्षेत्र में दोनों सम होते हुए भी पुरुष दाम्पत्य-जीवन में नारी से अधिक ऊँचे स्थान पर जा बैठता है। इस दृष्टि से भी नारी को पुरुष का ध्यान करना ही चाहिये, नारी को चाहिये कि वह मन ही मन पुरुष की मनोवृत्तियों का अध्ययन करती रहे और साथ ही उन्हीं के अनुकूल अपने जीवन को भी साँचे में ढालती रहे। इसका यह तात्पर्य नहीं, कि यदि पुरुष अत्याचार करता हो, शराब पीता हो, दुर्गुणों में लिप्त हो, तो नारी भी उसी का अनुगमन करने लगे। नहीं, नारी शक्तिस्वरूपिणी है। उसे अपनी वास्तविकता को ध्यान में रख करके ही पुरुष के प्रेम को प्राप्त करना चाहिये। यदि नारी चाहे तो पुरुष दुर्गुणों के बंधनों से मुक्त हो सकता है, और वह उसके हृदय पर अपना साम्राज्य भी स्थापित कर सकती है। नारी के लिये यह बहुत ही आवश्यक

है। यदि यह नहीं होता तो समझ लो, दाम्पत्य-जीवन सम्पूर्ण नहीं होता। नारी को पुरुष का प्रेम प्राप्त करने के साथ ही साथ उसके कुटुम्बियों का भी प्रेम प्राप्त करना चाहिये; अर्थात् पुरुष के माँ, बाप, उसकी बहनों और उसके भाइयों का भी। नारी को इसके लिये त्याग करना चाहिये, और आवश्यकता पड़ने पर अपनी आकांक्षाओं का बलिदान भी। पर सर्वत्र ऐसा होता नहीं। किन्तु जब कभी ऐसा अवसर उपस्थित हो तब नारी को त्याग के मार्ग से पीछे पग न हटाना चाहिये। उसे अपनी आकांक्षाओं का बलिदान कर देना चाहिये, किन्तु अपने दाम्पत्य जीवन को उजड़ने से, नष्ट होने से बचाना चाहिये। यह सब काम नारी केवल नम्र और सहिष्णु बन कर कर सकती है। यह आवश्यक नहीं, कि नारी में सौन्दर्य हो, किन्तु यह अधिक आवश्यक है, कि नारी में नम्रता हो, सहिष्णुता हो, और हो उदारता। कठोर प्रकृति की असहिष्णु सुन्दर नारी उस रस की भाँति ज्ञात होती है, जिसमें मिठास बिलकुल न हो! स्त्री के निर्माण में ही प्रकृति ने उदारता और सहिष्णुता के तत्त्वों को अधिक परिमाण में स्थान दिया है। इन तत्त्वों के अभाव में नारी के नारीत्व का विकास होता ही नहीं! इन तत्त्वों से शून्य नारी अपने जीवन का संहार करने के साथ ही अपने दाम्पत्य जीवन का भी संहार करती है। नम्र, सुशील, और सहिष्णु नारी दाम्पत्य जीवन पर विजय प्राप्त करती है। वह स्वयं भी उल्लसित रहती है, और दूसरों को भी उल्लासमय बनाती है। वह सचमुच जीवन बाँटती है, समाज, राष्ट्र और मानव जगत को भी। वैवाहिक जीवन का यही तो मूल तत्त्व है! बस···।

तुम्हारी—
प्रेममयी भाभी

वैवाहिक जीवन में कलह

रामपुर
२०-८-४०

मेरी आशा !

फूलो-फलो।

आज मेरे मन में एक दुःख है आशा, बहुत बड़ा दुःख है। हृदय दबा हुआ है, मन मरा जा रहा है। जैसे उस पर किसी ने तुषार डाल दिया है। इच्छा होती है, शीघ्र हो उस संसार से चल बसूँ, जहाँ पुरुष और नारी में भी प्रेम नहीं, विश्वास नहीं, सहयोग नहीं, सहानुभूति नहीं! अभी कुछ ही पहले एक बहिन घड़ों आँसू बहाकर गई है। कभी रोती थीं, कभी अपने पति की भर्त्सना करती थीं, और कभी उसके प्रति अशुभ और अमंगल के शब्द निकालती थीं। मैं सुनती जाती थीं, चकित होकर, अवाक् होकर! वे अपनी दुःख की कहानी आँसुओं में, क्रोध में, आवेग के शब्दों में प्रगट करके चली गईं, और मेरे मन पर गिर पड़ा, वेदना का तुषार। मेरा हृदय, और मेरा मन उसी तुषार से ढँका हुआ है। संसार की ओर देखती हूँ, तो घृणा के भाव जाग्रत होते हैं। मनुष्यों की ओर देखती हूँ, तो उपेक्षा प्रगट होती है। आज की ही घटना से नहीं आशा, ऐसी अनेक घटनायें प्रतिदिन आँखों के सामने आती हैं और प्रतिदिन मेरे हृदय को यह सन्देश सुना जाती हैं, कि मनुष्य, नारी हो या पुरुष, प्रेम से शून्य है, विश्वास से रहित है। मैं सोचने लगती हूँ, ऐसा क्यों? क्यों मनुष्य प्रेम और विश्वास से रहित है? मानव-

जीवन तो प्रेम और विश्वास का आधार-स्तम्भ है। प्रेम ही और विश्वास की शक्ति से ही तो मानवता विकसित होती है, फुलती है, फलती है। तो क्या मनुष्यों में मानवता नहीं ? सचमुच आशा, मानवता ने मनुष्यों का साथ छोड़ दिया है। तुम्हीं सोचो यदि मानवता होती तो क्या नारी और पुरुष एक साथ मिल करके भी अपने प्रेम और विश्वास के संसार को स्थिर न रख पाते ?

पुरुष और नारी की यह स्थिति बड़ी भयानक है आशा, बड़ी कष्टप्रद है। आज मेरे मन का सारा दुःख केवल इसीलिये है। जब मैं दाम्पत्य जीवन के मार्ग पर चलने वाले इन दो सच्चे साथियों की भी बीभत्स कहानियाँ सुनती हूँ, और देखती हूँ, उनके भयानक चित्र, तब मेरा हृदय कम्पित हो उठता है, दुःख से भर जाता है, और सचमुच ही उस पर गिर पड़ता है तुषार। अनेक प्रकार के विचार उठते हैं, लुप्त हो जाते हैं। अनेक प्रकार के चित्र आँखों के सन्मुख आते हैं, और नष्ट हो जाते हैं। मैं यह सोचती ही रह जाती हूँ आशा, क्यों ऐसा हुआ ? दोनों पहले पहल जब एक दूसरे से मिले थे, दोनों के हृदय में उमंगें थीं, अभिलाषायें थीं, प्रेम की कोमल कल्पनायें थीं। पारस्परिक परिचय न होने पर भी एक ने दूसरे के गले में हाथ डाल दिया था। खूब मिले थे, आपस में घुल मिल गये थे। फिर क्यों कुछ ही दिनों के पश्चात् एक दूसरे के प्रति हिंसक बन गये ? क्यों एक दूसरे के लिये भार स्वरूप से ज्ञात होने लगे ? वैवाहिक जीवन का यह उद्देश्य तो नहीं ! वैवाहिक जीवन का उद्देश्य तो है, प्रेम का विकास, सुख और सन्तोष की वृद्धि ! किन्तु कहाँ प्रेम का विकास है, कहाँ सुख और सन्तोष की वृद्धि है ! प्रेम का संसार उजड़ा हुआ है, जीवन

का सारा सुख और सन्तोष धूल में मिल गया है। दोनों ही एक दूसरे से आकुल हैं, परीशान हैं। जिन देशों में तलाक़ की प्रथा है, इसी प्रकार के अनेक विवाहित स्त्री-पुरुष प्रतिदिन अपने वैवाहिक सम्बन्ध को खटाखट तोड़ते हुये दृष्टिगोचर होते हैं! हमारे यहाँ तलाक़ की प्रथा न होने के कारण लोग मन मसोस कर रह जाते हैं। स्त्री-पुरुष साथ-साथ रहते हैं, किन्तु शत्रु की तरह, विरोधी के रूप में। स्त्री को न पुरुष की चिन्ता है, और न पुरुष को स्त्री की। दोनों एक ही साथ कुटुम्ब में रहते हैं, दैनिक कार्यों को करते हैं, किन्तु न स्त्री पुरुष की ओर देखती है, और न पुरुष स्त्री की ओर। वर्षों बीत जाते हैं, दोनों एक दूसरे से बातचीत भी नहीं करते। ऐसे स्त्री-पुरुषों का यदि तलाक़ से कल्याण हो सकता है, तो भारतीय समाज को भी तलाक़ की प्रथा का सम्मान करना चाहिये। तलाक़ से चाहे कुछ और न हो, किन्तु इतना तो अवश्य ही हो जायगा, कि जीवन से आकुल स्त्री-पुरुष विवशता के बन्धन से छूट जायँगे, और स्वतन्त्र होकर जीवन का विकास कर सकेंगे।

स्त्री-पुरुष का यह पारस्परिक असन्तोष साधारण मनुष्य ही में नहीं, जगत के बड़े-बड़े महापुरुषों के जीवन में भी पाया जाता है। झोपड़ी से लेकर राजमहल को भी इसकी लपटें चूमती हुई दिखाई देती हैं। प्रसंगवश हम यहाँ कुछ महापुरुषों के वैवाहिक जीवन का उल्लेख कर रही हैं। इतिहास प्रसिद्ध नैपोलियन बोनापार्ट का नाम तो तुमने सुना ही होगा। उसके भतीजे तीसरे नैपोलियन का वैवाहिक जीवन बड़ा ही कष्टमय था। वह सम्राट् था, बहुत बड़े साम्राज्य का सत्वाधिकारी था, किन्तु फिर भी उसका हृदय सदैव असन्तोष की आग से जला करता था। उसकी स्त्री अनिंद्य सुन्दरी थी। सुखी दाम्पत्य

जीवन व्यतीत करने के लिये नैपोलियन के पास सब कुछ था, मान, मर्यादा, वैभव, और प्रभुत्व ! किन्तु पति-पत्नी कभी भी सुखी और शान्त जीवन का अनुभव न कर सके। पत्नी के हृदय में पति के लिये सन्देह था, अविश्वास था, ईर्षा थी। पत्नी समझती थी, पति उससे छिपकर किसी दूसरी स्त्री से प्रेमालाप करता है। वह मन ही मन ईर्ष्या की आग से जला करती थी। वह पति के प्रत्येक काम में बाधा डालती थी। यहाँ तक कि राज्य-सञ्चालन के कार्य में भी। वह नैपोलियन को कभी एकान्त में न छोड़ती। कोई भी स्थान हो, जा पहुँचती। इतना ही नहीं, वह अपनी बहन से नैपोलियन की शिकायत भी करती। उसे जलीं कटी सुनाती, और अनेक प्रकार की धमकियाँ भी दिया करती थी। नैपोलियन ऊब उठा, आकुल हो उठा, अपने इस विवाहित जीवन से ! कार्य से अवकाश पाने के पश्चात् उसका थका हुआ मन किसी के प्रेमोन्माद को लेकर मीठी नींद में सोना चाहता था, किन्तु वहाँ उसकी पत्नी के मन में थी, ईर्षा की आग ! क्या हुआ इसका परिणाम ? वही, जो होना चाहिये ! फ्रान्स का सम्राट् तृतीय नैपोलियन वास्तव में लुक-छिप कर दूसरी स्त्रियों के सामने प्रेम के लिये हाथ पसारने लगा।

रूस के प्रसिद्ध उपन्यासकार महात्मा टालस्टाय का वैवाहिक जीवन इससे भी अधिक कष्टप्रद था, इससे भी अधिक भयावह था ! इतना अधिक भयावह था, कि एक दिन टालस्टाय को उससे आकुल होकर आत्महत्या तक कर लेनी पड़ी थी। टालस्टाय के पास भी सब कुछ था। धन, प्रतिष्ठा और गौरव। दाम्पत्य-जीवन को सुख और शान्ति के साथ व्यतीत होना चाहिये था। इसमें सन्देह नहीं, कि प्रारम्भ में दोनों में

प्रगाढ़ प्रेम था, आदर्शनीय विश्वास था। पति-पत्नी दोनों एक दूसरे को प्रेम और विश्वास की दृष्टि से देखते थे और उसकी स्थिरता के लिये ईश्वर से प्रार्थना भी करते थे। किन्तु बीच ही में प्रेम और विश्वास के तार टूट गये। टालस्टाय की प्रवृत्ति में परिवर्तन हो उठा। वे तुच्छ से महान् बन गये। पर स्त्री वहाँ की वहीं रह गई। वह विलासिनी थी! विलास ही उसके जीवन की प्रधान वस्तु थी। उधर टालस्टाय करते थे, विलास से घृणा। उनके लिये सामाजिक प्रतिष्ठा, धन, और गौरव तुच्छ था, किन्तु स्त्री इसके लिये प्राण देती थी। उसका सारा कार्य ही सामाजिक प्रतिष्ठा और गौरव ही के लिये होता था। टालस्टाय जब अपनी पत्नी की बातों का विरोध करते, तब वह मूर्च्छित होकर जमीन पर गिर पड़ती, ओठोंसे अफीम की बोतल लगा लेती, और कुँये में कूद कर प्राण दे डालने की धमकी दे देती। टालस्टाय का कोमल, सरल और भावुक हृदय पत्नी के कर्कश और अमानुषिक व्यवहार से छलनी-छलनी हो गया। अन्त में एक दिन बयासी वर्ष की अवस्था में रात को अपने घर से निकल पड़े। उस समय जोरों की बर्फ़ पड़ रही थी। ग्यारहवें दिन के पश्चात् वे एक रेलवे स्टेशन पर मिले। उस समय वे न्यूमोनिया से पीड़ित थे, और थे मृत्यु के सन्निकट। उनकी पत्नी को अपनी भूल ज्ञात हुई। किन्तु उस समय ज्ञात हुई, जब टालस्टाय इस संसार में नहीं थे। उसने स्वयं मृत्यु के पूर्व अपनी लड़कियों से यह स्वीकार किया था, कि अपने पति की मृत्यु का कारण वही थी।

भारतीय समाज में भी इस वैवाहिक जीवन के इस प्रकार के अनेक कष्टप्रद उदाहरण तुम्हें मिल सकते हैं आशा! कहीं स्त्री पुरुष को कोस-कोस कर उसके प्राण ले रही है, तो कहीं

पुरुष स्त्री की असामयिक मृत्यु का कारण बन रहा है। स्त्री और पुरुष दोनो ही विवाह के कुछ दिनों तक प्रेम से रहते हैं, बड़े सुख और शान्ति के साथ जीवन व्यतीत करते हैं। किन्तु जहाँ कुछ और दिन आगे खिसके नहीं, कि नारी स्वतन्त्र हो उठती है। पुरुष उच्छृङ्खल बन जाता है। नारी समझने लगती है, मैं कहाँ तक इनका सम्मान करूँ ? पुरुष समझने लगता है, मैं कहाँ तक इसके मान की रक्षा करूँ ? दोनों में अहंभाव जागृत हो उठते हैं, और दोनों ही एक दूसरे को सन्देह की दृष्टि से देखने लगते हैं। वैवाहिक जीवन अपवाद सा दिखाई देने लगता है। आज वैवाहिक जीवन और विवाह पर जो कर्कश आघात हो रहे हैं, वह केवल इसीलिये, कि हमारा वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं है! दूर से जब उसके भयावह चित्र लोग देखते हैं, तब उनका हृदय कम्पित हो उठता है। उन देखने वालों में स्त्रियाँ भी होती हैं, और पुरुष भी। पुरुष उन चित्रों को देखकर स्त्रियों के विरुद्ध विचार प्रगट करते हैं, और स्त्रियाँ पुरुषों के विरुद्ध। पुरुष कहते हैं, "नारी मायाविनी होती है। वह अपनी मुस्कुराहट से पुरुष को अपने वश में करके स्वेच्छाचारिता का अभिनय करती है, और पुरुष उसकी इच्छाओं की अग्नि में देता है अपने जीवन की आहुति। वह घर में सुख से बैठी रहती है और पुरुष उसके लिये सुखाता है अपने शरीर का रक्त।"—उधर नारी एक दूसरा ही विचार सामने उपस्थित करती है। वह पुरुष पर आरोप करती हुई कहती है; "वैवाहिक जीवन नरक है, यन्त्रणा का संसार है। पुरुष नारी के आत्म-सम्मान के साथ खेलता है। उसे अपनी अभिलाषाओं की क्रीत दासी समझता है। अपनी वासना की अग्नि में नारी को झोंकता है। और उसके सारे सौन्दर्य को जला कर भस्म कर देता है।"

यही हैं वैवाहिक जीवन को कुत्सित बनाने वाले विचार! यह सच है, कि इस प्रकार के विचारों की सृष्टि वैवाहिक जीवन के परिणामों को ही सामने रख कर की जाती है, किन्तु यह सच नहीं है आशा, कि वैवाहिक जीवन वास्तव में कुत्सित है, अपवित्र है, और है जीवन को संकुचित करने वाला! वैवाहिक जीवन के सम्बन्ध में इस प्रकार के शब्दों को लाना ही अनुचित है, अश्रेयस्कर है। वैवाहिक जीवन महान् है, पवित्र है। सुख, शान्ति और संयम के मनोहर झरने वैवाहिक जीवन से ही झरते हैं। वह अभाव से रहित है, परिपूर्ण है। अभाव तो उन स्त्री-पुरुषों में है, जो वैवाहिक जीवन के उद्देश्यों को न समझ कर उसमें बँध जाते हैं।

वैवाहिक जीवन का मूल तत्व है, जीवन का विकास। और यह तब तक नहीं हो सकता, जब तक स्त्री-पुरुष अपने हृदय में एक दूसरे के प्रति प्रेम और विश्वास की भावना न स्थिर करेंगे। इसके लिए यह अत्यन्त आवश्यक है, कि दोनों शरीर से न मिल कर हृदय और प्राण से मिलें। दो रूप होकर एकरूपता का अनुभव करें! स्त्री पुरुष की मनोवृत्ति का अध्ययन करे और पुरुष स्त्री की। दोनों को एक दूसरे की मनोवृत्तियों को परख कर उनके सन्निकट जाने का प्रयत्न करना चाहिये। स्त्री इस बात का प्रयत्न करे, कि वह पुरुष के हृदय के समीप पहुँचे और पुरुष इस बात का प्रयत्न करे, कि उसकी नारी उससे प्रसन्न रहे। दोनों को एक दूसरे की आलोचना-प्रत्यालोचना से दूर रहना चाहिये। गार्हस्थ जीवन में होने वाली छोटी छोटी भूलों पर विशेष ध्यान देकर आपस में कटुता न उत्पन्न करनी चाहिये। यदि स्त्री से भूल हुई हो तो पुरुष को उसे सुधारना चाहिये। गार्हस्थ जीवन में पुरुष को हस्तक्षेप

न करना चाहिये। नारी अन्तःपुर की रानी होती है। उसका अधिकार है, कि वह अन्तःपुर में स्वाधीनता के साथ विचरण करे। अन्तःपुर के प्रत्येक कार्य पर उसका आधिपत्य होना चाहिये। प्रत्येक कार्य में उसकी इच्छा को प्रधानता देनी चाहिये। नारी अन्तःपुर का काम बड़े ही कौशल और बड़े ही गुण के साथ करती है। पुरुष को उसमें हस्तक्षेप करने की आवश्यकता नहीं। पुरुष के अनुचित हस्तक्षेप से नारी के हृदय को ठेस लगती है, और वह मन ही मन विक्षुब्ध हो उठती है। यदि पुरुष ने नारी की इस विक्षुब्धि पर ध्यान न दिया तो कुछ दिनों के पश्चात् वही दाम्पत्य जीवन के लिये आग बन कर जल उठती है, और दाम्पत्य जीवन को जलाने के साथ ही साथ शान्ति और सुख के समस्त उपकरणों को भी जला कर भस्म कर देती है!

वैवाहिक जीवन के सुख का आधार स्त्री-पुरुष के मन की प्रसन्नता है। पुरुष क्या चाहता है, यह स्त्री के सामने होना चाहिये। नारी क्या चाहती है, यह पुरुष के मन में होना चाहिये। स्त्री को अपना क़दम पुरुष की ओर देख कर उठाना चाहिये, और पुरुष को अपने गार्हस्थ जीवन का प्रत्येक कार्य स्त्री की रुचि के अनुसार करना चाहिये। दोनों को ही चाहिये, कि वे अपने व्यवहारों से एक दूसरे को प्रसन्न करें। नारी को चाहिये, वह जहाँ तक हो सके, अपने पति का सन्मान करे। उसके यश को अपना यश समझे और उसके अपयश को अपनी निन्दा। उसके सामने हँसती रहे, कोयल की भाँति पिहकती रहे, और करती रहे अपनी प्रेम-मयी वाणी की अमृत वर्षा! उसके प्रत्येक व्यवहार में सरलता होनी चाहिये, शिष्टता होनी चाहिये, और होनी चाहिये विश्वसनीयता।

उसे अपने पुरुष के सम्मुख सरलता, विश्वास और प्रेम का ऐसा सजीव चित्र खींचना चाहिये, कि पुरुष के मन का सारा सन्देह दूर हो जाय! यही क्यों? सन्देह की सृष्टि का पुरुष के हृदय में कभी अवसर ही न आने देना चाहिये। ऐसा स्पष्ट जीवन हो, कि पुरुष उसे अपना अनन्य जीवन-सहचर समझने लगे, उसकी ओर झुकने लगे, उसके आकर्षणों पर मुग्ध होने लगे! किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं, कि नारी पुरुष को अपने आकर्षणों में बाँध कर उसे अपनी इच्छाओं का खिलौना बनाये! नहीं, यदि नारी ऐसा करेगी तो वह अपने सिंहासन से नीचे गिर जायगी, और वैवाहिक जीवन का सारा सुख धूल में मिल जायगा। वैवाहिक जीवन का सुख तो इसी में है, कि पत्नी के प्रेमाकर्षण से पुरुष को अच्छे कामों के लिये प्रेरणा प्राप्त हो, उत्साह और जीवन मिले। वैवाहिक जीवन के सुख और उसकी सफलता के लिये पत्नी को चाहिये, कि वह सतत सूक्ष्म दृष्टि से इस बात पर ध्यान देती रहे! यदि कभी पुरुष प्रेमाकर्षण को विषय-वासना समझ कर उसमें परिलिप्त हो जाय, तो पत्नी को प्रेम पूर्ण शब्दों में उसे समझाना चाहिये। उससे उत्पन्न होने वाले परिणामों का पुरुष की आँखों के सामने चित्र खींचना चाहिये। यदि नारी ऐसा न करके स्वयं भी उसमें योग देती रही तो कुछ ही दिनों के पश्चात् पुरुष उसके हाथ से बाहर निकल जायगा और फिर दोनों का वैवाहिक जीवन धूल में मिल जायगा। पत्नी को चाहिये, वह हर प्रकार से पुरुष को अपने हाथ में रक्खे। किन्तु इसमें कृत्रिमता और षड्यंत्र न होना चाहिये। पत्नी जो कुछ भी पुरुष के साथ करे, वह सच्चा हो, वास्तविक हो, और हो कपट रहित! पुरुष ऐसी पत्नी को पाकर फूला नहीं समाता। वह अपने जीवन को धन्य

समझता है, महा धन्य! यहाँ हम इङ्गलैण्ड के एक बहुत बड़े राजनीतिज्ञ के इसी प्रकार के वैवाहिक जीवन का उदाहरण दिये हुये बिना नहीं रह सकती। उसका नाम था डिजरेली। वह इङ्गलैण्ड के महान् राजनीतिज्ञों में से था। उसका कहना था, 'हो सकता है मैं अपने जीवन में बहुत सी ग़लतियां कर बैठूँ, किन्तु मैं प्रेम और विवाह करने का विचार कभी भी नहीं कर सकता।' उसने ऐसा ही किया भी। पैंतीस वर्ष की अवस्था तक वह अविवाहित रहा। इसके पश्चात् उसने एक धनी विधवा से, जिसकी अवस्था उससे पन्द्रह वर्ष अधिक थी, विवाह का प्रस्ताव किया। विधवा के बाल पक गये थे, और उसके शरीर में यौवन के चिह्न तक नहीं थे। विधवा ने उत्तर के लिये एक वर्ष का समय माँगा। एक वर्ष तक वह डिज़रेली के चरित्र और उसकी मनोवृत्तियों का अध्ययन करती रही। तत्पश्चात् उसने डिज़रेली के साथ विवाह कर लिया। उसमें न यौवन था, न सौन्दर्य था। न बुद्धि थी, न कौशल था। गुण के नाम पर उसमें अधिक न था, किन्तु अभाव के नाम पर उसमें बहुत कुछ था। तथापि डिज़रेली उससे सदा सन्तुष्ट रहता था। इसका कारण था, उसका एक बहुत बड़ा गुण। वह पुरुष के साथ उसकी मनोवृत्ति के अनुकूल व्यवहार करने में बड़ी दक्ष थी। वह कभी भी कोई ऐसा कार्य नहीं करती थी, जिससे डिज़रेली को दुःख होता। वह डिज़रेली को अपने प्राणों से भी अधिक प्यार करती थी। वह वास्तव में उसकी जीवन सहचर थी, उसके विश्वास की सच्ची पात्रिणी थी। डिज़रेली प्रायः कहा करता था, कि 'हमारे वृद्ध जीवन की स्फूर्ति हमारी स्त्री की सरलता और निष्कटता है।'

नारी की भाँति ही पुरुष को भी नारी के सम्मान की

चिन्ता करनी चाहिये। उसे भी चाहिये कि वह अपनी नारी को प्रसन्न रक्खे। नारी पुरुष से प्रसंसा चाहती है। वह चाहती है, उसका पुरुष उसके प्रत्येक कार्य की प्रशंसा करे, उसे सम्मान दे, और उसके गौरव को बढ़ाये। पुरुष के मुख द्वारा होने वाली प्रशंसा से नारी फूली नहीं समाती और उसके आवेग में बड़े से बड़े कार्य को भी कर डालती है। एक बहुत बड़े विद्वान् का कथन है:—यदि नारी को प्रसन्न रखना चाहते हो तो उसके कार्यों की खूब प्रशंसा करो। किन्तु इस प्रशंसा में कृत्रिमता का भाव न होना चाहिये। इसमें वास्तविकता होनी चाहिये, और होनी चाहिये हृदय की विशालता। हृदय से की हुई प्रशंसा नारी के ऊपर अपना बहुत ही व्यापक प्रभाव डालती है, और नारी उस पर रीझ कर अपना सर्वस्व लुटा देने के लिये तैयार हो जाती है। दाम्पत्य जीवन की सफलता के लिये पुरुष में इस गुण का होना बहुत ही आवश्यक है। वह जहाँ उदार हो, सहिष्णु हो, प्रेमी हो और हो समता को महत्त्व देने वाला, वहाँ उसमें स्त्री के कार्यों की प्रशंसा के भाव भी होने चाहिये। नारी पुरुष से एक और भी चीज़ चाहती है, नई नई वस्तुओं के उपहार। नारी पुरुष के उपहार को पाकर प्रसन्नता की सीमा से बाहर हो जाती है। अप्रसन्न नारी को प्रसन्न करने का यह सब से बड़ा साधन है। संसार-सुख से उदासीन नारियों की बात तो मैं नहीं कह सकती, किन्तु गार्हस्थ जीवन में रहने वाली अधिकांश स्त्रियों को उपहार की वस्तुयें अधिक प्रिय होती हैं। किन्तु एक ही प्रकार का उपहार सभी स्त्रियों को आकर्षित नहीं कर सकता। प्रत्येक नारी की भिन्न-भिन्न रुचि होती है, और वह अपनी रुचि के ही अनुसार उपहार की वस्तुओं को पसन्द करती है। किसी नारी को कुछ अच्छा

लगता है, किसी को कुछ। नारी की प्रसन्नता के लिये उसकी रुचि पर ध्यान देना बहुत ही आवश्यक है। यदि पुरुष नारी की रुचि पर ध्यान देता रहे और उसके अनुसार कार्य करता रहे तो फिर नारी को अप्रसन्न होने का अवसर ही न मिलेगा। यदि वह अप्रसन्न हो भी गई तो पुरुष उसकी रुचि का पारखी होने के कारण उसे मना लेगा। नारी बड़ी शंकालु होती है। पुरुष को उसकी इस प्रकृति से बचने का प्रयत्न करना चाहिये। पुरुष के प्रत्येक व्यवहार में इस बात की घोषणा होनी चाहिये, कि वह उसे छोड़ कर और किसी दूसरे से प्रेम नहीं करता। यदि कभी पुरुष को किसी दूसरी स्त्री के साथ बात करने का अवसर पड़े और यदि वहाँ उसकी पत्नी हो तो बातचीत में उसे भी सम्मिलित कर लेना चाहिये। यदि न हो तो निष्कपट भाव से उसे बता देना चाहिये। पत्नी के रूप, रंग, और गुण की तुलना किसी दूसरी स्त्री के साथ न करना चाहिये। इससे स्त्री के मन में सन्देह जागृत हो जाते हैं। पुरुष को चाहिये कि वह अपनी आय के अनुसार नारी को कुछ रुपये भी दिया करे। प्रत्येक अवस्था में नारी को पुरुष की आय का कुछ न कुछ अवश्य मिलना चाहिये। नारी के उस रुपये और परिवारिक व्यय से कुछ तात्पर्य नहीं। इसे न पाने पर नारी अपने मन में अभाव का अनुभव करती है, और इसी प्रकार के अभाव दाम्पत्य जीवन को काले सर्प की भाँति डसते हैं आशा! इनसे बचना चाहिये, इन्हें अपने वैवाहिक जीवन से दूर रखने का प्रयत्न करना चाहिये। बस।

तुम्हारी—
प्रेममयी भाभी

पति के प्रेम को प्राप्त करने की कला

रामपुर
२५-८-४०

बीबी !

प्रसन्न रहो ।

हाँ, मैं यही चाहती हूँ, कि तुम प्रसन्न रहो ! मैं ही नहीं चाहती मेरे प्राण और हृदय भी। किन्तु क्या तुम जानती हो आशा, कि तुम कैसे प्रसन्न रह सकती हो, और हो सकता है, कैसे तुम्हारे जीवन का विकास ! अभी-अभी तुमने नवयुवती के रूप में वैवाहिक जीवन के आँगन में पैर रक्खा है। संभव है, यह प्रश्न तुम्हारे लिये कठिन हो, दुरूह हो, किन्तु मैं इस पर भली भाँति विचार कर चुकी हूँ, इसे सोच चुकी हूँ और इसके अन्तिम परिणाम तक पहुँच चुकी हूँ। मैं प्रतीक्षा न करूँगी आशा कि तुम मुझे उत्तर दो ! मैं स्वयं ही अपने प्रश्न का उत्तर दे रही हूँ ! सुनो आशा, सुनो, नारी की प्रसन्नता का आधार उसके पुरुष का प्रेम है। विवाहित नारी को किसी न किसी प्रकार अपने पुरुष का प्रेम प्राप्त ही करना चाहिये। यदि वह चाहती है, कि उसका जीवन सुखी रहे, यदि वह चाहती है कि उसके स्त्रीत्व का विकास हो तो उसे पुरुष के द्वार पर प्रेम की याचना करनी ही पड़ेगी, और उस पर स्थिर करना होगा अपना प्रभुत्व। इस प्रकार स्थिर करना होगा, कि वहाँ, उस राज्य में, किसी दूसरे के पैर ही न जम सकें ! उसे विजयिनी की भाँति पुरुष के प्रेम-साम्राज्य में विचरण करना

चाहिये। किन्तु इस विजय में अहंभाव न होना चाहिये नम्रता होनी चाहिये। चंचलता न होनी चाहिये, स्थिरता होनी चाहिये! नारी-जीवन की यह बहुत बड़ी संपत्ति है। नारी इसे खोकर जगत में कुछ भी नहीं कर सकती! यही उसके जीवन का आधार है, यही उसके सुखों का स्रोत है, और यही है वह वज्र शिला, जिससे टक्कर लेकर नारी-जीवन के संपूर्ण अभाव चूर-चूर हो जाते हैं।

पुरुष के प्रेम को प्राप्त करना और उसे प्राप्त करके स्थायी बनाना, एक बहुत बड़ी कला है आशा! नारी को इस कला में दक्ष होना चाहिये, निष्णात होना चाहिये। जो नारी इस कला में जितनी ही दक्ष होगी, उसका पुरुष उतना ही उसके हृदय के सन्निकट होगा। और यदि पुरुष हृदय के सन्निकट हुआ तो फिर नारी को और क्या चाहिये? नारी की प्रकृति स्वयं भी इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहती! नारी की प्रकृति का प्रकृत स्वर है-पुरुष और उसका प्रेम। नारी को स्वयं ही अपनी वास्तविकता का अध्ययन करना चाहिये। नारी स्वयं ही देखेगी, कि उसकी वास्तविकता के केन्द्र में पुरुष और उसके प्रेम की अभिलाषा किस भाँति समाई हुई है। जर्मन की एक विचारशील महिला ने इस सम्बन्ध में बड़े सुन्दर विचार प्रगट किये हैं। उसने लिखा है:—नारी जीवन के लिये यह बहुत ही आवश्यक है, कि वह अपने पुरुष के हार्दिक प्रेम को प्राप्त करे, उसे स्थायी बनाये रहे, और आवश्यकता पड़ने पर उसके लिये अपने जीवन की अनमोल वस्तुओं का भी परित्याग कर दे। यदि नारी पूर्ण रूप से अपने पुरुष के प्रेम को प्राप्त कर लेती है तो वह संपूर्ण हो जाती है। उसे फिर संसार में कुछ पाना शेष नहीं रह जाता।" आगे चलकर

उसी महिला ने एक स्थान पर और लिखा है—मैं अनेक ऐसी विवाहिता स्त्रियों को जानती हूँ, जो पुरुष के प्रेम के अभाव में भूली हुई की भाँति भटक रही हैं। उनके हृदय में क्षोभ है। असन्तोष है। वे भीतर ही भीतर जल रही हैं, दग्ध हो रही हैं।" हमारे भारतीय शास्त्रकारों ने तो विशेष रूप से नारी को यह सम्मति दी है, कि वह अपने पुरुष के प्रेम को प्राप्त करे। प्रेम ही न प्राप्त करे, बल्कि उसे अपने जीवन का देवता समझे अनेक भारतीय देवियों ने इस ढंग का बहुत ही सुन्दर और आदर्श उदाहरण जगत के सम्मुख उपस्थित भी किया है। उन्होंने दुखी, विपन्न, अपंग और अपाहिज पति की भी सच्चे मन से सेवा की है। सेवा ही नहीं की है, बल्कि उसके लिये अपने जीवन तक को उत्सर्ग कर दिया है।

किन्तु आज के भारतीय समाज में उस प्रकार की देवियाँ कहाँ? वे देवियाँ तो आज के समाज को बिलकुल स्वप्न ही की भाँति ज्ञात होती हैं। वे देवियाँ जहाँ प्रेम-साम्राज्य की रानी बन कर पति के मन पर भी शासन करती थीं, वहाँ आज की नारी भिखारिणी के सदृश बिलकुल अभाव-पूर्ण दिखाई देती है। उसके जीवन का सुख-संसार उजड़ा सा ज्ञात होता है। वह सुख के अनुसन्धान में दर दर भटकती है। ईर्षा करती है, असन्तोष से खेलती है, और कभी कभी अनैतिकता की ओर भी अग्रसर हो जाती है। समाज के वक्षःस्थल पर दृष्टि तो डालो आशा! इस प्रकार की अनेक स्त्री तुम्हें आंसू की माला पिरोती हुई दिखाई पड़ेगी, किन्तु क्या तुम जानती हो आशा, कि वे क्यों इस प्रकार आँसू बहा रही हैं? वे क्यों धनी होकर निर्धन की भाँति चीत्कार कर रही हैं? केवल इसलिये, कि उन्होंने अपनी अज्ञानता से पति के प्रेम की उपेक्षा की है। नारी

को जो प्राप्त करना चाहिये था, उन्होंने उसकी अवहेलना की है। यह उन्हीं की भूल है, भयंकर भूल है। समाज की अगणित नारियों के लिये उनकी भूल पथ-प्रदर्शन का काम करेगी। उनको सामने रखकर नारी को सजग होना चाहिये, सावधान हो जाना चाहिये। नारी जीवन के विकास का यह एक महान् और उपयोगी साधन है। नारी इससे वंचित रह कर अपनी वास्तविकता को स्थिर नहीं रख सकती। उसे अपने और वैवाहिक जीवन के कल्याण के लिये पुरुष का प्रेम प्राप्त करना ही चाहिये, उसके हृदय–साम्राज्य पर प्रेम की शक्ति से शासन स्थापित करना ही चाहिये।

यह अधिक दुरूह होते हुये भी नारी के लिये अधिक सरल है। नारी किंचित प्रयत्न करने पर किसी भी पुरुष के हृदय में अपने प्रेम का साम्राज्य स्थापित कर सकती है। नारी के जीवन में प्रकृत रूप से इस कला का समावेश है। यदि नारी चाहे तो उसकी इस कला का व्यापक रूप में विकास हो सकता है। प्रत्येक नारी अपने हृदय में इस कला की अभिव्यक्ति को पा सकती है। अपनी इस कला को जाग्रत करने के लिये नारी का प्रयत्न सतत जारी रहना चाहिये। कुरूप से कुरूप नारी भी, इस कला को जगाकर, पुरुष के प्रेम-साम्राज्य में विजयिनी की भाँति विचरण कर सकती है। अनेक स्थलों पर इस प्रकार के जीवित और जाग्रत प्रमाण मिलते भी हैं। प्रायः यह देखा जाता है, कि कुरूपवती और अज्ञान स्त्री पर भी लोग जान देते फिरते हैं। क्यों? इसलिये कि उसने अपनी प्रकृत कला से पुरुष हृदय को विमुग्ध कर लिया है। उसमें सौन्दर्य और ज्ञान का पूर्णतः अभाव है, किन्तु उसने उस अभाव के मुख को अपनी कला से बन्द कर दिया है। वह अपने पुरुष पर मरती

है। उसकी इच्छाओं पर नाचती है। पुरुष जब घर में थका हुआ आता है, तब वह हँसकर, हृदय खोलकर, अमृत भरे शब्दों में उसका स्वागत करती है। गार्हस्थ जीवन के अभाव को पति के सम्मुख कभी अनुचित और असामयिक ढंग से व्यक्त नहीं करती। गार्हस्थ जीवन को सँवारती है, उसका निर्माण करती है, और ले जाती है उसको विकास की ओर। यही है, उस कुरूपवती नारी की कला। इसी कला की शक्ति से वह सुन्दर से भी अधिक सुन्दर ज्ञात होती है, और इसी की शक्ति से वह करती है, अपने पति के मन पर शासन। वह धन्य है! सुशिक्षिता सुन्दरी नारी का उसके सम्मुख कुछ भी मूल्य नहीं। कुरूप होने पर भी वह अपनी नारी कला की शक्ति से सबसे आगे बढ़ी है, सबसे महान् है।

नारी जीवन की इस कला की अभिव्यक्ति और विकास के लिये यह बहुत ही आवश्यक है, कि नारी अपने पुरुष की मनोवृत्तियों का अध्ययन करे। वह जितना ही उसकी मनोवृत्तियों का अध्ययन करेगी, उतना ही वह अपनी इस कला को सफल बना सकेगी। पुरुष की मनोवृत्तियों का अध्ययन करके वह यह जान सकेगी, कि उसके पति को सबसे अधिक क्या प्रिय है? उससे वह क्या चाहता है? प्रत्येक पुरुष की मनोवृत्तियाँ विभिन्न प्रकार की हुआ करती हैं, किन्तु कुछ ऐसी बातें हैं जिनमें अधिकांशतः सभ्यता पाई जाती है। नारी का सौन्दर्य और आकर्षण प्रत्येक पुरुष को आकर्षित करता है। किन्तु सौन्दर्य-शृंगार की वस्तुओं में पर्याप्त रुचि-विभिन्नता होती है। कोई पुरुष नारी को किसी वेश में पसन्द करता है, तो कोई किसी वेश में। किसी को कोई साड़ी पसन्द आती है, तो किसी को कोई। सौन्दर्य-शृंगार की वस्तुओं में रुचि-विभिन्नता

होने पर भी प्रत्येक पुरुष सुन्दर मुखड़ेवाली नारी की ओर अधिक आकर्षित होता है। नारी को सर्वप्रथम अपनी आकृति पर आकर्षण लाने का प्रयत्न करना चाहिये। यदि वह सुन्दरी है तो किंचित् प्रयास से अधिक सफलता प्राप्त कर सकती है। यदि उसमें सौन्दर्य नहीं है, तो उसे शारीरिक स्वच्छता और स्वास्थ्य के गठन पर ध्यान देना चाहिये। उसे प्रारम्भ में इसमें कठिनाई अवश्य ज्ञात होगी। किन्तु कुछ दिनों के सतत प्रयास के पश्चात् उसकी आकृति पर स्वाभाविक सौन्दर्य नाचने लगेगा यह आवश्यक नहीं, कि नारी सौन्दर्य के लिये पाउडर, साबुन, इत्यादि कृत्रिम वस्तुओं का अधिक उपयोग करे। इसमें सन्देह नहीं, कि इन वस्तुओं के प्रयोग से सौन्दर्य निखर उठता है, किन्तु इसमें भी सन्देह नहीं, कि इन वस्तुओं से स्थायी सौन्दर्य की सृष्टि नहीं होती। स्थायी सौन्दर्य के लिये नारी को शारीरिक स्वच्छता और अपने स्वास्थ्य पर ही ध्यान देना चाहिये। नारी अपने अंगों के गठन पर जितना ही ध्यान देगी, उतना ही उसकी आकृति पर सौन्दर्य प्रतिबिम्बित होगा। यहाँ हम इस विषय को आगे न बढ़ाकर केवल इतना ही कहना चाहती हैं, कि पति के प्रेम को प्राप्त करने के लिये नारी में सौन्दर्य का होना बहुत आवश्यक है। सौन्दर्य नारी जीवन की कला के विकास का मूल्यवान साधन है। नारी इसकी शक्ति से पति के हृदय-साम्राज्य पर पूर्णतः अपना अधिकार स्थापित कर सकती है।

सौन्दर्य के पश्चात् हृदय की सरलता और विनय का स्थान है। शरीर की ही भाँति नारी का हृदय भी अधिक सुन्दर होना चाहिये। सरलता और विनय के भावों से ही हार्दिक सौन्दर्य का विकास होता है। नारी के हृदय का यह सौन्दर्य

शारीरिक सौन्दर्य से भी अधिक महत्वपूर्ण है। इसमें सन्देह नहीं, कि शारीरिक सौन्दर्य का प्रभाव बहुत शीघ्र पड़ता है। किन्तु वह क्षण स्थायी होता है। जो स्त्री शारीरिक सौन्दर्य की शक्ति से पुरुष को अपने वश में करती है, कुछ ही दिनों के पश्चात् उसे पश्चात्ताप भी करना पड़ता है। शारीरिक सौन्दर्य तो सदा एक समान रहता नहीं। ज्यों-ज्यों शरोर विनाश की ओर झुकता है, त्यों-त्यों सौन्दर्य की चमक भी कम होती जाती है, और उसके साथ ही साथ पुरुष भी उसकी ओर से खिंचता जाता है। किन्तु हार्दिक सौन्दर्य जब किसी पुरुष पर अपना अधिकार स्थापित कर लेता है, तब वह आजीवन एक समान स्थिर बना रहता है। शारीरिक सौन्दर्य की अपेक्षा हार्दिक सौन्दर्य में पुरुष को विमुग्ध करने के लिये अधिक स्थिर गुण होते हैं। इस सम्बन्ध में एक बहुत बड़े विद्वान का कथन है—स्त्रियों में पुरुषों को वशीभूत करनेवाला दूसरा गुण हृदय की सरलता और विनय भाव है। पुरुष कपटी और झूठे पुरुष से उतनी घृणा नहीं करते, जितनी कपटी और झूठी स्त्री से करते हैं। वे ऐसो स्त्री को अधिक घृणा की दृष्टि से देखते हैं, जो वास्तव में होती कुछ है, और अपने को प्रगट कुछ करती है। नारी की नम्रता और उसका सेवाभाव पुरुष के हृदय को जितना द्रवित करता है, उतना उसके अन्यान्य गुण नहीं। जो नारी पति से अपनी कोई बात छिपाकर नहीं रखती, और सरलता के साथ अपनी गुप्त से गुप्त बात उस पर प्रगट कर देती है, उसे वह अपने हृदय में छिपाकर रखता है।" वास्तव में हार्दिक सौन्दर्य का ऐसा ही व्यापक प्रभाव है। नारी हार्दिक सौन्दर्य से पति के प्रेम को प्राप्त करने के साथ ही साथ मानवता का भी विकास कर सकती है। हार्दिक सौन्दर्य में विनय,

सेवा, सत्य, नम्रता और सहिष्णुता इत्यादि गुण आ जाते हैं। प्रत्येक नारी को अपने हृदय में इन गुणों का संग्रह करना चाहिये। ये नारी के जीवन को सार्थक करते हैं और उसे सफल बनाते हैं। नारी अपने हृदय में इन गुणों की आभा को बटोर कर अन्धकार के गौहर में प्रवेश कर सकती है, और आपत्तियों के पाषाण-खण्डों से लड़कर उन्हें चूर-चूर बना सकती है।

पुरुष के प्रेम को प्राप्त करने का तीसरा साधन है नारी की प्रसन्नता। हँसती और मुसुकुराती हुई नारी अपने पुरुष को सदैव अपने वश में रख सकती। इसका यह तात्पर्य नहीं, कि नारी सदा हँसती रहे। नारी अपनी इस हँसी और मुसुकुराहट का अर्थ स्वयं भली भाँति समझ सकती है। प्रत्येक पुरुष अपनी नारी से चाहता है, वह उसे अपनी मधुर हँसी और मुसुकुराहट का दान दे। कार्यों से थका हुआ पुरुष, स्वागत के रूप में, अपनी नारी के ओठों पर जब मधुर मुसुकान देखता है, तब उसके थके हुए प्राणों में भी जीवन दौड़ पड़ता है। वह अपने को धन्य समझने लगता है, और कर उठता है, मन ही मन अपनी नारी की प्रशंसा। मधुर हास्य और मुसुकान के साथ पति का स्वागत करनेवाली स्त्री पति प्रेम से कभी निराश नहीं होती। पति के हृदय का द्वार निरन्तर उसके लिये खुला रहता है। हास्य और मुसुकान में लज्जा और संकोच का भाव होना बहुत ही आवश्यक है। लज्जा-हीन हास्य घृणामय होता है, और पुरुष के हृदय में उपेक्षा के भाव जागृत करता है।

पति के प्रेम के लिये नारी को उसके मित्रों और कुटुम्बियों के साथ भी अच्छा व्यवहार करना चाहिये। मित्रों की उतनी चिन्ता नहीं करनी पड़ती, जितनी कुटुम्बियों की। कुटुम्बियों

में पति के भाई, बहन, माता, पिता इत्यादि लोग होते हैं। पत्नी की अपने कुटुम्बियों के मुख से प्रशंसा सुनकर पति के हृदय में उसके प्रति प्रेम के भाव पैदा होते हैं। नारी जिस विनय और सरलता से पति को वश में कर सकती है, उसीसे कुटुम्बियों को भी। पति और उसके कुटुम्बियों को अपने वश में करने के लिये नारी में एक और भी बहुत बड़े गुण का होना अत्यन्त आवश्यक है। वह है, गार्हस्थ-ज्ञान। नारी जीवन का गार्हस्थ कला से सबसे अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध है। शारीरिक सौन्दर्य के अभाव में भी नारी इस ज्ञान के कारण अपने पति और उसके कुटुम्बियों के हृदय में बहुत अच्छा स्थान प्राप्त कर सकती है। यह वह गुण है, जो नारी जीवन को बहुत ऊँचा उठा देता है। गार्हस्थ-ज्ञान से परिपूर्ण नारी पग पग पर अपने पति का ध्यान रखती है। वह अपने पति की इच्छाओं ही के अनुसार गृह की वस्तुओं को रखती, सँवारती और सजाती है। घर स्वर्ग के सदृश दिखाई देता है। उससे इतना प्रेम-भाव आ जाता है, कि वह घर के सभी सदस्यों के साथ अपना सा व्यवहार करती है। घर के सभी सदस्य उसे प्यार करते हैं, हृदय से, प्राणों से। पति इस प्रेम को देखकर फूला नहीं समाता और वह उस पर और भी अधिक विमुग्ध होकर उसे अपने प्राणों में छिपा लेता है।

नारी में सतीत्व का होना सबसे अधिक आवश्यक है। सती नारी पुरुष के लिये मंगलदायिनी होती है। वह पुरुष के मन पर शासन नहीं करती, उसका अनुगमन करती है। उसमें इतनी नम्रता होती है, इतनी सहनशीलता होती है, और होता है इतना माधुर्य, कि पुरुष उससे विलग होना चाहता ही नहीं। वह अपने गुणों से पुरुष के हृदय में भी ज्ञान की सृष्टि करती

है। पुरुष को उसके गुणों की प्रेरणा से शक्ति मिलती है, साहस मिलता है। सती नारी पर पुरुष प्राण देता है, उस पर अभिमान प्रगट करता है। कदाचित् ही कोई ऐसा पुरुष हो सकता है, जिसे सती नारी ने अपने वश में न किया हो। पुरुष को अपने वश में करने का यह सबसे बड़ा साधन है, सबसे महान्। यह सच है आशा, कि आज के समाज में ऐसी नारियों का अभाव है, किन्तु उसके साथ ही यह भी सच है, कि आज की नारी को ऐसा ही बनने का प्रयत्न करना चाहिये। क्योंकि उसका नारी जीवन तभी सार्थक होगा, और तभी वह विकसित होकर मातृत्व पद की ओर अग्रसर भी हो सकेगी। बस! फिर और कभी—

तुम्हारी—
स्नेहमयी भाभी

पत्नी और पति के कुटुम्बी

रामपुर
१-६-४०

मेरी आशा !

सुखी रहो ।

अभी तक तुम माँ-बाप के घर थीं आशा, और थीं अपनी भाभी के पास । स्वतंत्रता थी, चाहे जिस प्रकार रहती थी, चाहे जिस प्रकार जीवन-व्यतीत करती थी । भूल होने पर माँ बाप भाई और भाभी का क्षमा-द्वार तुम्हारे लिये सदैव खुला रहता था । तुम्हें स्मरण होगा आशा कि किस प्रकार भूल करती थी और मैं तुम्हें किस प्रकार अपनी गोद में छिपाकर धीरे-धीरे समझाती थी । पर वहाँ, उस संसार में, जिसे ससुराल कहते हैं, और जिसमें तुमने उल्लसित भावनाओं के साथ प्रवेश किया है, तुम्हें उतनी स्वतंत्रता न मिलेगी । यद्यपि मेरी गोद की भाँति वहाँ भी तुम्हारे लिये तुम्हारी सास की गोद विद्यमान है, किन्तु उसमें तुम्हें मर्यादा का पालन करना पड़ेगा, एक सीमा के भीतर रहना पड़ेगा । माँ-बाप और भाभी का प्रेम वहाँ भी तुम्हारे लिये छलक रहा है । यहाँ बाप थे, भाभी थी, भाई थे, और वहाँ हैं, तुम्हारे सास-ससुर, पति, देवर, जेठ और ननँदे इत्यादि । तुम इनमें से प्रत्येक के प्रेम की पात्रिणी हो सकती हो । किन्तु इसके लिये तुम्हें सावधान रहना पड़ेगा । तुम किसी के प्रेम को भी स्वाधीनता के साथ प्राप्त नहीं कर सकती । प्रेम और स्नेह का दान लेते समय भी

तुम्हें मर्यादा और सीमा का अधिक ध्यान रखना पड़ेगा। इस संसार में मर्यादा और सीमा का बहुत बड़ा महत्त्व है। प्रत्येक प्राणी यही चाहता है, कि अभी अभी जिस युवती ने बहू के रूप में इस घर में प्रवेश किया है, वह मर्यादा और सीमा के भीतर रहे। उससे जिसे जो चाहता है, उसे वह भलीभाँति दे। सबके साथ शिष्ट और सभ्य व्यवहार करे। इसके बदले में सबके हृदय में छिपकर रहे और समाज में परिवार के यश की पताका को ऊँची करे, उसके मान गौरव को बढ़ाये।

प्रत्येक युवती के जीवन में परीक्षा का यह कठिन समय उपस्थित होता है। युवती जब बहू के रूप में ससुराल के आँगन में पैर रखती है, तब वास्तव में ही वह परीक्षा ही की आग में उतरती है, और यह परीक्षा उसकी उस समय तक होती रहती है, जब तक कि वह स्वयं किसी परिणाम तक पहुँच नहीं जाती। युवती के लिये यह परीक्षा कुछ कठिन अवश्य है, किन्तु इसी के ऊपर उसके समस्त जीवन का सुख प्रायः निर्भर रहता है। यदि युवती इस परीक्षा में पास न हो सकी तो उसका सारा जीवन आँसू ही बहाते व्यतीत होता है। वह पारिवारिक प्रेम से दूर होने के साथ पति के प्रेम से भी वंचित हो जाती है। उसका हृदय निरन्तर कंगाल और भिखारी की भाँति अभाव से छटपटाया करता है। किन्तु क्या हो सकता है? अपनी अज्ञानता के कारण वह जब फिसल पड़ी है, तब उसके कठोर परिणामों को तो उसे भोगना ही पड़ेगा। युवती यदि इससे बचना चाहती है, यदि वह चाहती है, कि उसके जीवन का विकास हो, तो उसे इस परीक्षा में उत्तीर्ण होकर पारिवारिक प्रेम प्राप्त ही करना पड़ेगा। माँ-बाप निरन्तर यही चाहते हैं, कि अपनी जिस आँखों की पुतली को निकाल कर

वह दूसरों को सौंप रहे हैं, वह वहाँ भी जाकर इसी प्रकार आँखों की पुतली बन कर रहे। माँ बाप इसके लिये चेष्टा भी करते हैं। वे अपनी आँखों को उस पुतली में, जो दूसरों की आँखों में लगने जा रही है, ऐसे साधन और गुण उत्पन्न करते हैं, जिससे वह जाकर भली भाँति चमक सके और अपने माँ बाप की वास्तविक मान-मर्यादा की वृद्धि कर सके। प्रत्येक युवती कन्या की विदाई के साथ उसके माँ-बाप और सम्बन्धियों की यही हार्दिक कामना जुटी रहती है। दूसरी ओर ससुराल के प्राणी भी यही चाहते हैं। वे भी इसी की कामना करते हैं, कि जो युवती बहू के रूप में हमारे घर में प्रवेश कर रही है, वह हमारे घर के सुखों का साधन बने। लक्ष्मी की भाँति उसे प्रकाश दे और बनाये समाज में उसे गौरववान्। ससुर के घर में प्रवेश करनेवाली युवती को इन दोनों ही मनोवृत्तियों का भली भाँति अध्ययन कर लेना चाहिये। दोनों ही ओर के प्राणी जब यह चाहते हैं, कि वह आजीवन प्रसन्न रहे, तब युवती को भी अपनी ओर से प्रयत्न करना ही चाहिये। करना ही नहीं चाहिये, बल्कि उसे करना ही पड़ेगा। निज के प्रयत्न के अभाव में युवती कदापि आजीवन प्रसन्न नहीं रह सकती। आजीवन के सुख और प्रसन्नता के लिये उसे इस परीक्षा में पास होना पड़ेगा। यह तभी हो सकता है, जब युवती ससुराल जाने के पूर्व गंभीरता के साथ इस बात पर विचार कर ले, कि ससुराल में जाकर उसे क्या करना होगा? किसके साथ कैसा रहना होगा, और किस प्रकार का व्यवहार करना होगा? इसका ठीक-ठीक चित्र अपने हृदय में ले करके ही युवती को ससुराल जाना चाहिये। इस चित्र के निर्माण में उसे पुस्तकों और माँ तथा भाभी की सहायता लेनी चाहिये। यह एक ऐसा ज्ञान है,

कि इससे संपूर्ण होने पर और इसे व्यवहार में लाने पर युवती समस्त परिवार के सभी सदस्यों के ऊपर अपना अधिकार स्थापित कर सकती है। वह स्वयं भी प्रसन्न रह सकती है, और दूसरों को भी प्रसन्नता का दान दे सकती है।

दाम्पत्य जीवन की सफलता के लिये युवती को पारिवारिक प्रेम प्राप्त करना अधिक आवश्यक है। यदि युवती सावधानी और सतर्कता के साथ परिवार के सदस्यों के साथ अनुकूल व्यवहार करती रही तो उसे इसमें रंचमात्र भी कठिनाई न पड़ेगी। परिवार के सदस्यों में सबसे अधिक घनिष्ट सम्बन्ध बहू का उसकी सास के साथ होता है। पुत्र की माता होने के कारण सास अपनी बहू पर अभिमान प्रगट करती हैं और साथ ही अधिकार भी स्थापित करना चाहती है। घर में प्रत्येक प्राणी से उसकी आकांक्षा होती है, और बहू से सबसे अधिक। माता होने के कारण वह सबसे अधिक पूज्या भी है। घर की एक-एक वस्तु पर उसका अधिकार होता है। उसकी ही आज्ञा घर में प्रमुख मानी जाती है। घर के प्रत्येक काम में उसकी इच्छा का प्रत्येक सूत्र दौड़ता रहता है, वह चाहती है, अभी-अभी घर में जिस युवती ने प्रवेश किया है, वह भी उसकी अधिकार-शक्ति को स्वीकार करे। बहू को इसमें किसी प्रकार की आपत्ति न होनी चाहिये। हिन्दू-शास्त्रकारों की दृष्टि से सास बहू के लिये माता के समान आदरणीय होती है। हिन्दू-शास्त्रकारों की बात को जाने दो! केवल व्यावहारिक शास्त्र ही को ले लो। सास पति की माँ है; इसलिये यदि उसे पत्नी भी अपनी माँ बना लेती है, तो कोई अत्युक्ति और आश्चर्य नहीं। यदि पत्नी ऐसा समझकर अपनी सास के साथ माता ही का सा व्यवहार करती है, तो पति के मन को अधिक प्रसन्नता

होती है। परिवार के विकास के लिये नहीं तो, दाम्पत्य जीवन के विकास के लिये ही युवती को सास का प्रेम प्राप्त करना चाहिये। सास के प्रेम को प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक है, कि युवती सास की आकांक्षाओं और उसकी अभिलाषाओं का अध्ययन करे। सास उससे क्या चाहती है, उसे घर में किस प्रकार रखना चाहती है, युवती को इसे ध्यान में रख करके ही आगे चलना चाहिये। अधिकांशतः यही देखा जाता है, कि सास बहू के ऊपर अपना शासन चाहती है। वह चाहती है, बहू उसकी प्रत्येक बात माने और उसकी इच्छाओं के अनुसार कार्य करे। यदि बहू को किसी से मिलना हो तो वह सास से पूछ करके मिले। यदि उसे किसी से बात करनी हो तो वह सास की आज्ञा लेकर उससे बात करे। खाने-पीने, पहनने और पति से मिलने में भी सास अपनी इच्छाओं ही का प्रभुत्व चाहती है। गृह प्रबन्ध में तो वह विशेष रूप से अपने प्रभुत्व की अभिलाषिणी होती है। वह यह भी चाहती है, कि बहू प्रतिदिन उसकी सेवा करे, उसके कपड़ों को फीचे, और पति की उपेक्षा करके भी उसके पास बैठी रहे। इसमें सन्देह नहीं, कि नवयुवती के लिये सास का यह शासन बहुत ही कठोर है, किन्तु दाम्पत्य जीवन के कल्याण के लिये युवती को तपस्विनी की भाँति इसे बर्दाश्त करना ही चाहिये। कुछ बातें तो ऐसी हैं, जिनका परिपालन युवती बड़े प्रेम से कर सकती है। उससे जहाँ तक हो सके, सास का सम्मान करे। यदि गृह का प्रबन्ध सास के हाथ में है, तो उसे उसी प्रकार चलने देना चाहिये। युवती को उसमें हस्तक्षेप करने और अपना अधिकार प्रगट करने की आवश्यकता नहीं। उसे यह समझ कर, कि यह सब हमारा ही है, सन्तोष करना चाहिये। यदि

पति कमाने वाला है और अपनी सारी मासिक आय लाकर अपनी माँ को देता है, तो पत्नी के मन में ईर्षा के भाव जागृत न होना चाहिये। गृह के प्रत्येक कार्य में सास की इच्छाओं को ही प्रधानता देनी चाहिये। यदि सास बुरा मानती है, तो सास के सन्मुख पति से बातचीत न करे। यथाशक्ति उसकी सेवा करे, उसे प्रसन्न रक्खे। माता के समान उसका सन्मान करे और उसके हार्दिक प्रेम के सन्निकट पहुँचने का प्रयत्न करे। युवती के लिये सास का प्रेम अधिक महत्त्वपूर्ण और मंगल-जनक है। सास के प्रेम को प्राप्त करके युवती घर के सभी सदस्यों के प्रेम की पात्रिणी हो सकती है।

हम इसे स्वीकार करती हैं, कि आज के भारतीय समाज में सास का शासन बहुत ही कठोर और बहुत ही अधिकार-पूर्ण होता है। हमने ऐसी अनेक सास को देखा भी है जो अधिकार के मद में अन्धी होकर अधिकार-हीन बहू के ऊपर तरह तरह के अत्याचार करती हैं। सास और बहू का पारस्परिक सम्बन्ध माँ और पुत्री का सा होना चाहिये। सास के प्रति यदि बहू का कर्त्तव्य है, तो बहू के प्रति सास का भी। बहू जब सास को अपनी पूजनीया समझ कर उसके चरणों पर हृदय की भक्ति बिखेरती है, तब सास को उसे अपने हृदय का प्रेम-दान देना ही चाहिये। यदि बहू भूल करे, यदि वह अज्ञानता और अनुभव हीनता से, ऐसे पथ पर पैर रक्खे, जिससे सास के स्वाभिमान को आघात पहुँचता हो, तो सास का यह कर्त्तव्य है, कि वह उसकी भूल को प्रेम से क्षमा कर दे, उसे समझा दे और प्रमाणों के द्वारा उसके हृदय में ज्ञान की ज्योति उत्पन्न कर दे। यदि सास ऐसा न करके बहू को डाँटती है, फटकारती है, और हृदय में उसके प्रति विरोध का भाव उत्पन्न

कर लेती है, तो वह अपने आदरणीय सिंहासन से नीचे गिर पड़ती है। यह इसलिये, कि बहू अनुभव-हीनता के कारण भूल कर सकती है, और सास अनुभवी होने के कारण उसे समझा सकती है। सास को बहू से अधिक आकांक्षा न करनी चाहिये। आखिर बहू भी तो प्राणी ही है। वह सास की आकांक्षाओं की पूर्ति कहाँ तक कर सकती है! मनुष्य होने के कारण उसमें भी मानवी वृत्तियाँ होती हैं, और होती हैं, मानवी अभिलाषायें। सास की अनुचित और असामयिक ताड़ना से यदि उसकी प्रवृत्तियाँ कुछ विद्रोह कर बैठती हैं तो आश्चर्य की बात ही क्या? हमने सास और बहू के झगड़े पर अधिक गंभीरता के साथ विचार किया है आशा! बहुत कुछ देखने, सुनने और समझने के पश्चात् हम इस परिणाम पर पहुँची हैं, कि इसके मूल में अधिकांशतः सास की मलिन भावना छिपी रहती है। सास अपने अधिकार का दुरुपयोग कर बैठती है। वह अपने मातृत्व पद को शासिका के रूप में बहू के सामने प्रगट करती है। वह बहू के प्रत्येक आचरण पर अपना अधिकार उद्घोषित करती है। पारिवारिक शान्ति चाहे कलह की अग्नि में जलकर सदा के लिये भस्म हो जाय, किन्तु सास अपने शासन का बन्धन रञ्च मात्र भी ढीला करना नहीं चाहती। यह सास का कर्त्तव्य है, कि वह नई बहू को शान्ति, प्रेम और मर्यादा के पथ पर चलने के लिये अग्रसर करें। उसकी बातों में शासन के स्थान पर प्रेम और स्नेह होना चाहिये। मैं नहीं समझती आशा, कि कोई युवती सास के प्रेम और उसके स्नेह को पाने पर भी अपने हृदय में कलह और अशान्ति की भावना उत्पन्न करती होगी।

सास और बहू, दोनों की अपनी-अपनी अज्ञानता से ही पारिवारिक शान्ति विद्रोह के रूप में बदल जाती है। सास जब

अपने मातृत्व पद को छोड़ देती है, और बहू जब अपने हृदय से पुत्री के भाव को निकाल देती है, तब परिवार में एक विचित्र समस्या उठ खड़ी होती है। यह समस्या बड़ी विकट होती है, बड़ी भयानक। बड़े बड़े उन्नत और प्रतिष्ठित परिवार भी इसी समस्या के कारण कलंकित होते हुए देखे जाते हैं। हमारे अन्तःपुर की यह एक बहुत बड़ी समस्या है। यह जब उत्पन्न होती है, तब जीवन को अत्यन्त कठिन बना देती है। लड़ती हैं तो सास बहू, किन्तु कुटुम्ब का सम्पूर्ण सुख और उसकी सारी शान्ति धूल में मिल जाती है। अनेक नवयुवतियाँ इसी कलह के कारण अपना गला घोंट लेती हैं, और अनेक सासें अपनी आत्मिक शान्ति के लिये गंगा जमुना की गोद का आश्रय लेती हैं। दोनों ही प्राणान्त करती हैं, दोनों ही अशान्ति और यंत्रणा की अग्नि में जलती हैं, किन्तु दोनों में कोई सहनशील बनकर मस्तक झुकाने के लिये तैयार नहीं होता। सास और बहू, दोनों ही के लिये यह अधिक लज्जास्पद विषय है। दोनों ही अपने नारी जीवन को कलंकित करती हैं, और दोनों ही रखती हैं, समाज के सामने अपने काले चित्र। दोनों ही अपराधिनी हैं। दोनों ही कलह के कुठार से कुटुम्ब के उस तरु पर आघात करती हैं, जिसकी छाया के नीचे सास का ही पुत्र और पत्नी का ही पुत्र निवास करता है। सास को अपने लिये नहीं तो अपने पुत्र के लिये, पत्नी को अपने लिये नहीं, तो अपने पति के लिये सहनशील और नम्र बनना चाहिये। यदि दोनों में से किसी ने सहनशीलता का अंचल पकड़ा, तो इसमें सन्देह नहीं, कि कलह की अग्नि अपने आप बुझ जायगी। सास और बहू दोनों को ही सहनशील बनकर शान्ति की ओर अग्रसर होना चाहिये, किन्तु बहू यदि इस सम्बन्ध में और भी अधिक आगे बढ़ सके तो विशेष

अच्छा हो। बहू को सबसे अधिक सहनशील होना चाहिये। यदि बहू ने सहनशीलता से काम लिया तो यह अवसर ही न आयेगा, कि घर की शान्ति अशान्ति के रूप में परिणत हो। सास वृद्ध होती है, सम्माननीय होती है। वृद्ध और सम्माननीय जनों की दो-चार कड़ुई बातें सह लेने पर भी बहू की मान-मर्यादा और वास्तविकता में कुछ अन्तर न पड़ेगा। नारी का धर्म है, त्याग और उत्सर्ग। बहू को अपने इस प्रकृत धर्म को सामने रख करके ही सास की बातें सुननी चाहिये। यदि बहू सास के कठोर शासन में तपस्विनी की भाँति अपने जीवन को प्रसन्नता से ढँक कर रखती है, तो कुछ दिनों के पश्चात् उसका जीवन सोने की भाँति निखर उठता है, और कौटुम्बिक सुख अपने आप उसके चरणों पर लोटने लगता है।

घर के अन्यान्य सदस्यों का प्रेम सास के ही प्रेम पर निर्भर रहता है। यदि बहू सास के प्रेम को प्राप्त कर लेती है, तो वह सारे घर के प्रेम की पात्रिणी बन जाती है। किन्तु कहीं कहीं ऐसा होने पर भी बहू को अपनी देवरानियों और जेठानियों के कोप का शिकार होना पड़ता है। कहीं कहीं सास और बहुओं का सम्बन्ध तो बहुत अच्छा होता है, किन्तु बहुएँ स्वयं आपस में कलह का कारण बनती हैं। सास ससुर चाहते हैं, कि घर में शान्ति रहे, लोग फूलें, फलें, किन्तु उनके चाहने पर भी कुछ नहीं होता। उनकी सतत चेष्टा पर भी बहुओं में कलह की अग्नि प्रज्वलित हो उठती है। सास-ससुर के लिये यह स्थिति बड़ी भयानक और कष्टमय होती है। उन्होंने कभी सोचा था, कि लड़कों की बहुएँ जब घर में आयेंगी, तब उनके जीवन को शान्ति मिलेगी, सुख मिलेगा, और मिलेगी, प्रेम-भक्ति, किन्तु वृद्धावस्था में जब वे उन्हीं बहुओं को पारस्परिक

संघर्ष में संलग्न देखते हैं, तब उनकी आत्मा तड़प उठती है। वे कहें तो क्या कहें, पक्ष लें तो किसका लें! सभी तो उनके लिये समान हैं। बेचारे समझा-बुझा करके ही शान्त हो जाते हैं, और कलह की इस भयानक अग्नि में अपने वृद्ध जीवन की शान्ति की बलि दे देते हैं। जिन घरों में इस प्रकार के कलह की सृष्टि होती है वहाँ प्रायः पुरुष ही दोष के सन्निकट पाये जाते हैं। यह सच है, कि स्त्रियाँ ही कलह के बीज बोती हैं, किन्तु यह भी सच है कि यदि पुरुष चाहें तो अँखुयें निकलने ही न पायें। पुरुषों की भूल से ही उन बीजों से अँखुये निकलते हैं, पनपते हैं, और उनके ही प्रोत्साहन से विष वृक्ष के रूप में प्रगट भी हो जाते हैं। तुम जानती हो आशा, कि घर के सभी सदस्य एक समान नहीं होते। किसी के पास अधिक विचार-शक्ति है तो किसी के पास कम। जो लोग अज्ञान होते हैं, वे अपनी पत्नी की बातों में आकर भ्रातृ स्नेह को बहुत शीघ्र भूल जाते हैं, और स्वयं भी घर की बहुओं के झगड़े में भाग लेने लगते हैं। एक ने भाग लेकर सीमा को पार किया नहीं, कि सभी अपनी अपनी पत्नी के अधिकार की ओर आकर्षित हो जाते हैं। फिर क्या? फिर तो घर एक बहुत बड़े संग्राम का क्षेत्र बन जाता है। न जाने कितने प्रतिष्ठित परिवार इस प्रकार की कलह की अग्नि से जलकर भस्म हो गये। भाई-भाई अलग हो गये, घर बँट गया, सारी सम्पत्ति मुकदमे में स्वाहा हो गई। केवल थोड़ी सी भूल के कारण आशा, केवल थोड़ी सी भूल के कारण। यदि बहुएँ बुद्धि से काम लेतीं, और पुरुष विचार से, तो निश्चय ही घर उजड़ने से बच जाता। जब कभी ऐसा अवसर उपस्थित हो तो पुरुषों को चाहिये, कि वे अपनी अपनी पत्नी के प्रति उपेक्षा के भाव प्रगट करें। पत्नी की बातों को

वे उसके पास ही छोड़ दें। कोई इस बात का विचार मन में न लाये, कि कौन किस पर अत्याचार कर रहा है। सभी उन पर कठोर दृष्टि रखते हुये उनसे उदासीन रहें, उस कलह से अपने को अलग किये रहें। निश्चय ही कुछ दिनों के पश्चात् स्त्रियाँ शान्ति के मार्ग पर आ जायँगी। जब उन्हें भली भाँति ज्ञात हो जायगा, कि यह सब व्यर्थ है, और इसका कुछ भी परिणाम न होगा, तो वे स्वयं ही हताश और निराश होकर आपस में एक समझौता कर लेंगी और उसका प्रसन्नता-पूर्वक पालन करेंगी।

अब बहुओं के पारस्परिक झगड़े के मूल कारण पर एक दृष्टि डालो आशा! तुम्हें जहाँ इस प्रकार के झगड़े दिखाई पड़ेंगे, वहाँ यदि तुम प्रत्येक बहू के हृदय में प्रवेश करके देखोगी, तो तुम्हें प्रत्येक के हृदय में एक दूसरे के प्रति ईर्षा की भावना खेलती हुई दिखाई पड़ेगी। बहुओं के अधिकांशतः झगड़ों का आधार-स्तम्भ ईर्षा ही होती है। ईर्षा ही के कारण वे एक दूसरे के प्रेम से वञ्चित हो जाती हैं। अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है, कि इस ईर्षा का जन्म कब और कैसे होता है? तुम्हें यह सुनकर आश्चर्य होगा, आशा, कि नारी प्रकृति से ही ईर्षालु होती है। ईर्षा की जितनी मात्रा नारी में होती है, उतनी पुरुष में नहीं। या यों कहना चाहिये, कि नारी की ईर्षा का विकास जितनी शीघ्रता से होता है, उतनी शीघ्रता के साथ पुरुष की ईर्षा का नहीं। एक घर में एक साथ रहनेवाली पारस्परिक सम्बन्धों से जुटी हुई स्त्रियाँ तुच्छ से तुच्छ बातों पर एक दूसरे के प्रति ईर्षालु बन जाती हैं। एक को गहने बने और दूसरी को नहीं बने, तो शीघ्र ही उसके हृदय में ईर्षा की भावना उत्पन्न हो उठती है। दूसरी को यदि कपड़े बने, और पहली को नहीं

बने तो वह भी ईर्षा के रथ पर चढ़ी हुई दिखाई देती है। इसी प्रकार घर के काम-काज में भी आपस में प्रतिद्वन्द्विता और ईर्षा की प्रधानता रहती है। मैं यह नहीं कहती, कि सभी घरों में आपस में इस प्रकार की प्रतिद्वन्द्विता चलती है। किन्तु मैं यह अवश्य कह सकती हूँ कि इस प्रकार की प्रतिद्वन्द्विता और इस प्रकार का कलह पारस्परिक ईर्षा ही के द्वारा होता है। बहुओं को इस प्रकार की पारस्परिक ईर्षा से बचने का उद्योग करना चाहिये। उनके नारी जीवन के लिये यह अधिक कलंक-स्वरूप है। इसके वशीभूत होकर वे अपनी वैयक्तिक हानि तो करती ही हैं, समस्त कुटुम्ब को भी अशान्ति और दुःख में डाल देती हैं। ईर्षा से बचने के लिये बहुओं में बन्धुता का भाव होना चाहिये। वे एक दूसरी को अपनी बहन समझें, अपनी जीवन की सहेली समझें। वय के अनुसार एक दूसरे की प्ररिष्ठा करें, एक दूसरे को प्रेम करें। उनमें इतनी सहनशीलता और नम्रता होनी चाहिये, कि एक को दूसरे के विरुद्ध कभी सिर ही न उठाना पड़े। पारस्परिक व्यवहार बहुत ही सुन्दर, स्पष्ट और सुलझे हुए हों। घर की बड़ी बहू को सबसे अधिक सम्भ्रान्त और सबसे अधिक विनयशील बनने का उद्योग करना चाहिये। सास के पश्चात् बड़ी बहू का ही घर में अधिक उत्तरायित्व होता है। घर की शान्ति को सुरक्षित रखने में यदि त्याग की आवश्यकता पड़े तो उसे पीछे पैर न रखना चाहिये। उसे अपनी अपने पति, और अपने बच्चों की चिन्ता न करके अपनी देवरानियों और उनके बच्चों की चिन्ता करनी चाहिये। खाने, पीने, पहनने और रहन, सहन में सदा उसे त्याग और समता ही की भावना प्रगट करनी चाहिये। छोटी बहुओं के हृदय पर इसका बहुत ही सुन्दर और कल्याणमय प्रभाव पड़ेगा। बड़ी बहू को

देखकर उनके हृदय में भी त्याग की भावना उत्पन्न होगी, और वे भी पारस्परिक ईर्षा को भूल कर घर की शान्ति में योग देंगी। जहाँ तक कर्त्तव्य का प्रश्न है, छोटी बहुओं को सास और बड़ी बहू का सम्मान करना चाहिये। यदि बड़ी बहू छोटी बहुओं के लिये त्याग करती है तो छोटी बहुओं को चाहिये, कि वे भी बड़ी बहू के लिये त्याग करें। काम काज में उससे आगे रहें, उसके बच्चों को अपना बच्चा समझें, और दैनिक व्यवहार में उसे सम्मान प्रदान करें। इसी प्रकार बड़ी बहू के हृदय में छोटी बहुओं के लिये और छोटी बहुओं के हृदय में बड़ी बहू के लिये प्रेम उत्पन्न हो जायगा। बहुओं को पति के भाइयों और बहनों को भी न भूलना चाहिये। भाइयों का प्रश्न उतना आवश्यक नहीं है, जितना बहनों का है। बहुओं और पति की बहनों का सम्बन्ध भाभी और ननँद का होता है। प्रत्येक भाभी का धर्म है, वह अपनी ननँद का सम्मान करे, उसे आदर दे, और उसके सुखों के लिये अधिक से अधिक त्याग करे। यह इसलिये, कि वह अतिथिस्वरूपिणी होती है, और इसलिये और भी, कि वह उसके पति की बहन है। भाभी का ननँद के प्रति प्यार, ननँद के लिये नहीं, अपने पति के लिए है। मुझे तो तुम्हारे प्रति प्रेम प्रगट करते हुये बड़ा सुख मिलता है। आशा ! यद्यपि मैं तुम्हें अपनी ननँद न समझ कर अपनी पुत्री समझती हूँ, किन्तु भाभी और ननँद के नाते से भी मैं यही चाहती हूँ, कि तुम मेरे हृदय में खेलती रहो, प्राणो में नाचती रहो। मैं कितनी भाग्यवान् ! तुम्हारी ऐसी बीबी जो मुझे प्राप्त हुई है।

तुम्हारी—

भाग्यवान भाभी

नारी जीवन में सौन्दर्य

रामपुर
४-९-४०

मेरी बीबी !

सुखी रहो ।

रमेश बाबू आये थे। प्रसन्न थे, हृदय और प्राणों से। मैंने देखा, उनकी आँखें हँस रही थीं, मन प्रसन्नता के चक्र पर नाच रहा था। ऐसा ज्ञात होता था, मानों किसी ने उनके हृदय और प्राणों में प्रसन्नता का सागर उँडेल दिया है, उन्हें अत्यन्त वैभववान् बना दिया है। वह तुम्हीं हो आशा, तुम्हीं हो। तुम्हीं उसके अंग-अंग को हँसा रही हो, प्रसन्नता का महादान कर रही हो। तुम्हारी ऐसी सुन्दरी युवती को पत्नी के रूप में पाकर वह धन्य हो उठा है, अधिक धन्य। तुम्हारे सौन्दर्य ने उसके हृदय में प्रेम और आकर्षण की एक अद्भुत ज्योति उत्पन्न कर दी है। उसके हृदय का कोना कोना उस ज्योति से जगमगा रहा है, हँस रहा है। तुम भाग्यशालिनी युवती हो आशा ! ईश्वर ने तुम्हें वह सौन्दर्य दिया है, जिसकी शक्ति से तुम पति के हृदय में अपना विस्तृत साम्राज्य स्थापित कर सकती हो। पति के प्रेम के लिये नारी में सौन्दर्य का होना अधिक आवश्यक है। सौन्दर्य के अभाव में नारी पति के हृदय पर अपना स्वामित्व स्थिर नहीं कर सकती। प्रत्येक पुरुष का यह प्रकृत स्वभाव होता है, कि वह नारी के सौन्दर्य की ओर आकर्षित होता है। पुरुष ही क्यों? नारी भी सुन्दर पुरुष को अपने प्राणों

में छिपाकर रखना चाहती है। सौन्दर्य का प्रभाव ही ऐसा व्यापक और आश्चर्य-मय होता है। सौन्दर्य प्रेम को जगाता है, और दो मनुष्यों को बाँधकर एक स्थान में रखता है। उसमें अद्भुत शक्ति होती है, अद्भुत तेज होता है। वह अपनी शक्ति से पाषाण को भी तोड़ सकता है। वज्र को भी छेद सकता है। जहाँ वह होगा, विवश होकर आँखें चली जायँगी, और फिर हटने का नाम न लेंगी। मनुष्य तो मनुष्य ही है, पशु-पक्षी भी सौन्दर्य पर मुग्ध होते हैं, आकर्षित होते हैं, और कर डालते हैं उसपर अपने जीवन का उत्सर्ग।

नारी-सौन्दर्य के सम्बन्ध में विभिन्न देशों में विभिन्न प्रकार के विचार हैं। तुम तो यह जानती ही हो आशा, कि सौन्दर्य दो प्रकार का होता है। आत्मिक और शारीरिक। संसार के अन्यान्य देशों में नारी के शारीरिक सौन्दर्य को ही अधिक महत्व प्रदान किया जाता है, और उसी को सामने रखकर उन देशों में नारी के सौन्दर्य की विभिन्न प्रकार की व्याख्या भी की गई है। इसमें सन्देह नहीं, कि नारी का शारीरिक सौन्दर्य बहुत ही शीघ्र मन को विमुग्ध कर लेता है, किन्तु हमारे देश के शास्त्रकारों ने नारी के आत्मिक सौन्दर्य को ही अधिक महत्व प्रदान किया है। वास्तव में यह बात ठीक भी है। नारी का आत्मिक सौन्दर्य ही उसका वास्तविक सौन्दर्य है! आत्मिक सौन्दर्य से तात्पर्य उन मानवी गुणों से है, जो नारी के हृदय में निवास करते हैं। जैसे—शान्ति, दयालुता, साहस, लज्जा, क्षमा और सहनशीलता इत्यादि। ये गुण ही नारी के वास्तविक सौन्दर्य हैं। नारी इस सौन्दर्य से जगमगाती रहती है, कमल की भाँति हँसती रहती है। आत्मिक सौन्दर्य जिस नारी में होगा, वास्तव में वही सुन्दर कही भी जा सकती है। शारीरिक

सौन्दर्य पर तब तक रंग नहीं चढ़ता, जब तक उसमें आत्मिक सौन्दर्य का अभाव रहता है। आत्मिक सौन्दर्य के अभाव में नारी का शारीरिक सौन्दर्य वैसा ही ज्ञात होता है, जैसे न फूलने फलनेवाला हरा वृक्ष। एक बहुत बड़े भारतीय विद्वान का कथन है:—"मैंने सैकड़ों सहस्रों सुन्दरियों के चित्र देखे हैं। मैं शारीरिक सौन्दर्य के गौरव को कम नहीं समझता। किन्तु आत्मा के आधारभूत गुणों के बिना ऐसा सौन्दर्य कौड़ी मोल का नहीं। आत्मिक गुणों की जीवनी-शक्ति से सम्पन्न स्त्रियाँ आत्मा की दीप्ति से दमक उठती हैं। यह दीप्ति यदि वस्तुतः देखी नहीं जा सकती, तो अनुभव तो अवश्य की जा सकती है। यह स्पर्शागोचर-गुण सहस्रों सामाजिक एवं वैयक्तिक-रीतियों से अपने को प्रत्यक्ष करता है। यह नारी को समतुलित अवस्था या शान्ति–जो भी आपकी इच्छा हो, उसका नाम रखिये,—प्रदान करता है। यह स्त्री को पूरे ज़ोर से घूमते हुये मनोहर लट्टू की तरह सन्तुलित रखता है। यदि स्त्री में यह गुण है, तो मुझे चिन्ता नहीं, कि उसकी कलाई बहुत मोटी है, या उसका मुँह बहुत बड़ा। किन्तु इस गुण के अभाव में स्त्री के अंग-प्रत्यंग चाहे कितने ही सुडौल क्यों न हों, मुझे उसमें कोई दिलचस्पी नहीं हो सकती।"

वास्तव में आत्मिक सौन्दर्य के अभाव में नारी का शारीरिक सौन्दर्य सम्मान और प्रेम का भाजन नहीं बन सकता। कौन कह सकता है, कि बाज़ारों में बैठनेवाली वेश्याओं में शारीरिक-सौन्दर्य कम होता है? इतना ही नहीं, वे प्रतिदिन अपनी विभिन्न प्रकार की श्रृंगार-क्रियाओं से उसे माँजती भी हैं। किन्तु क्या वे आजीवन किसी पुरुष को अपने प्रेम के डोरे में बाँधकर रखने में समर्थ हो सकी हैं? क्या उनका प्रेम स्थिर

होकर समाज में आदर का पात्र बन सका है? नहीं, कदापि नहीं! पुरुष वेश्याओं की सौन्दर्य-अग्नि में गिरते अवश्य हैं, किन्तु जब वे बाहर निकलते हैं, तब झुलसे हुये रहते हैं, और होता है उनके मुख पर पश्चात्ताप। तुम्हें यह जानना चाहिये आशा, कि सौन्दर्य कल्याणमय होता है। ईश्वर और सौन्दर्य में अधिक अन्तर नहीं। ईश्वर ही सौन्दर्य है, सौन्दर्य ही ईश्वर है। सौन्दर्य वही दुखदाई होगा, जिसमें असत्य होगा, कृत्रिमता होगी। वेश्याओं का सौन्दर्य ऐसा ही सौन्दर्य है। ऐसे सौन्दर्य को हम सौन्दर्य के नाम से सम्बोधित नहीं कर सकतीं। वास्तविक सौन्दर्य हीरा है, तो इसकी तुलना कंकड़-पत्थरों से भी नहीं की जा सकती। नारी इस प्रकार के सौन्दर्य से अपने जीवन को सुखी नहीं बना सकती। इस सौन्दर्य का पुरुष के हृदय पर जो प्रभाव पड़ता है, वह क्षणस्थायी होता है। शरीर के साथ साथ जब शारीरिक सौन्दर्य भी प्रभाव हीन हो जाता है, तब पुरुष के प्रेम का उठान भी कम हो जाता है। यहीं तक नहीं, एक दिन पुरुष उसके लिये अपने हृदय का द्वार भी बन्द कर लेता है। अनेक स्त्रियाँ केवल इसी कारण आजीवन रोती और आँसू बहाती हैं। विवाह के कुछ दिनों पश्चात् स्त्री-पुरुष में जो मनोमालिन्य उत्पन्न हो जाता है, उसका बहुत कुछ कारण यही होता है। नारी अपने आत्मिक सौन्दर्य की ओर ध्यान न देकर शारीरिक सौन्दर्य से ही पुरुष को विमुग्ध करने का प्रयत्न करती है। पुरुष जब तक नारी में शारीरिक सौन्दर्य रहता है, उसके प्रति प्रेम प्रगट करता है, इसके पश्चात् उसकी ओर से खिंच जाता है। नारी रोती है, विलाप करती है, आँसू बहाती है, किन्तु पुरुष उसकी ओर देखता ही नहीं। पुरुष देखे भी तो कैसे देखे? उसे देखने के लिये उसके पास कुछ है ही

नहीं। जो कुछ था, वह वासना की अग्नि में जलकर भस्म हो गया। अब तो वह सूनी है, कंगालिनी है, अभावमयी है। यदि उसके पास आत्मिक सौन्दर्य होता तो क्या आज यह उसकी दुर्गति होती ? पुरुष उसे छोड़कर जा नहीं सकता था। वह पुरुष के मन पर विजयिनी की भाँति शासन करती और पुरुष फिर भी उससे प्रसन्न रहता, उसे अपने जीवन की रानी समझता।

आत्मिक सौन्दर्य भारतीय नारी के जीवन का प्रमुख और अमूल्य धन रहा है। जगत के इतिहास के पन्नों में आज जो भारतीय नारी चमक रही है, वह आत्मिक सौन्दर्य ही की शक्ति से। समाज में, राजनीति में, गृह शास्त्र में, दाम्पत्य जीवन में, सर्वत्र उसने आत्मिक-सौन्दर्य की आभा प्रगट की है। ऐसी आभा प्रगट की है, कि आज भी उसे देखकर संसार चकित हो जाता है। सीता और सावित्री में क्या था ? आत्मिक सौन्दर्य ही तो। क्या नहीं किया उन्होंने ? क्या जगत के इतिहास में ऐसी नारी खोजने पर कहीं तुम्हें मिल सकती है ? आज भारत की इस हीना अवस्था में भी कहीं कहीं आत्मिक सौन्दर्य वाली नारी के दर्शन हो जाते हैं आशा ! क्या ही अच्छा होता, कि भारत माता की गोद ऐसी आत्मिक सौन्दर्य वाली नारियों से भर जाती। मैं यह कह सकती हूँ आशा, कि यदि भारतीय देवियों में आत्मिक-सौन्दर्य की ज्योति जागृत हो जाय, तो गार्हस्थ-जीवन का कल्याण होने के साथ ही साथ भारत के सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन का भी अधिक कल्याण हो सकता है। आज भारत केवल इसीलिये विपन्न और अपने मानवी अधिकारों से वंचित हो रहा है, कि उसके घरों में आत्मिक सौन्दर्य वाली देवियाँ नहीं। दासता ने जहाँ भारत की और सभी वस्तुओं को नष्ट किया है, वहाँ उसने भारत की

देवियों के आत्मिक-सौन्दर्य को भी आघात पहुँचाया है। भारत की देवियाँ दासता की शराब पीकर बेहोश हो उठी हैं। वे पाश्चात्य शिक्षा और सभ्यता की हवा में इधर से उधर उड़ रही हैं। यूरोपीय सुन्दरियों का अन्धाधुन्ध अनुकरण उन्हें पागल बनाये हुये है। भारतीय नारी होने पर भी उन्हें भारतीय वेशभूषा से घृणा सी है। आत्मिक-सौन्दर्य का तो वे नाम भी नहीं जानतीं। शारीरिक सौन्दर्य के विकास के लिये वे जो कुछ करती हैं, उसका चित्र, यदि तुम देखना चाहो आशा, तो दिल्ली, कलकत्ता, और लाहौर इत्यादि शहरों में जाकर देख आओ। तुम चाहो तो अपने शहर में भी देख सकती हो और देखा भी हो तो आश्चर्य की बात नहीं। दुबले-पतले शरीर में लम्बे-लम्बे हाथ पैर, मुँह सिकुड़ा हुआ, आँखें धँसी हुई, मुह पर श्वेत पाउडर की भरमार, नाखूनों में पालिश, पैरों में एँड़ीदार जूते! ऐसा ज्ञात होता है, मानो हिरनी छलाँगें मारती चली जा रही हैं। एक नहीं सैकड़ों की टोली में, सहस्रों की संख्या में। किन्तु क्या उनमें सौंदर्य है आशा? क्या कोई उन्हें देखकर यह कह सकता है, कि इनसे किसी घर, समाज, और राष्ट्र का कभी कल्याण हो सकता है? मुझे दुःख तो इस बात पर होता है, आशा, कि भारत की उन शिक्षा-संस्थाओं पर, जहाँ भारत की किरणें पड़ती हैं, इसने अपना रंग जमा लिया है। जो नष्ट हो चुकीं, वे तो नष्ट हो चुकीं, किन्तु वे भी अब नष्ट होने जा रही हैं, जो अब शेष हैं, और जिन पर हम आशा लगाये हुये बैठे हैं। हमारा तात्पर्य उन लड़कियों से है आशा, जो अभी अपने प्रारंभिक जीवन के वय के साथ खेल रही हैं। यदि हम अपना कल्याण चाहते हैं तो हमें सजग हो जाना चाहिये, सावधान बन जाना चाहिये। अपनी उन छोटी-छोटी लड़कियों को,

जिनकी ओर हमारा भारतीय समाज आशा की दृष्टि से देख रहा है, पाश्चात्य शिक्षा से पैदा हुई दूषित लहर से बचाना चाहिये। उनमें भारतीय भाव जाग्रत करने चाहिये, और जाग्रत करनी चाहिये उन वृत्तियों को, जिनसे उनके आत्मिक सौन्दर्य का विकास हो। यदि वे अपने को समझ सकीं और हो सका उनमें आत्मिक-सौन्दर्य का विकास, तो निश्चय ही भारत की यह कालिमा दूर हो जायगी और दिखाई पड़ेगा, प्रभात का सूर्य, सुनहला सूर्य।

भारत में ही नहीं, पाश्चात्य देशों में भी आत्मिक-सौन्दर्य को अधिक महत्त्व प्रदान किया जाता है। यद्यपि अधिकांश लोग शारीरिक सौन्दर्य का ही गुण गान करते हैं, किन्तु वे जो समाज में श्रेष्ठ हैं, विचारवान् हैं, उन्हें आत्मिक-सौन्दर्य के अभाव में नारी के शारीरिक सौन्दर्य में कुछ विशेष आकर्षण नहीं ज्ञात होता। वे भी हमारी तुम्हारी भाँति नारी के आत्मिक-सौन्दर्य को ही अधिक सम्मान प्रदान करते हैं। देखो, एक अमेरिकन विद्वान् की सम्मति। वह सुन्दरियों की चर्चा करते हुये लिखता है—"सुन्दरियों की सौन्दर्य प्रतियोगिता आज हमारे जीवन की अतीव स्पष्ट रूप से असंगत घटना है। इन विक्रेय एवं अशिष्ट रँगरेलियों में से कई एक में, मुख्यतः उन्हें देखकर व्यंग्य-पूर्ण हँसी आने के कारण, मैं निर्णायक बनना स्वीकार करता रहा हूँ। मैंने उसमें पारितोषिक पाने वाली लड़कियाँ देखी हैं। इन्हें अनेक कारणों से चुना जाता है। इन कारणों में सौन्दर्य का कोई स्थान नहीं होता। यह बात प्रत्यक्ष है, कि सचमुच सुन्दर लड़कियाँ ऐसी प्रतियोगिता में भाग लेना पसन्द नहीं करतीं। क्योंकि जो स्त्री सचमुच सुन्दर है, वह इतनी अवर्णनीय रूप से अशिष्ट नहीं हो सकती।" एक दूसरी विद्वान महिला,

जिनका नाम श्रीमती डाक्टर मेरी स्टोप्स है, अपनी एक पुस्तक में लिखती हैं—"सोलह वर्ष की अवस्था में जब किसी के मेरी प्रशंसा करने पर मुझ में अभिमान आ गया, तो मेरे पिता ने मुझसे कहा, वह केवल तुम्हारे यौवन की प्रशंसा कर रहे हैं। सोलह वर्ष की आयु में तुम्हें सौन्दर्य का कोई श्रेय नहीं मिल सकता। परन्तु यदि तुम साठ वर्ष की आयु में सुन्दर होगी तो वह तुम्हारी अपनी आत्मा का कार्य होगा। तब तुम इसके लिये अभिमान कर सकती और प्यारी लग सकती है।" तुम देखोगी आशा, कि उक्त दोनों सम्मतियों में भी नारी के एक दूसरे ही सौन्दर्य का गौरव छिपा हुआ है। भारतवर्ष हो या इङ्गलैण्ड, रूस हो या जर्मनी, प्रत्येक देश की नारी को, यदि वह सुन्दरी बनना चाहती है, तो उसे आत्मिक-सौन्दर्य की ओर ध्यान देना ही पड़ेगा। नारी का वास्तविक सौन्दर्य यही है, यही उसका जीवन है, और यही उसकी नारी-जीवन की सफलता का आधार है। कुरूप से कुरूप नारी आत्मिक-सौन्दर्य के प्रभाव से आदर की पात्रिणी बन सकती है। यदि नारी में दया है, सहनशीलता है, प्रेम है, साहस है, विश्वास की भावना है, तो यह आवश्यक नहीं, कि उसमें शारीरिक सौन्दर्य भी हो। यदि हो तो सोने में सुगन्ध है। यदि नहीं है तो उक्त गुणों की शक्ति से ही वह पुरुष के हृदय में अपना प्रेम-साम्राज्य स्थापित कर सकती है, और हो सकती है दाम्पत्य जीवन की विजयिनी।

किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं है आशा, कि नारी को शारीरिक सौन्दर्य की ओर ध्यान देना ही न चाहिये। आत्मिक-सौन्दर्य के प्रभाव को प्रगट करने के लिये यह बहुत हो आवश्यक है, कि नारी में शारीरिक सौन्दर्य भी हो। नारी शारीरिक सौन्दर्य से ही पुरुष को अपनी ओर आकर्षित करती है। शारी-

रिक सौन्दर्य के अभाव में नारी को पुरुष को अपनी ओर आकर्षित करने में अधिक विलम्ब लगता है। यह सच है, कि आत्मिक-सौन्दर्य का प्रभाव पुरुष के हृदय पर जब पड़ता है, तब वह स्थायी होता है, किन्तु उसके साथ ही यह भी कहना पड़ता है, कि नारी का शारीरिक सौन्दर्य पुरुष के हृदय पर जादू की भाँति अपना प्रभाव डालता है। नारी के शारीरिक सौन्दर्य के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न विचार हैं। किसी देश में नीली आँख और सुनहले बाल वाली नारी सुन्दर समझी जाती है तो किसी देश में काली आँखें और काले बाल वाली। हमारे देश में नारी के शारीरिक सौन्दर्य का सिद्धान्त इस प्रकार है,—'वह लम्बी हो। कन्धे उसके चौड़े हों। मुख-मण्डल भरा हुआ सौष्ठवसम्पन्न हो। काले भौंरे की भाँति लहराते हुये केश कलाप हों। घनी लम्बी बरौनी हो। लम्बी सीधी नाक हो, जो सिरे पर तोते ती चोंच की भाँति थोड़ी-सी मुड़ी हो। आँखें बड़ी और काली-काली हों। दाँत श्वेत, समतल और ओठ चौड़े तथा हलकी लहरों वाले हों।' हमारे देश में रति-शास्त्र की दृष्टि से इसी प्रकार की नारी सुन्दर कही जा सकती है। किन्तु इस प्रकार के चिह्न सभी नारियों में एक साथ ही नहीं पाये जाते, तो भी वे अधिक सुन्दर ज्ञात होती हैं। यदि नारी अधिक कुरूप नहीं है, तो उसमें कुछ न कुछ आकर्षण अवश्य होगा। नारी के शारीरिक सौन्दर्य के सम्बन्ध में एक ही देश के पुरुषों के एक ही प्रकार के विचार नहीं होते। ऊपर नारी के शारीरिक सौन्दर्य के जिस सिद्धान्त का उल्लेख किया गया है, यह बहुत सम्भव है, कि इस प्रकार की नारी किसी पुरुष को न सुन्दर लगे। अनुभव से यह बात प्रगट हुई है, कि एक सुन्दरी नारी के सम्बन्ध में दो पुरुषों ने दो

प्रकार के विचार प्रगट किये हैं। एक ने उसे सुन्दर बताया है, और दूसरे ने यदि उसे असुन्दर नहीं बताया तो कम से कम वह उसे सुन्दरी के सिंहासन पर बैठाने के लिये तैयार नहीं हुआ। नारी के सौन्दर्य के सम्बन्ध में पुरुषों में मतभेद हो सकता है, किन्तु इसमें किसी को भी मतभेद नहीं हो सकता कि पुरुषों के हृदय पर शारीरिक सौन्दर्य का बहुत ही शीघ्र प्रभाव पड़ता है। पति के प्रेम को प्राप्त करने के लिये नारी में शारीरिक सौन्दर्य का होना अधिक आवश्यक है। साथ ही यह भी आवश्यक है, कि नारी अपने सौन्दर्य के विकास का प्रयत्न करती रहे, और उसे नष्ट होने से बचाती रहे।

शारीरिक सौन्दर्य के विकास के लिये स्वास्थ्य पर ध्यान देना बहुत ही आवश्यक है। जो नारी जितना ही अधिक अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देगी, उतना ही अधिक उसके सौन्दर्य का विकास होगा। इतना ही नहीं, अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देकर कुरूप नारी सुन्दरी भी बन सकती है। युरोप इत्यादि देशों की स्त्रियाँ इस सम्बन्ध में बहुत आगे बढ़ी हुई हैं। वे अपने स्वास्थ्य के विकास के लिये निरन्तर प्रयत्न करती रहती हैं। वे जहाँ स्वास्थ्य को हानि पहुँचाने वाले कारणों से बचती हैं, वहाँ उसकी स्थिरता के लिये प्रयास भी करती हैं। वे स्वास्थ्य के विकास के लिये टेनिश खेलती हैं, व्यायाम करती हैं, दौड़ती हैं, पानी में तैरती हैं, और मीलों पैदल चली जाती हैं। हमारे देश की स्त्रियाँ जब युरोपीय औरतों को टेनिश खेलते, व्यायाम करते, और दौड़ते हुये देखती हैं, तब उन्हें अधिक आश्चर्य होता है। वे अपने दिल में सोचने लगती हैं, कि क्या नारी भी कभी ऐसा कर सकती है? यह उन नारियों का दोष नहीं, उस समाज का दोष है, जो गुलाम और अपंगु होने के कारण नारियों को

भी उनकी वास्तविकता से वंचित किये है, और जो उनकी छाती पर सवार होकर उनसे यह कह रहा है, किन्तु तुम्हारा अस्तित्व इसी में है, कि तुम घर को चहार-दीवारियों के अन्दर घुट-घुट कर मरो। हमारे समाज की यह बहुत बड़ी अज्ञानता है आशा! हमारा समाज आज जिसे अपने लिये कडुवा घूँट समझ रहा है, और जिस पर प्रगट कर रही है, भारत की गृह-देवियाँ अपना आश्चर्य, वही कभी हमारे देश के घर घर में विद्यमान था! ज़रा भारत के प्राचीन-कालीन स्वरूप पर दृष्टि तो तुम डालो आशा! तुम देखोगी, कि स्त्रियाँ व्यायाम कर रही हैं, धनुष बाण चला रही हैं, तीर-भालें फेंक रही हैं, घोड़े पर चढ़ी हुई शत्रुओं का डट कर सामना कर रही हैं। उस समय भारतीय समाज कितना समृद्धिशाली था आशा, कितना शक्तिशाली था। किन्तु क्यों, क्या तुम जानती हो? इन्हीं नारियों की शक्ति से, जिन्हें हमने अपने घरों में बन्द कर रक्खा है, और धर रक्खा है, जिनकी छाती पर हमने अपने अमानुषिक विधान का पहाड़। यदि हमारा देश, यदि हमारा समाज, अपना कल्याण चाहता है, तो उसे भारत की देवियों की ओर ध्यान देना ही पड़ेगा, अपने उस चंगुल को, जिसे उसने उसकी छाती पर धर रक्खा है, उसे हटाना ही पड़ेगा। देवियों को पुनः भारतीय नारी बनाना होगा, उन्हें तत्कालीन बन्धनों से मुक्त करके जीवन के क्षेत्र में लाना होगा। उन्हें यह बताना होगा, कि वे क्या थीं; और क्या हो गईं? यह इसलिये, कि वे भूली हुई हैं, और हमने ही उनको पथ-भ्रान्त किया है।

हमारा यह तात्पर्य नहीं है आशा, कि भारतीय नारी भी युरोपीय नारी की भाँति विचार-हीन बनकर दूसरे पुरुषों के साथ टेनिश खेले, मैदानों की सैरबाज़ी करे! हमारा तो तात्पर्य

केवल इतना ही है, कि उसे भी युरोपीय नारी की भाँति अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिये; क्योंकि नारी का शारीरिक सौन्दर्य, जो उसके नारी जीवन के लिये अत्यन्त आवश्यक है, स्वास्थ्य पर ही निर्भर रहता है। अब तुम्हें इस बात पर विचार करना चाहिये आशा, कि स्वास्थ्य को दृष्टि में रख कर नारी को कौन-कौन से ऐसे काम करने चाहिये, जिससे उसके शारीरिक सौन्दर्य का विकास हो सकता है। जब हम स्वास्थ्य पर ध्यान देते हैं, तब हमारा ध्यान व्यायाम, भोजन, शरीर और कपड़ों की सफाई की ओर आकर्षित हो जाता है। नारी हो या पुरुष, स्वास्थ्य के विकास के लिये यह बहुत ही आवश्यक है, कि वह प्रतिदिन नियमपूर्वक व्यायाम करे। व्यायाम शरीर के अंग-प्रत्यंगों को सुडौल बनाता है, और इसके साथ ही सौन्दर्य लाता है। प्रत्येक नारी को प्रतिदिन कुछ न कुछ व्यायाम अवश्य करना चाहिये। व्यायाम अनेक प्रकार के होते हैं। जैसे, पैदल घूमना, गृहस्थी का काम काज करना, पटा लेज़िम घुमाना, दौड़ना, पानी में तैरना इत्यादि। प्रत्येक नारी को अपनी सुविधा के अनुसार इनमें से किसी एक को चुन लेना चाहिये। मैं यह मानती हूँ, कि गार्हस्थ्य जीवन में रहने वाली स्त्रियाँ न तो पटा लेज़िम घुमा सकती हैं, न दौड़ सकती हैं, और न प्रतिदिन तैर ही सकती हैं। किन्तु वे सरलता के साथ प्रतिदिन सन्ध्या और प्रातःकाल घूम सकती हैं, और अपनी गृहस्थी का काम-काज कर सकती हैं। हमारे घरों में पहले स्त्रियाँ ही अपना सब काम काज कर लिया करती थीं। चक्की चलाती थीं, झाड़ू लगाती थीं, बरतन साफ करती थीं, और भोजन अपने हाथ से ही बनाती थीं। आजकल भी गाँवों की रहनेवाली नारियाँ इन कामों को अपने हाथों से ही कर

लेती हैं। तुम्हें यह सुनकर अधिक आश्चर्य होगा आशा, कि इन कामों से नारी का एक बहुत अच्छा व्यायाम हो जाता है। इनमें से कुछ काम तो ऐसे हैं, जो कसरतों की ही भाँति नारी के अंगों को सुडौल बनाते हैं। घरों में कमर को झुकाकर झाड़ू देना एक इसी प्रकार का व्यायाम है। चक्की चलाने से शरीर के समस्त अंगों का एक बहुत अच्छा व्यायाम हो जाता है। इसी प्रकार बरतन मलने और भोजन बनाने में भी व्यायाम की क्रियाओं की पूर्ति होती है। यदि गार्हस्थ्य जीवन में रहने वाली स्त्रियाँ अन्यान्य व्यायाम-क्रियाओं पर ध्यान न देकर केवल अपने घर के काम-काज ही कर लिया करें, तो उनके शारीरिक सौन्दर्य में किसी प्रकार की बाधा न पड़ेगी। सौन्दर्य के विकास के लिये बाहर मैदान में घूमना बहुत ही आवश्यक है। यदि नारी किसी कारणवश बाहरी खुली वायु में न घूम सकती हो तो उसे अपने घर में ही स्वच्छवा यु के लिये प्रबन्ध कर लेना चाहिये।

स्वास्थ्य के विकास के लिये भोजन और शरीर तथा कपड़ों की स्वच्छता पर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है। भोजन तो स्वास्थ्य का प्राण है। तुम जिस प्रकार का भोजन करोगी, वैसा ही तुम्हारा स्वास्थ्य भी बने और बिगड़ेगा। यहाँ हम भोजन के सम्बन्ध में अधिक दूर न जाकर केवल इतना ही कहना चाहती है, कि भोजन समय पर और कम मात्रा में करना चाहिये। भोजन करते समय इस बात का अधिक ध्यान रखना चाहिये, कि हम जो भोजन कर रही हैं, यह भूख की मात्रा से अधिक तो नहीं है, और हमारी पाचन क्रियाओं को उसे पचाने में कोई कठिनाई तो न होगी। भोजन में स्वच्छता को अवश्य ही स्थान देना चाहिये। शुद्ध और बल प्रदान करने वाला भोजन ही शरीर में शुद्ध रक्त का निर्माण करता है, जो कि हमारे शरीर में सौन्दर्य के

रूप में चमकता है। भोजन की ही स्वच्छता की भाँति शरीर और कपड़ों की सफाई पर भी तुम्हें ध्यान देना चाहिये। शरीर को सुन्दर बनाने के लिये शरीर और कपड़ों की सफाई बहुत ही आवश्यक है। इसका स्वास्थ्य पर बहुत ही कल्याणजनक प्रभाव पड़ता है। शरीर रोगों से बचा रहता है, और सौन्दर्य को निखरने में सहायता मिलती है।

भोजन, शरीर और कपड़ों के सम्बन्ध में यहाँ तुम इतने ही पर सन्तोष करो आशा! इन्हें विस्तृत रूप में लेकर फिर कभी मैं तुम्हारे सामने उपस्थित हूँगी। अच्छा, अब सप्रेम बिदा!

तुम्हारी—
स्नेहमयी भाभी

नारी को शृङ्गार की आवश्यकता क्यों पड़ती है ?

रामपुर
६-९-४०

प्रिय आशा !

सुखी रहो !

तुम्हारा पत्र मिला आशा! तुमने जो वस्तुयें माँगी है, उन्हें मैं सस्नेह तुम्हारे पास भेज रही हूँ। तुम्हारी इन वस्तुओं को देखकर हमारे हृदय में एक भावना भी जागृत हो उठी है और मैं यह सोचने लगी हूँ, कि आखिर प्रत्येक नारी को श्टङ्गार करने की क्यों आवश्यकता पड़ती है, और उस आशा को भी, जो एक प्रकार से सौन्दर्य की रानी-सी है। मैं जिस नारी को देखती हूँ, जहाँ देखती हूँ, उसके शरीर पर कुछ न कुछ श्टङ्गार की वस्तुयें अवश्य ही पाती हूँ। अपने देश की ही नारियों में नहीं इस प्रकार श्टङ्गार की भावना अन्यान्य देशों की नारियों में भी है। जर्मनी, फ्रान्स और इंगलैण्ड इत्यादि देशों की नारियाँ भी तरह-तरह से अपने शरीर का श्टङ्गार करती हैं। इतना अवश्य है, कि किसी देश में श्टङ्गार की भावना कम है, और किसीमें अधिक, किन्तु श्टङ्गार की भावना विद्यमान है सभी देशों में। केवल सभ्य देशों की नारियों में ही श्टङ्गार की भावना नहीं है, बल्कि उन नारियों में भी है, जिन्हें हम असभ्य कहती हैं और जो जंगलों में रहती हैं। जिस तरह तुम सब सभ्य कहलाने वाली नारियाँ अपने शरीर का श्टङ्गार करती हो, उसी तरह वे भी तरह तरह के गहनों और प्रसाधन-वस्तुओं से अपने शरीर

को सजाने का यत्न करती हैं। यदि तुम उनकी श्रृङ्गार-वस्तुओं को देखो तो तुम्हें हँसी आये बिना न रहेगी। किन्तु वे अपनी उन्हीं वस्तुओं पर गर्व करती हैं, और उन्हीं से अपने शरीर के अंगों का श्रृङ्गार करती हैं। नारियों में ही नहीं आशा, पुरुषों में भी श्रृङ्गार की भावना विद्यमान है। नारी ही की भांति पुरुष भी श्रृङ्गार करते हैं, और अपने शरीर को सुन्दर बनाने का यत्न करते हैं।

यद्यपि यह सच है, कि सभी देशों की नारियाँ श्रृङ्गार करती हैं, किन्तु सभी देशों की नारियों के श्रृङ्गार में एक समानता नहीं पाई जाती है। प्रत्येक देश की नारी के श्रृङ्गार के अपने भिन्न-भिन्न ढंग हैं। यदि तुम प्रत्येक देश की स्त्रियों की श्रृंगार-वस्तुओं को देखो तो, तुम्हें अत्यन्त कुतूहल और आश्चर्य होगा! तुम्हें प्रत्येक देश की श्रृङ्गार-क्रियाओं की विभिन्नता का कुछ रहस्य समझने के लिये युरोपीय नारी को अपनी आँखों के सामने लाना चाहिये। यह इसलिये, कि अंगरेज नारी को तुम अपने शहर में सरलता के साथ देख सकती हो। अँगरेज़ नारी के साथ ही साथ एक भारतीय नारी को भी अपने सामने खड़ी करके तुम दोनों की श्रृङ्गार-वस्तुओं का मिलान कर सकती हो। दोनों की श्रृङ्गार वस्तुओं में तुम्हें अधिक से अधिक अन्तर दिखाई पड़ेगा। भारतीय नारी की सी साड़ी, बालों की चोटी, मस्तक पर सिन्दूर-बिन्दु, और गहने, तुम्हें युरोपीय नारी के शरीर पर देखने को न मिलेंगे। इसी तरह युरोपीय नारी की श्रृङ्गार-वस्तुयें तुम्हें भारतीय नारी के शरीर पर भी दिखाई न पड़ेंगी। यदि इन दोनों की पंक्ति में और देशों की स्त्रियाँ लाकर खड़ी कर दी जायँ, तो तुम देखोगी, कि प्रत्येक की श्रृङ्गार-वस्तुओं में अधिक

से अधिक विभिन्नता है। प्रत्येक एक दूसरे के श्रृङ्गार को कुतूहल और आश्चर्य की दृष्टि से देखती हुई तुम्हें दिखाई पड़ेगी, किन्तु प्रत्येक को अपना अपना श्रृङ्गार बहुत प्रिय होगा। क्योंकि वे श्रृङ्गार जिस लिये करती हैं, अपने अपने देश में उनका वह मन्तव्य उसी से पूर्ण होता है। अब प्रश्न यह उठता है आशा, कि आखिर नारियों को श्रृङ्गार की आवश्यकता पड़ती किस लिये है? वे क्यों अपने शरीर के अंगों को विभिन्न प्रकार से सजाती हैं? वे क्यों गहने पहनती हैं, आँखों में काजल लगाती हैं, और क्यों चोटी बाँधकर उसे पीठ के ऊपर नचाती रहती हैं?

इस प्रश्न को हल करने के लिये तुम्हें मानव-प्रवृत्ति पर ध्यान देना चाहिये आशा! मानव प्रवृत्ति बड़ी ही सौन्दर्य-प्रिय होती है। स्त्री और पुरुष, दोनों ही की आँखें सौन्दर्य खोजती हैं और दोनों ही सुन्दर बनने के लिये ही अपना श्रृंगार करते हैं। दोनों ही पारस्परिक श्रृंगार की शक्ति से एक दूसरे को आकर्षित करने का प्रयत्न करते हैं। नारी श्रृंगार इसीलिये करती है, कि वह अधिक सुन्दर लगे, और जिसके प्रति उसके हृदय में कामना है, वह उसके सौन्दर्य पर मुग्ध हो। यद्यपि सभी स्त्रियों के श्रृंगार में इस प्रकार की भावना नहीं रहती, किन्तु यह भावना सभी स्त्रियों के श्रृंगार में विद्यमान रहती है, कि हम श्रृंगार के द्वारा अधिक सुन्दर बने। सुन्दर बनने के लिये ही नारी गहने पहनती है, तरह तरह की साड़ियाँ धारण करती है, और करती है अपने बालों का श्रृंगार। वैवाहिक जीवन से विलग रहने वाली नारियों के श्रृङ्गार का उद्देश्य, चाहे जो कुछ भी हो, किन्तु वे नारियाँ जो विवाह करके गार्हस्थ्य जीवन व्यतीत करती हैं, उनका श्रृङ्गार केवल पतियों ही के लिये होता है। अन्यान्य देशों की बात तो मैं नहीं कह सकती,

किन्तु हमारे देश की सुहागिनी स्त्रियाँ शृंगार पर अपना गर्व प्रगट करती हैं। वे उसे अपने सौभाग्य-जीवन की एक महान् और अमूल्य वस्तु समझती हैं। उनकी दृष्टि में उनका वह शृंगार तभी तक है, जब तक कि उनका पति जीवित है। इस लिये यह अधिक प्रत्यक्ष बात है, कि हमारे शास्त्रकारों ने विधवा नारी और कुमारी को अधिक शृङ्गार करने की आज्ञा नहीं प्रदान की है। इसका एक मात्र कारण यह है, कि शृङ्गार की वस्तुयें जो अधिकांशतः कामोद्दीपक होती हैं, ऐसी नारी को मर्यादा से दूर ले जा सकती हैं, और उससे समाज में अविचार फैल सकता है। मैं यह नहीं कहती, कि समाज ने विधवाओं के लिये जो व्यवस्था की है, वह ठीक है, किन्तु मैं यह अवश्य कह सकती हूँ आशा, कि विधवाओं और कुमारी लड़कियों को ऐसे शृङ्गार से दूर ही रहना चाहिये, जिनसे, कि कामोद्दीपकभावों को उत्तेजना मिलती है।

शृङ्गार नारी की एक बहुत बड़ी कला है। प्रत्येक नारी में किसी न किसी प्रकार यह कला विद्यमान रहती है। साथ ही मुझे यह भी कहना पड़ता है, कि प्रत्येक नारी में इस कला का होना अधिक आवश्यक है। दाम्पत्य जीवन में शृङ्गार की कला नारी का सबसे अधिक साथ देती है। यदि नारी भलीभाँति अपना शृङ्गार करना जानती है, तो इसमें सन्देह नहीं, कि पति के हृदय पर सदा-सर्वदा उसका अधिकार हो रहेगा। शृङ्गार-कुशल नारी कभी भी पति के प्रेम से निराश नहीं होती। मैं यह कह चुकी हूँ, कि विवाहिता नारी का शृङ्गार केवल उसके पति के लिये होता है, अतः विवाहिता नारी को अपने पति की इच्छाओं ही के अनुसार अपने शरीर का शृङ्गार करना चाहिये। पति उसे किस रूप में देखना चाहता है, यह किसी प्रकार उसे

जान लेना चाहिये। यदि वह जान न सके तो पति को चाहिये, कि वह स्वयं ही अपनी इच्छा का स्वरूप उसके सामने प्रगट कर दे, और फिर उसी के अनुसार नारी को अपना शृङ्गार करना चाहिये। पुरुष को अपने शृङ्गार में नारी की इच्छा को महत्त्व देना चाहिये। इस प्रकार दोनों एक-दूसरे की इच्छाओं के अनुसार शृङ्गार करके एक दूसरे के हृदय के सन्निकट पहुँच सकते हैं। पति-पत्नी के शृङ्गार का यही उद्देश्य होना चाहिये, कि वे एक दूसरे की इच्छाओं के अनुकूल शृङ्गार करके अधिक से अधिक एक दूसरे के प्रेम के पास पहुँचे, किन्तु आजकल ऐसा होता बहुत कम है। कदाचित् ही कुछ ऐसी नारियाँ हों, जो शृङ्गार में पति की इच्छा को प्रधानता देती हों! नारियों में शृङ्गार की जो परिपाटी चल आई है, वे केवल उसी का परि-पालन करती हैं। वे अच्छे अच्छे गहने और कपड़े अवश्य पह-नती हैं, किन्तु इस बात का विचार नहीं करतीं, कि उनके वे गहने और कपड़े पति की इच्छा के अनुकूल हैं या नहीं। वे जब उन गहनों और कपड़ों को पहन कर पति के सम्मुख जाती हैं, तब उन्हें पति उस रूप में देखकर प्रसन्न होता है, या नहीं! प्रायः बहुत सी स्त्रियाँ शृङ्गार को कला में अनभिज्ञ भी होती हैं। वे शृङ्गार अवश्य करती हैं, किन्तु शृङ्गार की क्रियाओं और समय पर ध्यान नहीं देतीं। इसका परिणाम यह होता है, कि पति के सम्मुख उनका शृङ्गार प्रभावहीन प्रमाणित होता है। ऐसी स्त्रियाँ अशिक्षित पुरुषों के निकट भले ही प्रेम की पात्रिणी बन जायँ, किन्तु शिक्षित पुरुष, जो सौन्दर्य को परखना जानता होगा, कभी भी उसे अपने हृदय का दान न देगा। नारी शिक्षित हो, या न हो, किन्तु उसमें शृङ्गार का गुण तो होना चाहिये। क्योंकि यह नारी के लिये उसका

स्वाभाविक गुण और धर्म है। इसे खोकर नारी वैवाहिक जीवन में सुख नहीं प्राप्त कर सकती।

प्राचीनकाल में शृङ्गार का कुछ दूसरा ही स्वरूप था, प्राचीनकाल की नारी अपने शृङ्गार के लिये जिन वस्तुओं का उपयोग करती थी, आज की नारियों को उनमें से बहुत कुछ बिलकुल पसन्द नहीं है। समय ने अपनी गति के साथ ही साथ नारी की शृङ्गार-भावना में भी परिवर्तन ला दिया है। फिर भी आज की नारी भी गहने, कपड़े, सिन्दूर, और तरह-तरह की सुगन्धित वस्तुओं से अपना शृङ्गार करती है। आज की नारी के शृङ्गार में कपड़ों की सुन्दरता की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। आज की नारी सोने के बने हुए दो एक गहनों को पहन कर शान्त हो जाती है, किन्तु वह चाहती है, कि उसे पहनने के लिये अच्छी सी अच्छी साड़ी, जम्पर, और ब्लाउज़ मिलते रहें। वह अपने कानों में ऐरिंग, शरीर पर रेशमी साड़ी, जम्पर, और पैरों में चप्पल, पहन कर जब भाल के मध्य में सिन्दूर का टीका लगा लेती है, तब अपने को शृङ्गार से परिपूर्ण समझती है। इसकी सत्यता तुम्हें बाज़ारों में कपड़ों की दूकानों पर जाकर दिखाई पड़ेगी। तुम देखोगी, कि स्त्रियों के लिये कितने प्रकार की रंग-रंग की साड़ियाँ हैं, और हैं कितने प्रकार के रंग-रंग के परिच्छद। आश्चर्य तो यह है, कि दिन पर दिन नई-नई डिज़ाइनें सामने आती जा रही हैं और उनकी माँगें भी बढ़ती जा रही हैं। इसे देखकर क्या तुम यह नहीं कह सकती आशा, कि आज की नारी कपड़ों से ही अधिकतर अपना शृङ्गार करती है। नारी को चाहिये, कि वह कपड़े के शृङ्गार में अपने पति की इच्छाओं का ध्यान रखते हुए उसको आय का भी ध्यान रक्खे। यह आवश्यक नहीं है, कि सौन्दर्य की

वृद्धि के लिये रेशमी ही साड़ियाँ और ब्लाउजें धारण की जायँ। साधारण रंग-बिरंग की साड़ियाँ, जो आजकल बाजारों में बिकती हैं, मेरी समझ में रेशमी साड़ियों से कहीं अधिक अच्छी होती हैं। किन्तु इन साड़ियों को भी सभी स्त्रियाँ प्रति-दिन नहीं पहन सकतीं! क्योंकि फिर भी ये महँगी ही बिकती हैं। दैनिक व्यवहार के लिये साधारण धुली हुई स्वच्छ धोती अधिक उपयुक्त होगी, और उससे नारी के सौन्दर्य की वृद्धि भी अधिक होगी। केवल ध्यान इस बात का रहना चाहिये, कि वह धुली हुई और स्वच्छ हो। धुली हुई अच्छे किनारे की धोती पहनकर बालों का शृङ्गार करने के पश्चात् नारी जब भाल पर सिन्दूर का टीका लगा लेगी, तब इसमें सन्देह नहीं, कि उसका सौन्दर्य जागृत हो उठेगा।

शृङ्गार में आभूषणों का अधिक उपयोग करना अनुचित है। यद्यपि हमारे देश की शिक्षित-नारियों की अभिरुचि आभूषणों की ओर से हट रही है, किन्तु फिर भी अभी भारत की अधिकांश स्त्रियों के हृदय में आभूषणों का प्रेम बेहद रूप से विद्यमान है। भारतीय नारी आभूषणों के पहनने में संसार के सभी देशों की स्त्रियों से बहुत आगे बढ़ी हुई है। ऐसा कोई अंग नहीं, जिसमें भारतीय नारी गहने न धारण करती हो। गाँवों में आज भी ऐसी स्त्रियाँ दिखाई देती हैं, जो सिर से लेकर पैर तक गहनों से लदी रहती हैं। वे समझती हैं, कि उन गहनों के पहनने से उनके शरीर का सौन्दर्य अधिक बढ़ गया है, किन्तु वास्तव में ऐसी बात नहीं होती आशा! उन बेढंगे और अधिक गहनों के कारण उनके शरीर का प्रकृत सौन्दर्य भी नष्ट हो जाता है। वे एक विचित्र जन्तु-सी दिखाई देती हैं। गाँव में ही नहीं, शहरों में भी अधिकांश स्त्रियाँ गहने अधिक पहनती हैं।

अनुभव से इस बात का पता चला है, कि अधिक गहने नारी के सौंदर्य को नष्ट कर देते हैं। जहाँ तक हो सके कुछ ही गहनों का व्यवहार करना चाहिये। आज कल की एक शिक्षिता नारी गहनों के सम्बन्ध में अपनी जो राय रखती है, मेरी समझ में वह बहुत ठीक है। कानों में ऐरिंग, हाथों में चूड़ियाँ, नाक में कील, और बहुत हुआ तो पैरों में पायल। इससे भी आगे यदि किसी के हृदय में गहने के लिये प्रेम हुआ तो गले में एक हार पहिन लिया। अधिक शिक्षिता स्त्रियाँ तो कानों में ऐरिंग, नाक में कील, और हाथों की चूड़ियों पर ही सन्तोष कर जाती हैं। गहने जो भी हों, अच्छे और एक ढंग के बने हों। वे जिस अंग के लिये हों, उसके अनुकूल हों। छोटे-बड़े गहने शरीर में बहुत ही बेढंगे ज्ञात होते हैं और सौन्दर्य के ऊपर पर्दा-सा डाल देते हैं। गहनों की सफाई पर भी ध्यान देना अधिक आवश्यक है। जिन गहनों का उपयोग सदा किया जाय, उनकी प्रति सप्ताह में सफाई होनी चाहिये। स्वच्छ गहने जब अपनी चमकती हुई आभा के साथ शरीर पर धारण किये जाते हैं, तब उनके साथ ही शरीर का सौन्दर्य भी चमक उठता है।

स्त्रियों के शृङ्गार में बालों का शृङ्गार अपना एक बहुत ही महत्त्व रखता है। प्रत्येक देश की स्त्रियाँ बालों का शृङ्गार करती हैं। गहनों और कपड़ों की ही भाँति बालों के शृङ्गार में भी जगत की स्त्रियों में रुचि-विभिन्नता पाई जाती है। एक विद्वान्, जिसने संसार के सभी देशों की स्त्रियों के शृङ्गार का अध्ययन किया है, एक स्थान पर लिखता है—'मैं जब संसार की स्त्रियों के शृङ्गार पर विचार करने लगा, तो सबसे पहले मेरा ध्यान स्त्रियों के बालों की ओर गया। मैंने संसार के सभी देशों की स्त्रियों के विभिन्न प्रकार के कटे-छँटे हुए बाल देखे।

मैंने यह भी देखा, कि स्त्रियाँ अपने बालों के शृङ्गार को कितना महत्त्व प्रदान करती हैं। उनकी यह धारणा है, कि उनके शरीर का सौन्दर्य उनके बालों ही से है। उनकी यह धारणा वास्तव में ठीक भी है। सचमुच नारी का सौन्दर्य उसके बालों ही की ओर देखता है।" आगे चलकर वही लेखक एक दूसरे स्थान पर लिखता है—"मैं जगत के सभी देशों की स्त्रियों के बालों की जब तुलना करता हूँ, भारतीय नारी मुझे सबसे आगे बढ़ी हुई दिखाई देती है। भारतीय नारी के बालों में मुझे जो सौन्दर्य मिला, वह किसी भी देश की नारी के बालों में न मिल सका।" वास्तव में हमारे देश की स्त्रियों के बालों में एक बहुत ही सुन्दर आकर्षण पाया जाता है। पीठ पर लहराती हुई उनकी गुथी हुई सुन्दर चोटी पुरुषों के मन को अपने आप ही आकर्षित कर लेती है। युरोप की स्त्रियाँ अपने बालों को अनेक प्रकार से कटाती हैं, किन्तु भारतीय नारी इसे अपने लिये अशुभ और अमंगल-जनक समझती है। यहाँ तो यह समझा जाता है, कि स्त्री के जितने ही बड़े-बड़े बाल हों, वे उतने ही उसकी शोभा को बढ़ाते हैं। भारतीय स्त्रियाँ अनेक प्रकार से अपने बालों को बढ़ाने का प्रयत्न भी करती हैं। जब बालों की सुन्दरता नारी के लिये बहुत ही आवश्यक है, तब उसे अपने बालों को सुन्दर बनाने का प्रयत्न भी करते रहना चाहिये। कोई भी नारी, यदि वह चाहे तो, उसके बाल अधिक सुन्दर और चमकदार बन सकते हैं। बालों में सौन्दर्य लाने के लिये हमें उनकी सफाई पर ध्यान देना चाहिये। प्रति सप्ताह बालों को साबुन या बेसन से धो डालना चाहिये। यदि साबुन न मिल सके तो बेसन का ही उपयोग किया जा सकता है। बालों की सफाई में उनकी जड़ों और खाल पर ध्यान देना

बहुत ही आवश्यक है। बालों को इस प्रकार साफ करना चाहिये, कि उनकी जड़ें और खाल भली प्रकार धुल जाय। इस प्रकार यदि नारी अपने बालों की सफाई पर ध्यान देती रहे, तो उसके बाल बहुत ही चमकदार हो सकते हैं। बालों को गिरने और झड़ने से भी बचाना चाहिये। सिर पर ऐसे तेल का उपयोग करना चाहिये, जो बालों की जड़ों को मज़बूत कर सके, और बालों को बढ़ा सके। हमारी दृष्टि में आँवले का तेल अधिक उपयोगी होता है। तिल के तेल का भी प्रयोग किया जा सकता है तेल का प्रयोग करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये, कि तेल बालों की जड़ों और खाल में पहुँच रहा है या नहीं। ऊपर बालों ही में तेल चुपड़ने से कोई लाभ नहीं होता। बालों में प्रतिदिन नियम से कंघी करना चाहिये। बालों में प्रति दिन कंघी करने से उनमें मज़बूती आती है, और मैल इत्यादि निकल जाता है। जो स्त्री बालों में प्रतिदिन नियम से कंघी नहीं करती उसके बाल कमजोर होकर असमय में ही झड़ने लगते हैं।

बालों के शृङ्गार के साथ ही साथ मुँह दाँत आँख के शृङ्गार पर भी ध्यान देना अधिक आवश्यक है। पुरुष के मन पर नारी के जिस अंग का सौन्दर्य तत्क्षण प्रभाव डालता है, वे हैं उसकी आँखें, और उसका मुँह। यह सच है, कि आँखों का सौन्दर्य स्वाभाविक रूप से ही प्राप्त होता है। प्रकृति की ओर से, जिसे जिस प्रकार की आँखें मिल जाती हैं, उसे उसी पर संतोष करना पड़ता है, किन्तु प्रयत्न करने पर असुन्दर आँखों में भी चमक उत्पन्न की जा सकती है। नारी के लिये उसकी सुन्दर आँखें बड़ी काम की होती हैं। सुन्दर आँखों वाली नारी पति प्रेम से कभी निराश नहीं हो सकती। अतः नारी को अपनी

आँखों की ओर से उदासीन न होना चाहिये। प्रतिदिन आँखें साफ करनी चाहिये, और उनमें काजल या सुरमे का प्रयोग करते रहना चाहिये। काजल और सुरमा इतना न लगा लेना चाहिये, जिससे, कि आँखों में फूहड़पन आ जाय। यह आवश्यक नहीं है, कि प्रतिदिन आँखों में काजल और सुरमे का उपयोग किया जाय, किन्तु यह आवश्यक है कि प्रतिदिन आँखों की सफाई बड़े ध्यान से की जाय। मुख के सौन्दर्य को स्थिर रखने के लिये अच्छे साबुन का उपयोग करना चाहिये। अच्छे साबुनों से चमड़ा मुलायम हो जाता है, और सौन्दर्य निखर उठता है। सोने के पूर्व मुख पर ठंडे पानी का छींटा डालना चाहिये। ठंडा पानी चमड़े की रंगत को स्थिर रखने में अधिक सहायक होता है। कभी कभी ठंडे पानी में कागज़ी नींबू के दस पाँच बूँद मिलाकर मुँह के चमड़े पर मल देना चाहिये और फिर उसे तौलिये से रगड़ कर पोंछ देना चाहिये। मुख का सारा सौन्दर्य दाँतों के ही सौन्दर्य पर निर्भर रहता है। दाँतों से ही यह प्रगट होता है, कि अभी युवावस्था की शक्तियाँ अवशेष हैं। दाँत स्पष्ट रूप से यौवन को प्रगट तो करते ही हैं, गुप्त रूप से भी उसके विकास में सहायता प्रदान करते हैं। यदि तुम किसी ऐसे युवक पुरुष या युवती नारी की ओर ध्यान से देखो, जिसने किसी रोग के कारण अपने दाँतों को निकलवा दिया हो, तो निश्चय ही तुम्हें उसमें बुढ़ापा दिखाई पड़ेगा। उसका मुख ठीक वैसा ही ज्ञात होगा, जैसा कि दन्त-विहीन वृद्धों का। प्रगट रूप से ही नहीं, अप्रत्यक्ष रूप से भी उसकी युवक-शक्तियों पर उसका बहुत कुछ प्रभाव पड़ा होगा। यौवन और मुख के सौन्दर्य को स्थिर रखने के लिये यह अधिक आवश्यक है, कि दाँतों पर ध्यान दिया जाय। नारी या पुरुष

प्रत्येक के मुख का सौन्दर्य दाँतों के सौन्दर्य की ही ओर देखता है। मोती की भाँति उज्ज्वल और अनार के दानों की भाँति खिले हुए दाँत अधिक सुन्दर समझे जाते हैं। युरोप इत्यादि देशों में नारी के सुन्दर और चमकदार दाँतों की ओर अधिक ध्यान दिया जाता है। पश्चिमी देशों की स्त्रियाँ अपने दाँतों को तरह-तरह के उपायों से सुन्दर और चमकदार बनाने के लिये प्रयत्न भी किया करती हैं। हमारे देश की स्त्रियाँ दाँतों में मिस्सी का प्रयोग करती हैं। न जाने कहाँ से मिस्सी लगाने की प्रथा हमारे देश में आई; क्योंकि हमारे देश में भी दाँतों की उपमा मोती और अनार के दानों से ही दी जाती है। मिस्सी के प्रयोग से दाँत काले पड़ जाते हैं, और मुख के सौन्दर्य को नष्ट कर देते हैं। दाँतों में सौन्दर्य और चमक लाने के लिये दाँतों की सफाई पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है। प्रतिदिन दतौन करना चाहिये, और खाने के पश्चात् दाँतों को मल कर धो लेना चाहिये ! बारीक पीसा हुआ कोयला दाँतों में चमक लाने के लिये अधिक उपयोगी सिद्ध होता है। अमीर स्त्रियाँ बाजारों में बिकनेवाले 'टूथ पेस्ट' का भी प्रयोग कर सकती हैं। किन्तु यह सबको तो नहीं मिल सकता आशा ! गरीब स्त्रियों को तो पिसे हुए कोयले का ही प्रयोग करना चाहिये। बस, फिर और कभी।

वही—
तुम्हारी भाभी

नारी और उसके कपड़े

रामपुर
८-९-४०

मेरी आशा !

प्रसन्न रहो !

मैंने अपने पिछले किसी पत्र में भारतीय नारी की कपड़ों की ओर बढ़ती हुई अभिरुचि का उल्लेख किया है, किन्तु यह अभिरुचि भारतीय नारी में ही नहीं, संसार की सभी नारियों में तुम्हें दिखाई पड़ेगी। संसार की सभी नारियाँ इस बात की खोज में रहती हैं, कि उन्हें अच्छे से अच्छे कपड़े पहनने को मिलें। नारी ही नहीं, पुरुष भी इस बात का प्रयत्न करते हैं। नारी ही की भाँति पुरुष भी अनेक प्रकार के रंग-बिरंगे वस्त्रों को धारण करते हैं। किन्तु क्या कभी तुमने सोचा है आशा, कि स्त्री और पुरुष ऐसा क्यों करते हैं? वे क्यों तरह-तरह के कपड़े पहनते हैं? बात बहुत ही स्पष्ट है। यदि तुमने विचार किया होगा, तो तुम्हारी समझ में भी यह बात आ गई होगी, कि स्त्रियाँ जो अनेक प्रकार के कपड़े पहिनती हैं, केवल इसीलिये, कि वे उन कपड़ों को पहन कर अधिक सुन्दर दिखाई पड़ें। वास्तव में वेश-भूषा और शरीर के सौन्दर्य का बहुत गहरा सम्बन्ध है। उतना ही गहरा सम्बन्ध है, जितना भोजन और शरीर का है। तुम्हें यह जानकर अधिक आश्चर्य होगा, कि जो कपड़ा आज सौन्दर्य का साधन बन रहा है, वही कभी इस उद्देश्य से पहना जाता था, कि उससे शरीर ढँका रहे।

प्रारम्भिक काल में जब कपड़े का आविष्कार नहीं हुआ था, तब कुमारी युवतियाँ अपने अंगों को वृक्षों की पत्तियों से ढँके रहती थीं। इससे उनका उद्देश्य यह रहता था, कि वे अपने अंगों को पत्तियों से ढँक कर अपनी ओर पुरुषों को आकर्षित करें। उनका उद्देश्य चाहे जो भी रहा हो, किन्तु उन्हीं पत्तियों को देख करके ही मानव-सभ्यता का ध्यान कपड़े की ओर गया, और उसने अपने विकास के साथ ही साथ कपड़े का आविष्कार किया। हो सकता है, प्रारंभ में वस्त्र-धारण का उद्देश्य तन ढँकना रहा हो, किन्तु आज तो वह फैशन के रूप में परिवर्तित हो गया है। यद्यपि उसके मूल में तन ढँकने की भावना भी अन्तर्हित है, किन्तु सौन्दर्य-साधन की भावना ने उस पर एक प्रकार से अपना अधिकार-सा स्थापित कर लिया है। मैं यह नहीं कहती, कि मनुष्य की यह भावना बुरी है, किन्तु मैं यह अवश्य कह सकती हूँ, कि यदि मनुष्य ने फैशन के नाम पर इसकी अतिशयोक्ति की तो उसे एक दिन अवश्य ही पश्चात्ताप प्रगट करना होगा।

नारी हो या पुरुष, मानव शरीर के लिये कपड़े का अधिक महत्त्व है। तुमने एक लोकोक्ति सुनी होगी–'यदि तुम कपड़े की आब रक्खोगे, तो कपड़ा तुम्हारी आब रक्खेगा' वास्तव में मनुष्य की बहुत कुछ पहचान उसके कपड़ों से ही होती है। जब कोई नारी तुम्हारे सामने कपड़ा पहन कर आती है, तब शीघ्र ही तुम्हारा ध्यान उसके कपड़ों की ओर चला जाता है। उसके कपड़ों का बहुत कुछ प्रभाव तुम्हारे हृदय पर पड़ता है, और तुम उसके कपड़ों को देखकर के ही उसकी योग्यता, उसके चरित्र, और उसकी बुद्धि के सम्बन्ध में तरह-तरह की कल्पनायें करने लगती हो। साफ-सुथरे कपड़े पहनने वाली नारी को

देखकर तुम शीघ्र ही सोचने लगती होगी, कि इसका आचरण भी इसके कपड़ों ही के समान निर्मल और पवित्र होगा। इसी प्रकार मैले-कुचैले कपड़े पहनने वाली नारी को देखकर तत्क्षण तुम्हारा मन उसके आलस्य और उसकी असावधानी की ओर आकर्षित हो जाता होगा। बुरे आचरण वाली नारी के मनोभाव भी बहुत कुछ उसके कपड़ों से ही प्रगट हो जाते हैं। एक विद्वान् ने कपड़ों की चर्चा करते हुये लिखा है, 'मनुष्य का चरित्र बहुत कुछ उसके कपड़ों के दर्पण में देखा जा सकता है।' कदाचित् इसीलिये कपड़ों की सफाई पर अधिक ज़ोर भी दिया जाता है। स्वच्छ कपड़े स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम तो होते ही हैं, उनका एक बहुत बड़ा कल्याणकारी मूक प्रभाव भी देखने वालों के ऊपर पड़ता है। स्वयं पहनने वाले के मन को भी वे एक पौष्टिक भोजन का काम देते हैं। तुमने इसका स्वयं अनुमान किया होगा आशा! जब कभी तुम स्वच्छ कपड़े पहनती होगी, तब तुम्हारा मन अपने आप ही प्रसन्न हो उठता होगा। इतना ही नहीं, बल्कि तुम एक नये जीवन का अनुभव भी करने लगती होगी। शरीर का सौन्दर्य तो बढ़ ही जाता होगा, तुम मन ही मन एक अपूर्व शान्ति और सुख का अनुभव करने लगती होगी। बीमार से बीमार मनुष्य भी स्वच्छ कपड़े धारण करने के पश्चात् सुख और शान्ति का अनुभव करने लगता है। एक सुप्रसिद्ध रूसी महिला ने लिखा है—'जब मैं स्वच्छ कपड़े पहन लेती हूँ तब हमारा मस्तिष्क एक अद्भुत चमत्कार से भर जाता है। उस समय मैं ऐसी ऐसी बातें सोच लेती हूँ कि मुझे स्वयं अपनी बुद्धि पर आश्चर्य होता है।' सुप्रसिद्ध विद्वान् एमर्सन ने भी एक स्थान पर लिखा है:–'शान्ति के साथ आवेष्टित होने का यह ज्ञान, हमें उस आन्तरिक शान्ति का

अनुभव कराता है, जिसके देने में धर्म भी असमर्थ दिखाई देता है।"

इससे तुम यह समझ गई होगी आशा, कि स्वच्छ कपड़ा हमारे शरीर के लिये कितना आवश्यक है! अब मैं तुम्हारे ध्यान को एक दूसरी ओर आकर्षित कर रही हूँ। उस दूसरी ओर से मेरा तात्पर्य यह है, कि मुझे किस प्रकार के कपड़े पहनने चाहिये? तड़क भड़क वाले या साधारण। प्रायः यह देखा जाता है, कि जो नारी तड़क-भड़क वाले कपड़े पहनती है, उसके चरित्र में कुछ न कुछ दोष होता है। क्योंकि यह एक स्पष्ट बात है, कि जिसके मन में जितना ही विकार होगा, वह उतना ही भड़कीले कपड़ों के द्वारा दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करेगा। भड़कीले पोशाक से सजी हुई नारी जब सड़क पर चलती है, तब उसका यह उद्देश्य होता है, कि लोग उसके कपड़ों की ओर आकर्षित होकर उसको ओर देखें। प्रायः बुरे आचरण वाली नारियाँ ही भड़कीले कपड़े पसन्द करती हैं। भड़कीले कपड़ों का चरित्र पर बहुत ही गुप्त रूप से और बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता है। एक भारतीय विद्वान् ने एक स्थान पर लिखा है—'फटे पुराने स्वच्छ कपड़े पहन लो किन्तु उन कपड़ों को न पहनो, जिनमें तड़क-भड़क हो। ऐसे कपड़े मन में विकार उत्पन्न करते हैं और उसे पाप की ओर अग्रसर करते हैं।' भड़कीले कपड़ों से सादे कपड़े प्रत्येक अवस्था में बहुत अच्छे होते हैं। सादे और स्वच्छ कपड़ों में जो आकर्षण होता है, वह भड़कीले कपड़ों में देखने को नहीं मिलता। बहुमूल्य रेशमी साड़ियाँ देखने के लिये होती हैं। उनमें वह आकर्षण कदापि नहीं होता, जो साधारण साड़ियों में होता है। सादगी का हृदय के ऊपर निर्मल प्रभाव तो पड़ता ही है, साथ ही वह हमें मितव्ययिता का पाठ भी पढ़ाती

है। गार्हस्थ्य जीवन में रहने वाली नारी के लिये यह बहुत ही आवश्यक है, कि वह सादगी से रहे। वह जितनी ही सादगी से रहेगी, उतनी ही उसकी आत्मा निर्मल होगी और उतनी ही वह अपने गार्हस्थ्य जीवन को भी सुखी बना सकेगी।

सादगी गार्हस्थ्य जीवन का प्राण है। नारी स्वयं तो सादगी से रहे ही, अपने बच्चों को भी सादगी से रहना सिखलाये। सादगी मनुष्य का एक बहुत बड़ा गुण है। जिन मनुष्य के हृदय में इस गुण का विकास हो जाता है, फिर उसके बिगड़ने की आशंका बहुत कम रह जाती है। सादगी का यह तात्पर्य नहीं, कि नारी मैले-कुचैले कपड़े पहने। नारी को प्रत्येक हालत में स्वच्छ कपड़े पहनने चाहिये। यदि नारी कपड़ों की स्वच्छता की ओर ध्यान न देगी, तो वह सादगी की मर्यादा का पालन न कर सकेगी। सादगी का तात्पर्य ही यह है, कि नारी कम मूल्य के किन्तु अच्छे, सुन्दर, और साफ कपड़े पहने। अपने कपड़ों में नारी को इस बात का ध्यान रखना चाहिये, कि वह जिस कपड़े को पहन रही है, वह उसके शरीर पर फिट होगा, या नहीं? उसका रंग उसके सौन्दर्य को विकसित कर सकेगा या नहीं? नारी को यदि ध्यान देने की आवश्यकता है, तो केवल इसी बात पर। कपड़ों के रंग का ज्ञान नारी के लिये बहुत ही आवश्यक है। यदि नारी रंगों की परख करके वस्त्रों के पहनने की कला में दक्ष हो जाय तो फिर उसे इस बात की आवश्यकता न पड़ेगी, कि वह सौन्दर्य-वृद्धि के लिये रेशमी साड़ियों का उपयोग करे। रेशमी साड़ियाँ उसके सामने अस्तित्व-हीन ही प्रमाणित होंगी। नारी को एक और भी बात पर ध्यान देना बहुत ही आवश्यक है। वह है, कपड़ों की रक्षा। यह एक बहुत बड़ी कला है। गार्हस्थ्य जीवन में इस कला का अधिक मूल्य है। कपड़े कैसे

पहनने चाहिये, कैसे रखने और कैसे नहाने चाहिये, नारी को इन बातों पर आवश्यक रूप से ध्यान देना चाहिये। यदि नारी इन बातों को सुचारु रूप से ध्यान रखेगी, तो उसके कपड़ों की सुन्दरता स्थिर रहेगी, और वे उसकी सुन्दरता को अपने अनुरूप ही बढ़ा सकेंगे। तुम में इस बात की कमी है आशा! तुम सुन्दर होने पर भी अपने कपड़ों की रक्षा की ओर ध्यान नहीं देती। यहाँ तो मैं तुम्हारे कपड़े को ठीक से रख दिया करती थी, किन्तु वहाँ अब तुम्हें अपने हाथों से ही काम करना पड़ेगा। अपना भी और रमेश का भी। पति के प्रेम को प्राप्त करने का यह भी एक बहुत बड़ा साधन है। क्या मैं सुन सकूँगी, कि तुम इससे भी सम्पन्न हो! मेरे भाग्य··· ।

वही—
तुम्हारी भाभी

तुम कैसे स्वस्थ रह सकती हो ?

रामपुर
१२-९-४०

मेरी बीबी !

सुखी रहो।

मैं तुम्हें बार-बार लिखती हूँ आशा, कि सुखी रहो प्रसन्न रहो, किन्तु क्या तुम जानती हो, कि संसार का वास्तविक सुख क्या है ? क्या कभी तुम्हारा ध्यान उस सुख की ओर गया है, जिसके अभाव में जीवन के सभी सुख अत्यन्त फीके और तुच्छ ज्ञात होते हैं। हम सभी उस सुख को जानते हैं, और उसकी उपयोगिता को भी मन ही मन स्वीकार करते हैं, किन्तु फिर भी हम उसे जीवन के सन्निकट लाने का प्रयत्न नहीं करतीं। वह सुख, संसार का सबसे बड़ा सुख है, सुन्दर स्वास्थ्य। जिसका स्वास्थ्य ठीक है, उसका सब कुछ ठीक है। स्वास्थ्य ही मनुष्य को संसार के योग्य बनाता है। संसार में जितनी वस्तुयें हैं, जितने पदार्थ हैं, सब केवल उसी व्यक्ति के लिये हैं, जिनका स्वास्थ्य ठीक है। एक उस मनुष्य से स्वास्थ्य की उपयोगिता पूछो, जो रुग्ण होकर चारपाई पर पड़ा है। वह अवश्य अपनी भूलों पर पश्चात्ताप प्रगट करता हुआ यह कहेगा कि जीवन का सबसे बड़ा सुख है, सुन्दर स्वास्थ्य। यदि मनुष्य जीवित रहना चाहता है, तो उसे चाहिये, कि वह स्वस्थ बने। जीवित रहने का तात्पर्य यह है कि उसे स्वस्थ होना चाहिये। सचमुच आशा, जीवन का वास्तविक सुख है, सुन्दर स्वास्थ्य। जीवन की सारी सफलता स्वास्थ्य पर ही

निर्भर रहती है। सुन्दर स्वास्थ्य मन को प्रसन्नता तो प्रदान करता ही है, जीवन-संग्राम में विजयी भी बनाता है। तुम तो यह जानती ही हो, कि मनुष्य के जीवन-संग्राम में पग-पग पर शक्ति और साहस का खेल है। शरीर में शक्ति और साहस को कौन विकसित करता है, सुन्दर स्वास्थ्य ही तो। जो जितना ही अधिक स्वस्थ होगा, वह उतना ही अधिक साहसी और शक्तिशाली भी होगा। साहसी और शक्तिशाली मनुष्य संसार में क्या नहीं कर सकता? जगत् के सम्पूर्ण सुखों को वह अपके चरणों के पास खींच लाता है। वह स्वयं तो सुखी रहता ही है, दूसरों को भी सुख प्रदान करता है। सुन्दर स्वास्थ्य की उपयोगिता को ध्यान में लाकर के ही संसार के बड़े-बड़े विद्वानों ने लिखा है:—संसार के सभी सुखों की चाहे उपेक्षा कर दो, किन्तु स्वास्थ्य की उपेक्षा न करो। यदि तुम स्वास्थ्य की उपेक्षा न करोगे तो संसार के सभी सुख एक-एक करके तुम्हारे पास आ जायँगे।

नारी हो, या पुरुष, प्रत्येक को अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना अधिक आवश्यक है। स्त्री-पुरुष के प्रेम की स्थिरता के लिये यह बहुत ही आवश्यक है, कि दोनों स्वस्थ रहें। रोगों से घिरी हुई नारी कभी पुरुष के प्रेम को पात्रिणी नहीं हो सकती। उसका गार्हस्थ्य जीवन वैसा ही होगा, जैसा काँटों से ढँका हुआ रास्ता। उसे न स्वयं ही गार्हस्थ्य जीवन का सुख प्राप्त हो सकता है, और न उन व्यक्तियों को ही, जो उसके साथ रहते हैं। इसके प्रतिकूल वह अपने रोगाक्रान्त शरीर से पुरुष के मन में अपने प्रति घृणा और विरक्ति की भावना अवश्य ही जागृत कर देगी। हमारे देश की अधिकांश स्त्रियों में प्रायः स्वास्थ्य का अभाव ही दिखाई देता है। स्त्री और पुरुष

में जो झगड़े होते हैं, उनका एक बहुत बड़ा कारण यह भी है कि स्त्रियाँ अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान नहीं देतीं। स्वास्थ्य की ओर ध्यान न देने ही के कारण उनका सौन्दर्य मुरझा जाता है, और वे दुबली-पतली तथा रोगों से घिरी हुई दिखाई देती हैं। असमय में ही वे ऐसे-ऐसे रोगों के शिकार हो जाती हैं, कि फिर आजीवन उनसे पिण्ड नहीं छूटता। शरीर दिनों दिन घुलता जाता है, और एक दिन इसी प्रकार उनके जीवन का अन्त हो जाता है। वे अपने जिन बच्चों को रोता हुआ छोड़ जाती हैं, वे भी बराबर उनकी ही भाँति घुलते और रोगों के शिकार होते रहते हैं। हमारा देश बच्चों की मृत्यु-संख्या में जो सबसे आगे बढ़ा हुआ है, उसका कारण केवल यही है कि हमारे देश की स्त्रियाँ स्वास्थ्य की ओर ध्यान नहीं देतीं। जब माता का ही स्वास्थ्य ठीक न होगा, तब फिर बच्चे के स्वास्थ्य का विकास कैसे हो सकता है। युरोप इत्यादि देशों को स्त्रियाँ इस सम्बन्ध में बहुत आगे बढ़ी हुई दिखाई देती हैं। वे सब कुछ भूल जाती हैं, किन्तु अपने स्वास्थ्य को नहीं भूलतीं। उन्हें दिन-रात अपने स्वास्थ्य की चिन्ता लगी रहती है। पश्चिमी देशों में स्त्रियों और पुरुषों में समानता होने के कारण उन देशों की स्त्रियों को स्वास्थ्य-गठन के लिये कठिनाइयों का सामना भी नहीं करना पड़ता। वे स्वास्थ्य के आवश्यक साधनों पर ध्यान देने के साथ ही साथ स्वतंत्र रूप से पुरुषों की भाँति व्यायाम करतीं, टहलतीं, खेलतीं, और पानी में तैरती हैं। शिक्षिता होने के कारण वे स्वयं तो स्वास्थ्य के नियमों का पालन करती ही हैं, अपने बच्चों और पति के ऊपर भी इस बात का जोर डालती हैं, कि वे भी स्वास्थ्य के नियमों का पालन करें।

स्वास्थ्य पर विचार करने के साथ ही साथ हमारा ध्यान

शीघ्र उन साधनों की ओर आकर्षित हो जाता है, जिनसे स्वास्थ्य बनता है, और बिगड़ता है। इन साधनों में भोजन, वायु, जल और शरीर की सफाई का विशेष महत्त्व है। यद्यपि इनके अतिरिक्त कुछ ऐसी और भी बातें हैं, स्वास्थ्य के लिये जिन पर ध्यान देना अधिक आवश्यक है, किन्तु फिर भी यदि मनुष्य अपने भोजन, वायु, जल और शरीर की सफाई पर ध्यान देता रहे तो उसका स्वास्थ्य बहुत कुछ ठीक रह सकता है। जो कुछ भी भोजन किया जाय, उसमें शुद्धता और समय का ध्यान रखना अधिक आवश्यक है। भोजन से ही रक्त का निर्माण होता है। तुम जिस प्रकार का भोजन करोगी, वैसा हो तुम्हारे शरीर में रक्त का निर्माण भी होगा। शरीर में प्रायः सम्पूर्ण बीमारियाँ भोजन ही के कारण उत्पन्न होती हैं। गन्दा, अपवित्र और बासी भोजन शरीर के लिये विष का काम करता है। जब कभी तुम इस प्रकार का भोजन करती होगी, तब तुम्हारा शरीर बिलकुल अवसन्न हो जाता होगा। इसका कारण यही है, कि गन्दे भोजन का विष तुम्हारे शरीर में घुल जाता है, और पाचन क्रियायें एक प्रकार से जवाब-सा दे देती हैं। इतना ही नहीं, गन्दे भोजन के विष के कारण कभी-कभी भयानक बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं, और मनुष्य देखते-देखते मृत्यु के पेट में जा पहुँचता है। तुम्हें सदा गन्दे और बासी भोजन से बचना चाहिये। तुम जो कुछ भी भोजन करो, समय से करो और उचित मात्रा में करो। जो लोग भोजन में शुद्धता के साथ ही साथ समय और मात्रा पर भी ध्यान नहीं देते, वे कुछ ही दिनों में पेट के भयानक रोगों से आक्रान्त हो उठते हैं। बासी भोजन जिस प्रकार शरीर के लिये विष का काम करता है, उसी प्रकार असामयिक भोजन का भी पाचन-

यंत्रों पर अत्यन्त दूषित प्रभाव पड़ता है। मलबन्ध और क़ब्ज सम्बन्धी इत्यादि रोग उन्हीं लोगों को होते हैं, जो भोजन में समय और मात्रा पर ध्यान नहीं देते। प्रत्येक मनुष्य को अपने भोजन के समय का एक क्रम बना लेना चाहिये, और उसी के अनुसार प्रतिदिन भोजन करना चाहिये। पहले कुछ कठिनाई अवश्य ज्ञात होगी, किन्तु जब अभ्यास हो जायगा, तब पाचन-यंत्र अपने आपही भूख के द्वारा भोजन के लिये तकाजा करने लगेंगे। जितनी भूख हो, उतना ही भोजन करना अधिक उचित है। भोजन करने के साथ ही जल का भी ध्यान रखना आवश्यक है। जो लोग अधिक भोजन कर लेते हैं, और पेट में पानी के लिये स्थान नहीं छोड़ते, उनके पाचन-यंत्र खराब हो जाते हैं। क्योंकि उचित मात्रा में जल के अभाव में पाचन-यंत्र भोजन को पचाने में असमर्थ हो जाते हैं, और भोजन पेट में सड़कर अनेक प्रकार की बीमारियों का कारण बन जाता है।

भोजन करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये, कि हम जिन वस्तुओं को खा रही हैं, उनसे हमारे शरीर में विशुद्ध और बल-कारक रक्त का निर्माण हो सकेगा या नहीं? यदि हम इस बात पर ध्यान नहीं देतीं तो हमारा भोजन का उद्देश्य कदापि पूरा नहीं हो सकता और हम कभी भी स्वस्थ नहीं रह सकतीं, हम तुम्हें यहाँ बता रही हैं, कि हमारे भोजन में कौन-कौन सी वस्तु होनी चाहिये, रोटी तो तुम प्रतिदिन खाती होगी। इसमें संदेह नहीं, कि रोटी स्वास्थ्य के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध होती है, किन्तु तुम्हें गेहूँ की रोटी को छोड़ कर और किसी अन्न की रोटी न खानी चाहिये। गेहूँ में स्वास्थ्य को विकसित करने वाले परिमाण अधिक अंश में विद्यमान रहते हैं। गेहूँ शीघ्र पचता है और शरीर में स्फूर्ति तथा शक्ति-

प्रदान करता है। गेहूँ की भी रोटी में इस बात का ध्यान रखना चाहिये, कि जिस आँटे की रोटी बनाई जाय, वह मोटा और चोकर युक्त हो। महीन आँटे की रोटी लाभ करने के स्थान में हानि ही पहुँचाती है। रोटी के साथ ही साथ, भोजन में दूध और उससे बनी हुई वस्तुओं का अंश होना चाहिये। दूध से बनी हुई वस्तुओं से तात्पर्य है, दही, मट्ठा, घोल, और मक्खन इत्यादि। इन वस्तुओं को पचाने में पाचन-यन्त्रों को अधिक परिश्रम करना नहीं पड़ता। ये पहले ही से पचे हुये रूप में रहती हैं। इसके अतिरिक्त दूध और दूध से बनी हुई वस्तुओं में खनिज लवण इतना अधिक रहता है, कि उससे हड्डी, दाँतों और मस्तिष्क को अधिक बल प्राप्त होता है। भोजन में फल और मेवे भी होने चाहिये। फलों और मेवों में खजूर, अंजीर, किशमिश और केले अधिक उपयोगी होते हैं। भोजन में चावल का भाग कम और हरी तरकारियों का अधिक होना चाहिये। हरी तरकारियाँ जो ज़मीन के भीतर पैदा होती हैं, उनमें स्वाभाविक रूप से लवण का अधिक भाग रहता है, जो कि शरीर के लिये अधिक उपयोगी होता है।

अब मैं तुम्हारे ध्यान को वायु, जल, और शरीर की सफाई की ओर आकर्षित करती हूँ आशा! जिस प्रकार स्वच्छ भोजन स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है, उसी प्रकार स्वच्छ वायु भी। यदि मनुष्य को स्वच्छ वायु न मिले, तो वह उसके अभाव से मृत्यु के पंजों में फँस जायगा। हम प्रतिक्षण साँसों के द्वारा स्वच्छ वायु ग्रहण करते हैं। स्वच्छ वायु हमारे शरीर के भीतर प्रवेश करके हमारे शरीर के रक्त को शुद्ध करती है, और उन फेफड़ों को, जो साँस के यंत्र हैं, अधिक शक्तिशाली बनाती है। हम अपनी साँसों के द्वारा जितनी ही अधिक-मात्रा में

स्वच्छ वायु ग्रहण करेंगे, उतना ही हमारा रक्त भी अधिक शुद्ध होता रहेगा, और उतना ही अधिक हम स्वस्थ भी रहेंगे। यही कारण है, कि स्वास्थ्य-प्रेमी मनुष्यों को सदैव स्वच्छ वायु की खोज रहती है। यदि तुम स्वस्थ रहना चाहती हो तो तुम्हें भी स्वच्छ वायु की चिन्ता करनी चाहिये। यह तो निश्चित है, कि स्वच्छ वायु तुम्हें घरों में नहीं मिल सकती, किन्तु यदि तुम चाहो तो प्रयत्न करके उसे अपने घर में भी बुला सकती हो। स्वच्छ वायु के लिये तुम्हें प्रतिदिन सन्ध्या और प्रातःकाल मैदान में घूमना चाहिये। सबसे अधिक स्वच्छ वायु तुम्हें प्रातःकाल प्राप्त हो सकती है। तुम्हें चाहिये, कि तुम चार बजे उठकर अपने पति और बच्चों के साथ बाहर मैदान में निकल जाओ और वहाँ धीरे-धीरे टहलो। यदि तुम प्रतिदिन नियमपूर्वक ऐसा करो, तो यह निश्चय है कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक रहेगा। घर में स्वच्छ वायु को बुलाने के लिये तुम्हें घर की खिड़कियाँ खुली रखनी चाहिये। रात को जब तुम सोओ, उस समय भी खिड़कियों को खोल करके ही सोओ। घर और घर के आस पास ऐसी वस्तुओं को न रहने दो जिनसे तुम्हारे कमरे में प्रवेश करने वाली हवा दूषित हो सके। इसके लिये तुम्हें अपने घर और कमरों की सफाई पर ध्यान देना चाहिये। तुम्हें चाहिये, कि तुम स्वयं अपने हाथों से अपने घर और कमरों की सफाई बड़े प्रेम से किया करो। क्योंकि अपने और बच्चों के स्वास्थ्य का जितना तुम्हें ध्यान है, उतना नौकरों को नहीं। अतः स्वास्थ्य से सम्बन्ध रखने वाले सभी कार्य तुम्हें अपने हाथ से ही करने चाहिये।

शरीर के लिये जितनी आवश्यकता भोजन की है, उतनी ही जल की भी। यदि हमारे शरीर को उचित मात्रा में जल न मिले, तो हम जीवित नहीं रह सकते। जल शरीर का एक बहुत

ही आवश्यक भोजन है, और साथ ही दवा भी है। यदि हम प्रयत्न करें तो अनेक रोग केवल जल पी करके ही दूर कर सकते हैं। जल के कारण ही मनुष्य अनेक रोगों से बचा भी रहता है। जल सभी पीते हैं; किन्तु बहुत कम ऐसे लोग होंगे, जो जल पीने की क्रिया पर ध्यान देते होंगे। जिस प्रकार भोजन के लिये उसकी शुद्धता, उसके समय का क्रम, और उसकी मात्रा पर ध्यान देना आवश्यक है, उसी प्रकार जल के सम्बन्ध में भी। जल के सम्बन्ध में भी हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिये, कि हमें कब और कितना पानी पीना चाहिये। भोजन के साथ पानी पीना बहुत ही हानिकारक होता है। जो लोग भोजन के साथ बार-बार पानी पीते हैं, उनके मुँह से थूक नहीं निकलता। थूक न निकलने कारण भोजन नहीं पचता और पाचन क्रियायें विकृत हो जाती हैं। पानी भोजन के पूर्व और उसके पश्चात् पीना चाहिये। किन्तु पानी पीने के एक घंटे पश्चात् भोजन करना चाहिये। इसी प्रकार यदि भोजन करने के तीन घंटे पश्चात् पानी पीया जाय तो अधिक अच्छा हो। सँभल-सँभल कर पानी पीना चाहिये। एक बार अधिक पानी पीने से जलोदर की बीमारी पैदा हो जाती है। पीने का पानी बहुत ही स्वच्छ होना चाहिये। यदि जल की स्वच्छता में किसी प्रकार का सन्देह हो तो उसे उबाल कर ठंढा कर लेना चाहिये। जल की सफाई की ओर से उदासीन होना अपने को मौत के मुख में डालना है। जाड़े के दिनो में प्रतिदिन एक सेर और गरमी के दिनों में प्रतिदिन दो सेर पानी पीना चाहिये। प्रातःकाल सोकर उठने पर और रात को सोने के पूर्व एक गिलास गुनगुना पानी अवश्य पी लेना चाहिये। इससे पाखाना साफ होगा और जी हलका रहेगा।

स्वास्थ्य और शरीर की सफ़ाई का अधिक सम्बन्ध है।

तुम अपने शरीर को जितना ही अधिक साफ रक्खोगी, उतना ही तुम्हारा स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। शरीर की सफाई के दो अंग हैं–बाहर की सफाई, और भीतर की सफाई। भीतर की सफाई से तात्पर्य पेट की सफाई से है। बाहर की सफाई के लिये प्रतिदिन स्नान करना अधिक आवश्यक है। स्नान सभी लोग करते हैं, किन्तु बहुत कम ऐसे लोग होंगे, जो स्नान की क्रियाओं पर ध्यान देते होंगे। स्नान करने का तात्पर्य शरीर की पूर्ण सफाई से है। तुम जानती हो कि हमारे शरीर में अनेक रोम-छिद्र हैं। शरीर के भीतर का पसीना इन्हीं छिद्रों की राह से प्रतिदिन निकलता रहता है। यह आवश्यक है, कि पसीना निकलने के लिये रोम-छिद्रों का मुँह खुला रहे। हम जो स्नान करते हैं, केवल इसीलिये, कि हम उस मल को अच्छी प्रकार धो-धो कर साफ कर दें, जो हमारे रोम-छिद्रों के मुँह पर जमा हो गया है। स्नान में इसी बात को विशेष महत्त्व देना चाहिये। यदि हम भली प्रकार मल–मल कर स्नान नहीं करते तो हमारे स्नान का उद्देश्य पूरा नहीं होता। जल्दी से दो एक लोटा पानी ऊपर डाल लेने से कुछ लाभ नहीं होता। प्रत्येक मनुष्य को कम से कम बीस-पचीस मिनट तक स्नान करना चाहिये। स्नान के लिये ठंडा और ताज़ा पानी अधिक लाभकर होता है। यदि स्नान पानी से भरे हुये टब में बैठ कर किया जाय और स्पंज से शरीर को रगड़ कर नहाया जाय, तो विशेष अच्छा हो। किन्तु स्नान का यह साधन हर एक नारी को प्राप्त नहीं हो सकता। जिसे प्राप्त हो, उसे इसी क्रिया से स्नान करना चाहिये। जिसे यह साधन प्राप्त न हो, उसे अपने स्नान में 'भली भाँति' पर ध्यान देना चाहिये। स्त्री को चाहिये, कि वह एकान्त में स्नान करे। चाहे वह जिस क्रिया से स्नान

करे, उसे अच्छी तरह स्नान करना चाहिये। पेट, पेड़ू, गर्दन, पैर, हाथ और मुख, सभी अंगों को मल-मलकर साफ करना चाहिये। अंगों की सफाई के लिये अच्छे साबुन का भी प्रयोग किया जा सकता है। किन्तु प्रतिदिन साबुन न लगाना चाहिये। प्रतिदिन साबुन लगाने से चमड़े की स्वाभाविक चमक नष्ट हो जाती है। स्नान के पश्चात् तौलिये से रगड़ कर शरीर पोंछ लेना चाहिये और धुला हुआ स्वच्छ वस्त्र धारण करना चाहिये। बाहरी सफाई की भाँति शरीर की भीतरी सफाई पर ध्यान देना अधिक आवश्यक है। साल भर में कम से कम एक बार तो अवश्य ही पेट की सफाई कर लेनी चाहिये। पेट की सफाई प्रतिवर्ष नियमानुसार करने से मल का वह अंश, जो प्रतिदिन की सफाई से पेट में बच जाता है, भयानक रोगों को उत्पन्न करने नहीं पाता। जो लोग प्रतिवर्ष पेट की सफाई नहीं करते, उनके पेट में धीरे-धीरे गन्दगी का ढेर एकत्र हो जाता है, और वे भयानक रोगों के शिकार हो जाते हैं। पेट की सफाई के लिये तुम्हें एनीमा का प्रयोग करना चाहिये। जब तुम अपने पेट की सफाई करना चाहो, तब सायंकाल एक एनीमा ले लो। दूसरे दिन प्रातःकाल एक गिलास गरम पानी पीओ, और सन्तरा खाओ। इतने अधिक सन्तरे न खा लो कि वे हानिकारक सिद्ध हो। प्यास लगे तो पानी पीते रहो। रात को भी फल खाओ, और फिर एक एनीमा लो। तीन दिन तक लगातार इस क्रम को जारी रक्खो। चौथे, पाँचवे, छठे और सातवें दिन सबेरे और शाम, दोनों समय एनीमा लो सबेरे जितना गरम पानी पी सको, नीबू निचोड़ कर पीओ। पत्तीदार हरी तरकारियों का जलपान करो। रात के समय हरी तरकारियों का सलाद खाओ। आठवें दिन भी भोजन के इसी क्रम को जारी रक्खो।

सबेरे हरी तरकारियों के जलपान के साथ गेहूँ के मोटे आँटे की दो-एक रोटी भी ले सकती हो। नवें दिन फिर अपने पूर्व के भोजन पर आ जावो। इस प्रकार पूर्ण रूप से तुम्हारे पेट की सफाई हो जायगी, और तुम स्वस्थ बनी रहोगी।

सुन्दर स्वास्थ्य के लिये स्त्रियों को एक और भी बात पर ध्यान देने की अधिक आवश्यकता है आशा! वह है, पति-पत्नी का सम्बन्ध। स्त्री-पुरुष को बहुत कुछ सोच-समझ कर नियमानुसार अपना सम्बन्ध स्थापित करना चाहिये। अनेक पुरुष और अनेक स्त्रियाँ अपनी अज्ञानता के ही कारण अनेक रोगों के शिकार हो जाती हैं। स्त्री-पुरुष, प्रत्येक को काम-शास्त्र का भली-भाँति ज्ञान होना चाहिये। सन्तान-शास्त्र के नियमों के अनुसार ही उन्हें एक-दूसरे से मिलना चाहिये। स्त्री को सन्तान-शास्त्र के नियमों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। क्योंकि वह जिस पद पर आरूढ़ होने की तैयारी कर रही है, वह एक बहुत बड़ा पद है। यदि वह सन्तान-शास्त्र के नियमों का पालन न करेगी, तो अपने मातृत्व-पद से नीचे गिर जायगी। दाम्पत्य-जीवन का धर्म पारस्परिक कामाग्नि को शान्त करना नहीं, जीवन का विकास करना है। जीवन का विकास तभी होगा, जब स्त्री-पुरुष स्वस्थ रहेंगे। स्त्री-पुरुष स्वस्थ तभी रह सकते हैं, जब वे दाम्पत्य-जीवन के नियमों का पालन करेंगे। जो स्त्री चाहती है, कि वह स्वस्थ रहे, जो चाहती है, कि उसका दाम्पत्य-जीवन अत्यन्त सुखी रहे, उसे स्वास्थ्य के उक्त नियमों पर ध्यान देना ही चाहिये। आशा है, कि तुम भी स्वास्थ्य के इन व्यावहारिक नियमों को समझ ही गई होगी। बस।

वही—
तुम्हारी भाभी

क्या तुम सुन्दर बनना चाहती हो ?

रामपुर
१३—९—४०

मेरी आशा !

प्रसन्न रहो।

नारी-जीवन में सौन्दर्य का अधिक स्थान है। नारी अपनी सुन्दरता से ही पुरुष को अपनी ओर आकर्षित करती है। सौन्दर्य और आकर्षकहीन नारी का जीवन एक प्रकार से बहुत ही दुःखमय रहता है। उसके दुःख का एक मात्र कारण केवल यही है, कि वह सौन्दर्य के अभाव में पति के हृदय में स्थान नहीं प्राप्त कर पाती। नारी अपने सौन्दर्य के इस महत्त्व को भली भाँति समझती है। इसीलिये वह सुन्दर बनने का प्रयत्न भी करती है। सुन्दरता ही के लिये वह तरह तरह से अपना शृङ्गार करती है, तथा तरह तरह के कपड़ों-गहनों से अपने को सजाती है। संसार के सभी देशों की स्त्रियाँ सुन्दर बनने के प्रयत्नों में एक दूसरे से आगे बढ़ने की अभिलाषा रखती हैं। हमारे देश में तो अशिक्षा का राज्य होने के कारण स्त्रियाँ कुछ ही दूर आगे जाकर रह जाती हैं, किन्तु पश्चिमी देशों की स्त्रियाँ सुन्दरता के प्रयोगों में ठहरना और रुकना जानती ही नहीं। वे नित्य नये नये, अपनी सुन्दरता को बढ़ाने के लिये, कृत्रिम प्रयोग करती हैं। वहाँ के पुरुष भी स्त्रियों के स्वास्थ्य और उनकी सुन्दरता के सम्बन्ध में अपनी दिलचस्पी प्रगट करते हैं। वैज्ञानिक निरन्तर इस बात का प्रयत्न करते रहते हैं, कि नारी का सौन्दर्य किन प्रयोगों से अधिक विकसित हो सकता है ?

युरोप इत्यादि देशों में सुन्दरता को बढ़ाने वाली कृत्रिम वस्तुओं का अधिक प्रचार भी है। समाचार पत्र ऐसी वस्तुओं के विज्ञापनों से भरे पड़े रहते हैं। हमारे देश की पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ भी इन वस्तुओं का प्रयोग करती हैं। किन्तु अनुभव से यह बात प्रगट हुई है, कि कृत्रिम वस्तुओं के प्रयोग से नारी में, वह सौन्दर्य नहीं आता, जिसके लिये वह प्रयत्न करती हैं। युरोप के बड़े-बड़े वैज्ञानिक डाक्टर भी अब इस बात को स्वीकार करने लगे हैं। एक वैज्ञानिक डाक्टर ने इस सम्बन्ध में अपनी सम्मति प्रगट करते हुये लिखा है—"आज कल युरोप में सुन्दरता बढ़ाने वाली कृत्रिम वस्तुओं की भरमार सी हो रही है। इन वस्तुओं की अधिकता को देख कर मुझे यह आशंका हो रही है, कि कुछ दिनों के पश्चात् कदाचित् युरोप में एक भी ऐसी स्त्री देखने को न मिले, जिसको हम सुन्दर कह सकें। क्योंकि कृत्रिम वस्तुओं की अधिकता के कारण उनका ध्यान वास्तविक प्रयोगों की ओर से हट जायगा, और उसमें सौन्दर्य की वह झलक दिखाई न पड़ेगी, जिसे हम नारी का प्रकृत सौन्दर्य कहते हैं।"

सौन्दर्य पर जब हम विचार करते हैं, तब हमारा ध्यान शीघ्र ही स्वास्थ्य की ओर आकर्षित हो जाता है। दूसरे शब्दों में स्वास्थ्य ही सौन्दर्य है। सुन्दरता के लिये यह आवश्यक नहीं है, कि नारी का रंग गोरा हो। गोरे रंग की रोगिणी स्त्री कभी भी सुन्दर नहीं हो सकती। इसके प्रतिकूल श्याम वर्ण वाली स्त्री, यदि वह स्वस्थ है, तो अधिक सुन्दर दिखाई पड़ेगी। प्रकृति और स्थायी सौन्दर्य के लिये यह अधिक आवश्यक है, कि नारी अपने स्वास्थ्य पर ध्यान दे। एक युरोपीय महिला ने एक स्थान पर लिखा है, कि 'यदि नारी सुन्दर बनना चाहती है, तो उसे चार प्रमुख बातों पर ध्यान देना चाहिये। उसे ताजी हवा का सेवन

करना चाहिये, अधिक से अधिक जल पीना चाहिये, आठ घंटे सोना चाहिये और नियमपूर्वक शुद्ध, सुन्दर, तथा बलकारक भोजन करना चाहिये। शुद्ध वायु के लिये प्रतिदिन बाहर नियम से टहलना चाहिये। घर में सोने के कमरे की खिड़कियाँ खुली रहें। रात में सोने के पूर्व खिड़की के सामने खड़ी होकर पाँच मिनट तक प्राणायाम करना चाहिये। इसी प्रकार प्रातःकाल भी खिड़की के सामने प्राणायाम करना चाहिये। यदि तुम प्रतिदिन ऐसा करोगी, तो तुम देखोगी, कि तुम्हारे कपोलों पर एक अद्भुत लाली आ जायगी।' एक विद्वान महिला ने एक स्थान पर लिखा है,—'जो नारी प्रतिदिन नियम से सबेरे और सायंकाल खिड़की के सामने खड़ी होकर प्राणायाम करती है, उसके बाल बहुत हो मज़बूत और सुन्दर होते हैं।' सुन्दरता को बढ़ाने में जल से भी अधिक सहायता ली जा सकती है। तुम्हें प्रतिदिन नियम से आवश्यकता के अनुसार शुद्ध जल पीना चाहिये। जल तुम्हें नीरोग तो रक्खेगा ही साथ ही तुम्हें सुन्दरता भी प्रदान करेगा। अंग्रेज़ महिला जल की उपयोगिता के सम्बन्ध में अपना अनुभव लिखती है-'मुझे तपेदिक का रोग हो गया था। मैंने अधिक चिकित्सा की, किन्तु रोग बढ़ता ही गया। सौभाग्य से मेरी दृष्टि एक पत्रिका पर पड़ो। उसमें भिन्न भिन्न रोगों पर भिन्न भिन्न ढंग से पानी के प्रयोग लिखे हुये थे। मैंने उन्हीं के अनुसार बाज़ार से एक दर्जन गिलास मँगवाये, और उन्हें पानी से भर कर अपनी बैठक में रख दिया। जब मैं बैठक में प्रवेश करती थी, तब एक गिलास पानी पी लेती थी। इस प्रकार मैं दिन में कई गिलास पानी पी लेती थी। कहना न होगा, कि कुछ दिनों के पश्चात् मेरा रोग अच्छा हो गया और मेरे चेहरे पर चमक आ गई।'

नींद और भोजन सुन्दरता को बढ़ाने में अधिक सहायक होते हैं। प्रत्येक मनुष्य को कम से कम आठ घंटे सोना चाहिये। एक डाक्टर का कथन है, कि जो नारी सुन्दर बनना चाहती है, उसे आवश्यक रूप से नींद और भोजन पर ध्यान देना चाहिये। नींद शरीर की विश्रान्ति को दूर करती है, और चेहरे पर चमक लाती है। तुम कितनी ही थकी क्यों न हो, तुम्हारा चेहरा कितना ही मुरझाया हुआ क्यों न हो, किन्तु जब तुम सोकर उटोगी, तब फिर वह हँसता हुआ दिखाई पड़ेगा। तुमने स्वयं भी इसका अनुभव किया होगा। जिस दिन तुम भली प्रकार नहीं सो पाती, उस दिन तुम्हारा चित्त थका हुआ, और चेहरा उदास तथा मुरझाया हुआ दिखाई पड़ता है। स्वाथ्य और सुन्दरता, दोनों ही की दृष्टि से नींद बहुत उपयोगी है। नींद में भी नियम पालन करना चाहिये। प्रतिदिन नियम से सोना चाहिये, और नियम से ही उठना चाहिये। भोजन के सम्बन्ध में मैं तुम्हें बहुत कुछ बता चुकी हूँ। मैं कह चुकी हूँ, कि भोजन का तुम्हारे स्वास्थ्य से अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध है। शरीर की सुन्दरता और कोई चीज़ नहीं है, केवल वह रक्त है, जो तुम्हारे शरीर की रगों में लहराता है। वही चमक और ज्योति बनकर तुम्हारे चेहरे पर चमकता है। तुम जितना ही शुद्ध, हलका, रुचिकारक और शीघ्र पचने वाला भोजन करोगी, उतना ही तुम्हारे शरीर में शुद्ध रक्त का निर्माण होगा। सुन्दर बनने के लिये यह अधिक आवश्य है कि शरीर में अधिक से अधिक शुद्ध रक्त का निर्माण होता रहे, और यह तभी हो सकता है, जब तुम शुद्ध भोजन करोगी और भोजन के नियमों पर ध्यान दोगी।

जब हम किसी स्त्री को सुन्दर कहती हैं, तब उसका तात्पर्य

यह है, कि उसके सभी अंग सुन्दर हैं। क्योंकि सम्पूर्ण अंगों की सुन्दरता के अभाव में स्त्री सुन्दर दिखाई नहीं पड़ती। अतः सुन्दर बनने वाली स्त्रियों को चाहिये, कि वे अपने सम्पूर्ण अंगों की सुन्दरता पर ध्यान दें। यहाँ हम कुछ ऐसे प्रयोगों का उल्लेख कर रही हैं, जिनके अनुसार काम करने से कोई भी नारी अपने को सुन्दर बना सकती है। यदि कोई नारी सुन्दर है, तो उसका तात्पर्य यह है, कि उसके दाँत, उसका मुख, उसकी आँखें, और उसके बाल, सभी कुछ सुन्दर हैं। यदि तुम चाहती हो, कि तुम्हारे दाँत मोती की भाँति उज्वल रहें, तो तुम्हें रात में सोने के पूर्व मंजन और ब्रश से दाँतों को भली भाँति साफ कर लेना चाहिये। सबेरे भी दाँतों को अच्छी तरह साफ करना चाहिये। यदि मंजन न मिल सके तो बारीक पीसा हुआ कोयला या सरसों का तेल, जिसमें थोड़ा सा नमक मिला हो, दाँतों पर रगड़ना चाहिये। जो लोग मंजन और ब्रश का प्रयोग करें, उन्हें कुछ विशेष ही प्रकार का ब्रश लेना चाहिये। कोमल बालों वाला ब्रश दाँतों की सफाई के लिये बहुत अच्छा समझा जाता है। ब्रश की सफाई पर भी ध्यान देना आवश्यक है। उसे हर दूसरे-तीसरे दिन गरम पानी से साफ करना चाहिये। दाँतों को भली प्रकार स्वच्छ कर लेने के पश्चात् तुम्हारा ध्यान चेहरे की ओर जाना चाहिये। रात में सोने के पूर्व चेहरे को ठंडे पानी से भली भाँति धो लो। तत्पश्चात् तौलिये से पोंछ कर उस पर कोई सुन्दर क्रीम मल लो। यदि पाउडर लगाना चाहती हो तो एक ढंग से पाउडर लगा लो, और फिर तौलिये से मुँह को पोंछ डालो। तुम्हारा मुख बहुत ही सुन्दर और कोमल दिखाई पड़ने लगेगा।

सुन्दर बनाने में आँखों, भौंहों, बालों और अपने हाथों को

भी न भूल जाना चाहिये। सुन्दरता से यह तात्पर्य नहीं है, कि केवल चेहरे को ही सुन्दर बनाने की चिन्ता की जाय। यदि नारी की आँखें सुन्दर नहीं होतीं तो फिर उसके चेहरे की सारी सुन्दरता धूल में मिल जाती है। इसी प्रकार बालों और हाथ की कलाइयों का भी नारी के सौन्दर्य में अधिक स्थान है। नेत्रों को सुन्दर बनाने के लिये तुम्हें काजल और सुरमा का प्रयोग करना चाहिये। यदि निरन्तर अच्छे सुरमे का प्रयोग करोगी, तो तुम्हारी आँखें बड़ी होने के साथ ही साथ चमकदार भी बन जायँगी। सुरमा के स्थान पर काजल का भो उपयोग किया जा सकता है। बहुत कुछ अंशों में काजल में भी वही गुण है, जो सुरमा में है। हमारे देश में पहले काजल ही की अधिक प्रथा थी। आज भी बहुत सी स्त्रियाँ काजल का ही उपयोग करती हैं। पलकों और भौंहों को सुन्दरता के लिये तुम्हें एक पतला और छोटा ब्रश लेना चाहिये। फिर उसे रेंड़ी के तेल या वैस-लीन में भिगोकर आँखों को बन्द करके ऊपर की ओर ले जाते हुये पलकों और भौंहों पर धीरे-धीरे उसे फेरना चाहिये। इससे भौंहों के बाल अधिक सुन्दर दीखने लगेंगे। सिर के बालों की सुन्दरता के लिये तुम्हें सोने के पूर्व सिर की खाल को उँगलियों के कोरों से जल्दी जल्दी चार-पाँच मिनट तक रगड़ना चाहिये। इससे बालों की जड़ें मज़बूत हो जायँगी, और उनमें चमक भी आ जायगी। सोने के पूर्व एकबार बालों में ब्रश और कंघा भो कर लेना चाहिये। प्रतिदिन बालों को स्वच्छ करना चाहिये, और ऐसे तेल का उपयोग करना चाहिये, जो बालों की जड़ों को मज़बूत करने के साथ ही साथ उनमें चमक भी ला सकें। हाथों की कलाइयों को सुन्दर बनाने के लिये प्रतिदिन उन्हें गरम पानी से स्वच्छ करना चाहिये। तत्पश्चात् ठंडे पानी से धोना चाहिये

और फिर दो-चार बूँद नीबू का रस ऊपर से रगड़ लेना चाहिये।

अब मैं तुम्हारा ध्यान व्यायाम की ओर आकर्षित करती हूँ आशा ! ऊपर मैंने जिन प्रयोगों का उल्लेख किया है, उनसे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण व्यायाम का प्रयोग है। प्रत्येक नारी को प्रति दिन कुछ न कुछ व्यायाम अवश्य करना चाहिये। व्यायाम से ही नारी में वह सौन्दर्य जागृत होता है, जिसकी वह अपने हृदय में कल्पना रखती है। पश्चिमी देशों की स्त्रियाँ जहाँ सुन्दरता को बढ़ाने वाले कृत्रिम उपायों से काम लेती हैं, वहाँ वे व्यायाम को भी नहीं भूलतीं। वे प्रतिदिन व्यायाम के लिये ही पैदल चलतीं, घोड़े की सवारी करतीं, पानी में तैरतीं, और टेनिश इत्यादि खेलती हैं। एक दिन था, जब हमारे देश की स्त्रियाँ भी व्यायाम कला में अत्यन्त दक्ष होती थीं। किन्तु आज तो वे व्यायाम को बिलकुल भूल सी गई हैं। हमारे देश की स्त्रियों में रोग का जो अधिक प्रचार है, वह केवल इसीलिये, कि वे व्यायाम की ओर ध्यान नहीं देतीं। जीवन के विकास को दृष्टि में रख कर स्त्रियों में व्यायाम का प्रचार करना अधिक आवश्यक है। स्त्रियों को स्वयं भी अपनी सुन्दरता और स्वास्थ्य के लिये प्रति दिन व्यायाय करना चाहिये। व्यायाम कई प्रकार का होता है। जैसे, दौड़ना, खेलना, घोड़े की सवारी करना, डम्बल घुमाना, कसरत,करना, पानी में तैरना, और घर का काम काज करना इत्यादि। पर्दा हमारे देश की स्त्रियों के स्वास्थ्य में बड़ा बाधक हो रहा है। पर्दे के कारण व्यायाम करने को कौन कहे, स्त्रियों को स्वच्छ वायु तक नहीं मिल पाती। स्त्रियों को चाहिये, कि वे समाज के इस बन्धन को तोड़ें। क्योंकि जब तक उनके सामने पर्दे का प्रश्न है, वे अपने स्वास्थ्य और सौन्दर्य का निर्माण नहीं कर सकतीं। फिर भी पर्दे में रहनेवाली स्त्रियों को घर के काम

काज के द्वारा अपने व्यायाम की पूर्ति कर लेनी चाहिये। जो स्त्रियाँ पर्दे के बन्धनों से मुक्त हैं, उन्हें अपने स्वास्थ्य के लिये बाहर मैदान में घूमना चाहिये। उन्हें सुन्दरता को बढ़ानेवाली कसरतें भी करनी चाहिये। कुछ ऐसी कसरतें हैं, जिन्हें यदि नारी नियम-पूर्वक करती रहे तो उसकी सुन्दरता में अधिक वृद्धि हो सकती है। आज कल लड़कियों के स्कूलों और कालेजों में इन कसरतों का प्रचार भी हो चला है। किन्तु वे स्त्रियाँ जो गार्हस्थ्य जीवन व्यतीत करती हैं, कसरत करना पसन्द नहीं करतीं। यद्यपि उनकी यह भूल है, किन्तु यदि हम चाहें तो उनकी यह भूल आज ही उनसे विलग हो जाय, तो यह एक प्रकार से असंभव-सा है। कसरतों के महत्त्व को वे भी समझेंगी, किन्तु कुछ दिनों के पश्चात्। जब तक स्त्रियों में कसरतों का प्रचार न हो, तब तक उन्हें शुद्ध वायुसेवन ही का सहारा लेना चाहिये। पुरुषों को चाहिए, कि वे स्त्रियों को शुद्ध वायु-सेवन की अभ्यासिनी बनायें। यदि स्त्रियाँ अपने घर का काम काज करती हुई प्रति-दिन शुद्ध वायु सेवन करेंगी, तो उनका यौवन स्थिर रहेगा, और उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी। सुन्दरता बढ़ाने का यह सबसे सरल, किन्तु उपयोगी उपाय है।

अब जब रमेश बाबू आयेंगे, मैं उनसे पूछूँगी आशा, कि तुम उनके साथ सबेरे वायु-सेवन के लिये जाती हो, या नहीं। यदि उन्होंने उत्तर 'ना' में दिया तो जानती हो क्या होगा? तुम्हारी भाभी तुम्हें पत्र लिखना बन्द कर देंगी! समझीं!

तुम्हारी—
स्नेहमयी भाभी

तुम्हारा अक्षय यौवन

रामपुर

१५–९–४०

मेरी आशा !

प्रसन्न रहो।

तुमने जो पत्र भेजा है, उसमें तुम्हारे युवती हृदय का उल्लास है, उसकी छलकती और उछलती हुई कामनायें हैं। कभी ऐसा ही उल्लास और ऐसी ही कामनायें मेरे हृदय में भी थीं। तुम्हारे और मेरे ही जीवन में नहीं आशा, एक बार सभी नर-नारी के जीवन में उल्लास का यह युग आता है। जानती हो, उल्लास और कामनाओं के इस युग को लोग क्या कहते हैं? यौवन। यौवन मानव-जीवन का प्रधान और सर्वश्रेष्ठ अंश है। जिस प्रकार प्रकृति के राज्य में वसन्त, उसी प्रकार मानव शरीर में यौवन। प्रकृति के नियमानुसार जिस प्रकार पूर्णमासी के दिन चन्द्रमा पूर्ण विकास को प्राप्त होता है, सागर में ज्वार-भाटे का आविर्भाव होता है, उसी प्रकार प्रकृति की ओर से ही मानव शरीर में यौवन आकर उपस्थित हो जाता है। किन्तु कुछ दिनों के पश्चात् यौवन की भी वही अवस्था होती है, जो चन्द्रमा और ज्वारभाटे की होती है। चन्द्रमा और ज्वारभाटे की ही भाँति यौवन भी कुछ दिनों तक अपनी आभा बिखेर कर अधिक धूमिल हो उठता है। तुम जानती हो कि जब चन्द्रमा पूर्ण होता है, जब होता है समुद्र में ज्वारभाटे का अविर्भाव, तब वह कितना ज्योतिमय और वह कितनी लहरों से संयुक्त

होता है ! ठीक ऐसा ही मानव शरीर में यौवन का युग भी है। जहाँ शरीर की शक्तियाँ विकसित होती हैं, वहाँ हृदय में अनेक प्रकार की उमंगें और कामनायें भी जागृत हो उठती हैं। मन कामनाओं के वशीभूत होकर अनेक दिशाओं की ओर दौड़ता है। अतृप्त कामनायें और आकांक्षायें अनेक रूपों में आँखों के सामने नृत्य करती हैं। आँखें पागल हो उठती हैं। मन चेतना से दूर उन्माद से भर जाता है। नारी या पुरुष, प्रत्येक के लिये यह एक बड़ा ही महत्त्वपूर्ण युग है। जितना ही महत्त्वपूर्ण है, उतना ही भयानक भी है। पग-पग पर गिरने ओर फिसलने को आशंका रहती है। यौवन-युग का गिरा हुआ फिर अपने जीवन में नहीं उठता। वह जब एक बार गिर जाता है, तब जीवन-पर्यन्त गिरता ही जाता है। उसके सुखों का संसार मलिन हो जाता है, सदा के लिये तिमिराच्छन्न हो उठता है।

यौवन हर एक देश की स्त्री के शरीर में आता है आशा ! यौवन ही शरीर में प्रवेश करके इस बात को सूचना देता है, कि अब तुम्हें मातृत्व की ओर अग्रसर होना चाहिये। नारी के मातृत्व पद की सफलता उसके सुन्दर यौवन पर ही आश्रित रहती है। जो नारी अपने यौवन की रक्षा करती है, वही सफल माता बन सकती है। युरोप इत्यादि देशों की नारियाँ विशेष रूप से अपने यौवन की स्थिरता पर ध्यान देती हैं। प्रकृति स्वयं भी उनकी इस कार्य में सहायता करती है। प्रकृति की सहायता का तात्पर्य यह है, कि पश्चिम के शीत-प्रधान देशों की नारियों में हमारे देश की स्त्रियों की अपेक्षा अधिक विलम्ब में यौवन प्रस्फुटित होता है। हमारे देश में साधारणतः ग्यारह वर्ष की अवस्था में ही नारी के शरीर में यौवन के चिह्न प्रगट होने लगते हैं। तुम्हें यह सुनकर अधिक आश्चर्य होगा, कि

युरोप इत्यादि शीत प्रधान देशों में लड़कियाँ बीस वर्ष की अवस्था की हो जाती हैं, किन्तु उस समय भी उनके शरीर में यौवन के विकास का अभाव ही दिखाई देता है। यह स्वाभाविक बात है, कि जब उनमें देर से यौवन आता है, तो उसे अधिक दिनों तक रहना भी चाहिये। प्रकृति द्वारा प्राप्त इस सहायता के अतिरिक्त भी पश्चिम की स्त्रियाँ अपने यौवन की स्थिरता के लिये चिन्ताशील रहती हैं। यद्यपि पश्चिमी नारियों में अश्लील प्रेम और स्वेच्छाचारिता का कुछ विशेष रूप से प्रचार है, किन्तु तो भी वे अपने यौवन की सुरक्षा के लिये सजग रहती हैं। वे उसके लिये तरह-तरह के कृत्रिम उपायों का प्रयोग करती हैं। स्वास्थ्य की ओर भी उनका विशेष रूप से ध्यान रहता है। यौवन की सुरत्ता के लिये ही वे तरह-तरह के व्यायाम करतीं और उसी के अनुकूल अपने अपने जीवन की दैनिक क्रियाओं को भी सुधारने का प्रयत्न करती रहती हैं।

यौवन शरीर का राजा है। वसन्त हो की भाँति वह शरीर के अंग-प्रत्यंगों को विकसित करता है। यौवन जब आता है, तब वह स्त्री पुरुष दोनों के हृदय में एक विशेष प्रकार की कामना उत्पन्न करता है। दोनों एक दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं। प्रकृति स्वयं उन्हें यौवन की इच्छाओं के रूप में एक दूसरे से मिलने का आदेश देती है। स्त्री-पुरुष के सम्मिलन का यही उचित समय है, किन्तु आज कल के बालक और बालिकायें प्रायः इस नियम की अवहेलना कर बैठती हैं। माता-पिता उनकी शिक्षा, उनकी संगति, और उनकी पढ़नेवाली पुस्तकों पर ध्यान तो देते नहीं! वे प्रेम-विषयक तरह तरह की अश्लील पुस्तकें पढ़ते हैं और अपने साथियों से इसी प्रकार की तरह-तरह की बातें भी सुनते हैं। इसका परिणाम क्या होता है—

जानती हो! यौवन के विकास के पूर्व ही दोनों के हृदय में लालसायें उत्पन्न हो उठती हैं और दोनों ही करने लगते हैं अपनी अविकसित जीवनी शक्ति पर अनेक प्रकार से कुठाराघात। ऐसे बालक और ऐसी बालिकायें समाज के लिये अभिशाप स्वरूप हैं। वे स्वयं अपनी हानि तो करते ही हैं, देश और समाज का भी गला घोंटते हैं। आज जो देश का गला घुटता जा रहा है, वह केवल इसीलिये, कि आज देश में ऐसे युवकों और ऐसी युवतियों की संख्या अधिक है, जिन्हें हम युवक नहीं कह सकतीं, जिन्हें हम युवती नहीं कह सकतीं। वे अवस्था की दृष्टि से अवश्य उस स्थान पर खड़े हैं, जहाँ यौवन रहता है, किन्तु कौन कह सकता है कि उनमें यौवन है? उनका दुबला पतला शरीर, उनकी मुरझाई हुई आकृति, धँसी हुई आँखें, और पिचके हुये गाल! सबके सब तो यौवन की सीमा पर खड़े होकर पश्चात्ताप के आँसू बहाते हुये दिखाई देते हैं।

मैं कह चुकी हूँ आशा, यौवन शरीर का राजा है, वसन्त है। नारी का मातृत्व पद उसके यौवन की ही ओर देखता है। तुम तो यह जानती ही हो, कि विवाह का उद्देश्य क्या है? विवाह ही के द्वारा स्त्री और पुरुष उस पद को प्राप्त होते हैं, जिसके लिये ईश्वर ने उनकी सृष्टि की है। वही सफल माता, और सफल पिता। किन्तु मैं पूछती हूँ आशा, कि क्या कोई नारी यौवन की रक्षा के किये बिना सफल माता बन सकती है? सफल माता नारी तभी बन सकती है, जब उसका वह बच्चा, जिसका उसने समाज को दान किया है। स्वस्थ और सबल हो। अब तुम्हें यह सोचना चाहिये, कि यौवन के अभाव में, जब नारी में शक्ति न होगी, वह कैसे समाज को स्वस्थ और सबल बच्चे का दान कर सकेगी! एक युरोपीय महिला ने एक

स्थान पर लिखा है–यदि नारी अपने मातृत्व पद की सफलता चाहती है, तो उसे अपने यौवन की रक्षा करनी चाहिये। यौवन उसे पति के हृदय में अटूट स्थान देगा, और उसके मातृत्व पद को सफलता भी प्रदान करेगा, वास्तव में आशा, इस दृष्टि से भी यौवन की रक्षा नारी के लिये महत्त्वपूर्ण है। पति का अधिक प्रेम तभी तक नारी को मिलता रहता है, जब तक उसमें यौवन रहता है, यौवन की उल्लसित कामनायें रहती हैं। नारी अपने यौवन की रक्षा करके हर एक प्रकार से अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी बना सकती है।

अब प्रश्न यह उठता है, कि नारी अपने यौवन की रक्षा किस प्रकार कर सकती है! इस प्रश्न पर विचार करते हुये मैं तुम्हारे ध्यान को नारी के प्रारंभिक जीवन की ओर ले जाती हूँ। नारी के यौवन-रक्षा के लिये यह आवश्यक है, कि बाल्यावस्थाही से उसके जीवन पर ध्यान दिया जाय। यह माता-पिता का कर्तव्य है। माता-पिता को चाहिये, कि वे अपनी लड़कियों की दैनिक गति पर ध्यान देते रहें। उन्हें प्रेमविषयक अश्लील पुस्तकों से बचाते रहें। ऐसी स्त्रियों के साथ बातचीत न करने दें, जो इधर उधर की बातें करती हों। लड़कों के साथ स्वतंत्रतापूर्वक बातचीत न करने दें। उन्हें हर एक प्रकार से लड़कियों के चरित्र के निर्माण का प्रयत्न करना चाहिये। इसका परिणाम यह होगा कि लड़कियाँ सदाचारिणी होंगी, और उनमें उचित समय पर यौवन का प्रस्फुटन होगा। यौवन की रक्षा और उसके विकास के लिये यह बहुत ही आवश्यक है, कि उचित समय पर ही यौवन का निकास हो। यौवन के आगमन के समय मन में अनेक प्रकार की उल्लसित कामनायें उत्पन्न हो उठती हैं। मन उन्माद से भर जाता है। आँखों के सामने एक रंगीन तस्वीर

सी नाचती हुई दिखाई देने लगती है। शरीर के समस्त अंगों में उत्तेजना की एक लहर सी दौड़ पड़ती है। यौवन का यह समय मनुष्य के लिये एक बड़ा ही कठिन समय है। नारी को यौवन आँगन में पैर रखने के पश्चात् बहुत ही सतर्क और साव-धान होकर रहना चाहिये। क्योंकि यही वह समय है, जब उसकी भावी शक्तियों का निर्माण होता है। नारी अपने यौवन की रक्षा करके अपने शरीर के भीतर जितनी ही शक्तियों का संचय करेगी, उतना ही अधिक उसके मातृत्व पद का विकास भी होगा। युवती नारी को अपने यौवन की रक्षा के लिये जिस बात पर ध्यान देने की अधिक आवश्यकता है वह है संयम। उसे अपने उछलते हुये मन को संयम की डोरी से कसकर बाँध रखना चाहिये। विवाह हो जाने पर भी उसे अधिक से अधिक संयमित रहना चाहिये। मन को संयमित बनाने के लिये उसे ऐसी पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिये, जिसमें चरित्र निर्माण के भाव हों। महापुरुषों के जीवन की ऊँची कहानियाँ इस सम्बन्ध में अधिक सहायिका सिद्ध हो सकती हैं। ऐसे खेल तमाशों से बचना चाहिये, जिनमें कुभावना का चित्रण हो। विलासिता से दूर रहना चाहिये। संयमित बनने के लिये भोजन पर भी ध्यान देना अधिक आवश्यक है। भोजन में ऐसी वस्तुओं का समावेश होना चाहिये, जो अधिक उत्तेजक न हों। जहाँ तक हो सके, सादा और पौष्टिक भोजन करना चाहिये। अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिये। व्यायाम के द्वारा शरीर को सबल और स्वस्थ बनाना चाहिये। जहाँ तक देखा गया है दुर्बल और शक्ति-हीन मनुष्य अधिक असंयमित होते हैं। एक युरोपीय विद्वान डाक्टर का कथन है कि यदि संयमित बनना चाहते हो तो स्वस्थ और सबल बनो।

इन सभी बातों के अतिरिक्त मनुष्य होने के कारण नारी को एक और भी बात पर ध्यान देने की आवश्यकता है आशा! वह है, उसका कर्त्तव्य और उसका नारी-धर्म। उसको आँखों के सामने सदैव उसके नारी-धर्म का चित्र होना चाहिये। वह अपने दाम्पत्य जीवन में जो कुछ भी करे, अपने नारी-धर्म और कर्त्तव्य को ध्यान में रख करके ही करे। उसके नारी धर्म का यह मूल रहस्य है, कि उसे संयमित रहना चाहिये। युवक और युवती जब विवाह के द्वारा एक दूसरे से मिलते हैं, तो दोनों मन के बाँध को तोड़ देते हैं, और उनके सम्मिलन में एक प्रकार की स्वेच्छाचारिता-सी आ जाती है। वे मिलन के वैज्ञानिक नियमों पर ध्यान न देकर उत्तेजना के कारण वासना के मैदान में सरपट लगाने लगते हैं। इसका क्या परिणाम होता है, जानती हो आशा! वे गिर पड़ते हैं, रोगाक्रान्त हो जाते हैं, और हो जाता है, उनका जीवन काँटों का संसार। उनके मिलन के परिणाम स्वरूप जो बच्चे होते हैं, वे भी उन्हीं की तरह रोगी, वे भी उन्हीं की तरह क्षीण काय। पैदा होते ही दम तोड़ देते हैं। स्त्री न सफल माता बनती है और न पुरुष सफल पिता। सफल माता बनने के लिये यह आवश्यक है, कि नारी में अक्षय यौवन रहे। यह तभी हो सकता है, जब नारी सहवास के वैज्ञानिक नियमों पर ध्यान देगी। पुरुष और नारी दोनों को ही कामशास्त्र और सन्तान शास्त्र का अधिक से अधिक ज्ञान होना चाहिये। उन्हें यह समझना चाहिये, कि उनके सहवास में कामवासना की प्रधानता नहीं, प्रकृति की उस इच्छा की प्रधानता है, जो सृष्टि का विकास करती है। स्त्री और पुरुष दोनों को ही अधिक सहवास से बचना चाहिये। नारी को इस विषय में अधिक सतर्क रहना चाहिये। यदि पुरुष उससे अप्रसन्न हो

जाय, तो उसे समझना चाहिये। उसकी आँखों के सामने अधिक सहवास से उत्पन्न होने वाले रोगों की भयंकरता का चित्र खींचना चाहिये। ऐसे व्यक्तियों का उदाहरण देना चाहिये, जो अधिक सहवास के ही कारण रोगों से आक्रान्त होकर आँसू बहा रहे हों। सहवास से बचने के लिये नारी को पुरुष से दूर रहना चाहिये। उसे ऐसे स्थान में सोना चाहिये, जहाँ घर के बूढ़े व्यक्ति हों। यदि नारी अपने को अधिक सहवास से बचाती रही, तो उसका यौवन अक्षय होगा। वह एक कलिका की भाँति निरन्तर सौन्दर्य से हँसती रहेगी और उसका पुरुष भ्रमर की भाँति उसके आस पास मँडराता रहेगा। इस सम्बन्ध में युरोप के एक वैज्ञानिक डाक्टर ने लिखा है—"नारी का सौन्दर्य उसका अक्षय यौवन है। नारी में आकर्षण-शक्ति उसी समय तक रहती है, जब तक उसका यौवन उसके साथ रहता है। नारी यदि अपने शरीर में अक्षय यौवन का चमत्कार देखना चाहती है, तो उसे अधिक सहवास से बचना चाहिये।"

तुम भी तो अब मातृत्व के सिंहासन पर बैठने जा रही हो आशा! देखो, यौवन की उमंगों के कारण भूल न कर बैठना। यदि भूल करोगी, तो तुम दोनों ही अपने अपने पदों से गिर पड़ोगे। तुम मातृत्व के सिंहासन से, और रमेश अपने पितृ पद से!

वही—

तुम्हारी भाभी

गार्हस्थ्य जीवन की रानी

रामपुर
१८-९-४०

मेरी बीबी !

सुखी रहो।

आज मैं तुम्हें एक नई उपाधि दे रही हूँ आशा ! जानती हो, क्या, गार्हस्थ्य जीवन की रानी। सचमुच तुम अपने गार्हस्थ्य जीवन की रानी हो। अपने घर पर, अपने पति के मन पर, शासन करती हो। फिर तुम्हें गार्हस्थ्य जीवन की रानी न कहें तो क्या कहें? किन्तु तुम यह न समझो, कि तुम्हीं केवल गार्हस्थ्य जीवन की रानी हो। नहीं, आशा, प्रत्येक नारी रानी के सिंहासन पर बैठी हुई तुम्हें दिखाई पड़ेगी। चाहे तुम जिस घर में, जिस देश में, जाकर देखो, नारी तुम्हें घर की रानी ही के रूप में दिखाई पड़ेगी। नारी जीवन का यह प्रकृत धर्म है, उसका यह मानवी अधिकार है। उसकी सृष्टि इसीलिये की गई है, कि वह गार्हस्थ्य-जीवन का निर्माण करके समाज को व्यवस्थित करे। नारी का यह कार्य, बहुत बड़ा कार्य है। संसार के सभी उन्नत समाजों और राष्ट्रों की रचना उस देश के गार्हस्थ्य जीवन के ही आधार पर होती है, जहाँ नारी रानी के रूप में सिंहासन पर विराजमान रहती है। कितना बड़ा पद है यह नारी का! कितना बड़ा उत्तरदायित्व है उसके कोमल कन्धों पर! घर के काम काज देखने में अधिक साधारण होते हैं, किन्तु उनका समाज और राष्ट्र के विकास के ऊपर प्रभाव

पड़ता है, और पड़ता है, बहुत ही व्यापक रूप से। नारी द्वारा किये हुए घर के छोटे छोटे कार्य गार्हस्थ्य जीवन में ग्रथित होकर पहले समाज, और फिर राष्ट्र के ऊपर अपना प्रभाव डालते हैं। युरोप की एक अंगरेज महिला ने इस सम्बन्ध में अपने बड़े ही सुन्दर विचार प्रगट किये हैं। उसने एक स्थान पर लिखा है—"समाज और राष्ट्र की उन्नति करने के पूर्व तुम्हारा ध्यान अपने गार्हस्थ्य जीवन की ओर जाना चाहिए। क्योंकि वही वह क्षेत्र है, जहाँ समाज की उन्नति का पौदा जन्म लेता, पनपता, और बढ़ता है।"

नारी के गार्हस्थ्य जीवन की यह है महानता आशा ! नारी को अपने इस उत्तरदायित्व को भलीभाँति समझ लेना चाहिये। नारी गार्हस्थ्य जीवन की रानी के रूप में सिंहासन पर बैठ तो जाती है, किन्तु उसे यह भूल न जाना चाहिये, कि उसके इस पद का बहुत बड़ा गौरव है, बहुत बड़ी महानता है। वह रानी के रूप में सिंहासन पर जो बैठी है, केवल इसीलिये, कि अपने रानी के कर्त्तव्यों का पालन करे। तभी वह वास्तविक रानी भी हो सकेगी, तभी उसका रानी पद सार्थक भी कहला सकेगा। अब तुम्हें यह सोचना चाहिये कि रानी के कर्त्तव्य क्या है ? रानी के कर्त्तव्य हैं, घर की देख भाल करना, भोजन का प्रबन्ध करना, बच्चों की रक्षा करना, और घर के अन्य आवश्यक कार्यों को करना। घर की देख भाल करना साधारण काम नहीं है आशा ! यह एक बहुत बड़ा काम है। नारी को इसमें अधिक ज्ञान और परिश्रम की आवश्यकता पड़ती है। वह दिन भर चक्र की भाँति घूमती रहती है। घर की एक-एक वस्तु को ध्यान में रखती है, उसकी चिन्ता करती है, और उसे नष्ट होने से बचाती है। घर के प्रत्येक सदस्य का स्वागत

करना उसी का काम है। प्रत्येक की प्रकृति के अनुसार उसे ही उसके खाने-पीने का प्रबन्ध करना पड़ता है। सबकी बातें सुननी पड़ती हैं, किन्तु चुप रहना पड़ता है। केवल इसलिये, कि रानी त्यागमय होती है। वह जो कुछ करती है, अपने लिये नहीं, अपने कुटुम्बियों के लिये, अपने समाज के लिये, अपने देश के लिये।

गृह प्रबन्ध का कार्य बहुत ही विस्तृत है। सभी कुटुम्बों में एक से सदस्य नहीं होते। किसी में कम होते हैं, किसी में अधिक। जिस कुटुम्ब में अधिक सदस्य होते हैं, उसमें एक नारी के लिये यह अत्यन्त कठिन हो जाता है, कि वह सबकी देख रेख करे, सबके खाने पीने का प्रबन्ध करे, और करे गृह के समस्त काम-काज। ऐसी अवस्था में उसे दूसरों की सहायता की आवश्यकता पड़ती है। उसे यह सहायता घर की अन्यान्य स्त्रियों से मिल सकती है, और नौकरों से भी। गार्हस्थ्य जीवन की रानी में सर्वप्रथम सहयोगिता का गुण होना चाहिये। उसे प्रेम के साथ मिलकर प्रत्येक से काम लेना चाहिये। नारी में जितना ही अधिक सहयोगिता का भाव होगा, वह उतनी ही सफलता के साथ अपने गार्हस्थ्य जीवन का संचालन कर सकेगी। उसे इस बात की चिन्ता न होनी चाहिये, कि घर के दूसरे सदस्य और दूसरी स्त्रियाँ उसे किस दृष्टि से देख रही हैं? उसे निरन्तर अपने हृदय का प्रेम और सद्व्यवहार बाँटते रहना चाहिये। निश्चय, वह इन गुणों से घर के सभी सदस्यों को अपनी ओर आकर्षित कर लेगी। सबसे बड़ी बात तो यह होगी, कि उसके प्रेम और सद्व्यवहार को देखकर घर के सभी सदस्य और बच्चे भी आपस में एक दूसरे से प्रेम करने लगेंगे और एक-दूसरे को भाई की दृष्टि से देखने लगेंगे।

नौकरों के साथ अधिक सावधानी और सतर्कता के साथ व्यवहार करना आवश्यक है। क्योंकि नौकर अपने नहीं पराये हैं। वे थोड़ी सी ही भूल से बिगड़ जाते हैं, और उनमें अनेक प्रकार की बुरी भावनायें घुस जाती हैं। जैसे, चोरी करना, और झूठ बोलना इत्यादि। नौकरों को अच्छे रास्ते पर ले जाने के लिये यह आवश्यक है, कि उनके साथ अच्छा और प्रेम-पूर्वक व्यवहार किया जाय। खाने-पीने में ऐसा भाव न प्रगट करना चाहिये, कि नौकर अपमान का अनुभव करे। गृहिणी का प्रत्येक व्यवहार नौकर के साथ अपना सा ही होना चाहिये। इस प्रकार होना चाहिये, कि नौकर यह समझने लगे, कि यह अपना ही घर है। वह घर की वस्तुओं को ममता की दृष्टि से देखने लगे, और करने लगे, घर के सभी सदस्यों से अधिक दिलचस्पी लेने लगते हैं, और घर की वस्तुओं को भी नष्ट होने से बचाते रहते हैं। पारस्परिक ममता और प्रेम के कारण उनमें कल्याण की भावना जागृत हो जाती है। मानवता की दृष्टि से भी हमें नौकरों के साथ अच्छा व्यवहार करना ही चाहिये। हम जब दूसरों से अच्छे व्यवहार की आकांक्षा रखते हैं, तब हम क्यों न अपने नौकर के साथ अच्छा व्यवहार करें। आखिर वे भी तो मनुष्य ही हैं। जो लोग इन बातों पर ध्यान नहीं देते, और नौकरों के प्रति बुरा व्यवहार करते हैं, उनके गृह का संचालन भली भाँति नहीं हो पाता। वे प्रति दिन नये नये नौकर की खोज में चिन्तित रहते हैं। ऐसे मनुष्यों के यहाँ एक भी नौकर अधिक दिनों तक नहीं टिकता। ऐसे ही मनुष्यों के नौकरों में चोरी करने और झूठ बोलने के दुर्गुण भी पाये जाते हैं। वे नौकरों को अपना खरीदा हुआ दास समझते हैं, उन्हें खाने के लिये जूठा खाना देते हैं, पहनने के लिये फटे-पुराने

कपड़े प्रदान करते हैं, और करते हैं, तरह-तरह के जोर जुल्म। इसका परिणाम यह होता है, कि नौकर चोरी करने लगते हैं, और झूठ बोलने लगते हैं। किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं, कि नौकरों को सिर पर चढ़ा लिया जाय। सिर पर चढ़ा लेने से भी नौकर बिगड़ जाते हैं, और आज्ञाओं की अवहेलना कर बैठते हैं। नौकरों पर शासन की आवश्यकता अवश्य है, किन्तु उसमें प्रेम और अपनेपन का भाव होना चाहिये। उन पर शासन करते हुये यदि उनके खाने-पहनने पर ध्यान दिया गया, तो वे बुरा नहीं मानते और बड़े ही उत्साह के साथ घर का काम काज करते रहते हैं।

रानी को चाहिये, कि वह अपने घर की प्रत्येक वस्तु को ठीक स्थान पर रक्खे। यह एक बहुत बड़ी कला है। गार्हस्थ्य जीवन में इस कला का अधिक महत्त्व है। जो रानी इस कला में जितना ही दक्ष होगी, उतना ही उसका रानी पद भी सफल समझा जायगा। घर की शोभा भी प्रायः इसी कला के ऊपर निर्भर रहती है। यदि घर में सभी वस्तुयें अपने स्थान पर दिखाई देती हैं, तो घर अधिक सुन्दर तो लगता ही है, साथ ही यह ज्ञात भी होता है, कि घर की संचालिका अधिक बुद्धिमती और अनुभवी है। घर की वस्तुयें यदि अपने अपने स्थान पर ठीक से रक्खी रहती हैं तो आवश्यकता पड़ने पर शीघ्र मिल जाती हैं, और इधर उधर दौड़-धूप करने की जरूरत नहीं रहती। घर की वस्तुओं की स्वच्छता पर ध्यान देना भी अधिक आवश्यक है। घर की प्रत्येक वस्तु को प्रतिदिन अपने हाथ से साफ करना चाहिये, उसे ठीक से रखना चाहिये और उसमें सुन्दरता लानी चाहिये। भोजन की ओर ध्यान देना रानी का प्रधान कर्त्तव्य है। उसे भोजन की वस्तुओं को अपने नियंत्रण

में रखना चाहिये। बाज़ार से आने वाली चीज़ों पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिये। जो चीज़ें बाज़ार से मँगाई जाँय, वे अच्छी और स्वच्छ हों, किन्तु उनमें पैसा अधिक न लगे। प्रत्येक हालत में घर के पैसे को बचाने का प्रयत्न करना चाहिये। दाल, चावल, आँटा, इत्यादि भोजन की सामग्रियों को बड़े ही यत्न से ढँक कर रखना चाहिये। उसे जहाँ तक हो सके, अपने हाथ से भोजन बनाना चाहिये। यदि अपने हाथ से वह भोजन न बना सके तो एक योग्य मिश्रानी रख लेना चाहिये। मिश्रानी जब भोजन बनाने लगे, तो रानी को चाहिये, कि वह स्वयं चौके के पास बैठी रहे, और भोजन की क्रियाओं पर ध्यान देती रहे। उसे अपने हाथ से आँटा, दाल, और चावल निकाल कर मिश्रानी को देना चाहिये, और अपने हाथ से ही चावल दाल बीन कर साफ करना चाहिये। भोजन के सम्बन्ध में रानी को एक और भी बात पर ध्यान देना अधिक आवश्यक है। उसे यह जानना चाहिये, कि कौनसा भोजन स्वास्थ्यकर है, और कौनसा नहीं। उसे भोजन की सामग्रियों में ऐसी ही वस्तुएँ रखनी चाहिये, जो स्वास्थ्य को सबल करने वाली हों।

रानी को बच्चों की रक्षा पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिये। रानी बच्चों की माता है। बच्चों के प्रति माता का क्या कर्त्तव्य है, यह रानी को भली भाँति जानना चाहिये। इस रूप में यहाँ आकर रानी का उत्तरदायित्व और भी अधिक बढ़ जाता है। क्योंकि बच्चे समाज और राष्ट्र की सम्पत्ति होते हैं। रानी अपने गार्हस्थ्य जीवन में समाज और राष्ट्र की इसी सम्पत्ति का निर्माण करती है। बच्चों की रक्षा के लिये दो बातों पर ध्यान देना अधिक आवश्यक है। उनके स्वास्थ्य और उनके चरित्र पर। बच्चों के स्वास्थ्य के लिये उन्हें खुली वायु में रखना

देय तिथि	देय तिथि
24.9.80	
18-3 80	
18-9 80	

नोट—पुस्तक निश्चित तिथि पर न लौटाने पर 5 पैसे प्रतिदिन दण्ड देना होगा।

पुस्तकाध्यक्षा